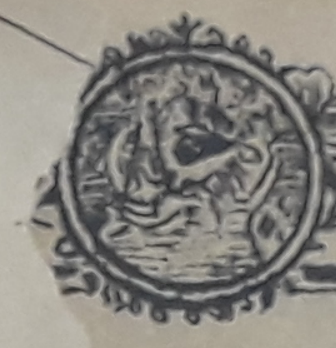
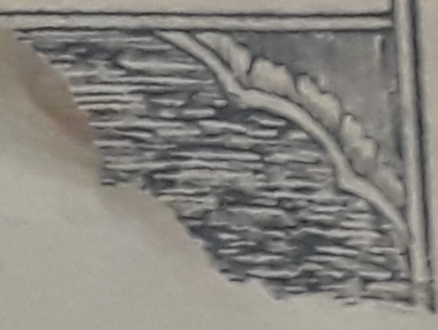




न्नाटकभाषा





श्रीहनुमान्नाटकभाषा

अर्थात्



॥ श्रीवर विलास ॥ः

श्रीपिपलोद पत्तनधिपाल रावतजी श्रीश्रीदूलह
सिंहजीसाहेब की आज्ञानुसार रतलामनिवासी
महन्त श्रीरामाजी चतुरदासने छपवाया ॥ शुभम्

मतबअ अफ़ौक़ काशी में मुन्शी अम्बेप्र
साद के प्रबन्धसे मुद्रित हुई ॥ शुभम्॥
पहलीवार १००० मोलप्रतिपुस्तक १)

श्रीमतेनिम्बार्कयेनमः॥

अथश्रीबरबिलासःप्रारभ्यते

श्रीगणेशायनमः॥शालिनीवृत्तं॥बन्देरामकोटिकामाभिरा
मं॥मेघश्यामंसर्बदापूर्णकामं॥गोबिन्दोहंसच्चिदानन्दकं
दं।दिवाधीशंजानकीशंजनेशं॥१॥अनुष्टुप्‌वृत्तं॥श्रीबर॥
स्यबिलासोयंग्रन्थोरामयशोंकितः॥हनुमन्नाटकच्छा॥
यांग्रहित्वातन्यतेमया॥२॥अथग्रन्थावतरणिका॥शतगु
नीसबत्तीससह१८३२मेचकश्रावणमास॥बुधवासरअेका
दशीश्रीबरबदतबिलास॥३॥पायुकछुकपरसंगममआ
गमपुरपिपलोद॥दूलहनृपदीनौंहुकमसुनिमनभयोप्र
मोद॥४॥मत्तगजेंद्रवृत्तं॥एकसमैंपिपलोदपुरीप्रतिगोैं
नगोबिन्दतुरंततहाँहे॥मन्दिरमैंगणनायककेनिजमंत्रि
नजुक्तजनेशजहाँहे॥नाटककीचरचानिचलायसुनाय॥
दियेवरबैनवहाँहे॥ओनिपदूलहकीउपमासमपावतसे
नृपकौंनकहाँहे॥५॥श्रीमतरावतसाहबदूलहहेरनमैंद
रसैंनितहाटक॥बिप्रगोबिंददईउनआयसहीयकपाटन
कीउदघाटक॥सोहतनाटकरत्ननमैंमणिमाणकसोह
नुमानसुनाटक॥ग्रन्थनवीनबनैंउहिंपंथनश्रोंनपरैंपरैं॥
अघओघउचाटन॥६॥दोहावृत्त॥कागकजगमैंमतान
नेसमझसकलरहेस॥फाटकहियरिकेखुलेंनाटक

पंढनिसेस॥७॥आयसपतिपिपलोदकीलीनीसीसचढा
य॥पुरशोभापुरपतिप्रभाकछुबरननचितचाय॥८॥मत्तग
जेंद्रवृत्तं॥थानकथानकहोतकथानकवानकमंगलआंन
कबाजैं॥मंदिरमंदिरअंदरसुंदरसेवनदेवमहोच्छवछाजैं॥
गेहनगेहसनेहसनेतुलसीथिरथानबिसेयबिराजैं॥मोदप्र
मोदबिनोदभरीपिपलोदपुरीभुविपैंभलभ्राजैं॥९॥अथनृ
पतिबर्णनम्॥अमृतध्वनीवृत्तम्॥लइजयवल्लिमतल्लि॥
महबंशबल्लिरावल्ल॥दुल्लहरावतखुल्लितितमल्लबिदल्ली॥
ढल॥ढल्लखिप्रतिमल्लहनहफल्लजजित॥फुल्लले॥
कबिफुल्ललोयनबुल्लल्लवतित॥तुल्लगकिअतुल्लियजस
मुल्लघुवय॥दुल्लखतनभल्लगतमबल्लयिजय॥१०॥अ
थसिंहआखेटकबर्णनं॥लखिवेमैंनवहथ्थकेपंचाननबडम
थ्थ॥लथ्थपथ्थलोहनकियेदूलहनृपदुइहथ्थ॥हथ्थियथ्थ
टिमहमथ्थथ्थितदुइचित्तथ्थिरतुर॥बथ्थतुवकअकथ्थ॥
थ्थितिसमरथ्थथ्थलउर॥तथ्थत्तितप्रहरत्तकितकिजित्त
त्तसनथि॥कथ्थनवनकवित्तथ्थुइसर्बत्तबलथि॥११॥
अथगजबर्णनं॥कटकटातअटकातनहीसोहतबारनघुद्द॥
लखिकुंजरगलगुंजरतउरउद्धतअविरुद्ध॥रद्धहुरअतिकुद्ध
घुरघुरिजुद्धहुरअट॥धद्दद्धिन्नाधद्दद्धिन्नाधद्दद्धुवरट॥धद्द
द्धाकटधद्दद्धाकटधद्दद्धाकट॥धुद्धुद्धुधुकटधुद्धुद्धुधुकट
धुद्धुद्धुधुकट॥१२॥त्वरबचउचरतमहावतसुरजबोलगल

गञ्ज॥रावतदूलहकरिनकर गिरिकञ्जलछबिछञ्ज॥
छञ्जच्छिनि धर गञ्जञ्जलधर कञ्जञ्जय कर॥ झुझझझझ्झु
किझुकि थिञ्जि झझ्झटिनि सुलिञ्जञ्जसवर॥भञ्जञ्जवसुरग
ञ्जञ्जव शिर रञ्जञ्जिन धर॥लञ्जञ्जल धिनि मञ्जञ्जड ५
धिसलञ्जञ्जियन्वर॥१३॥ अथ हय शाला बर्णन॥ दिनदु
लहादुलहानृपतिजसजाहर दशादिस्स॥ होतरहतहय शा
लजिहिँसंगीतक अहानिस्स॥निस्ससस्सरिगमधस्सस्सरिग॥
मपस्सस्सरिगम॥गस्सस्सरिगम मस्सस्सरिगम रस्सस्स
रिगम॥तत्त थ्थइ पुनितत्त थ्थइ पुनि तत्तथ्थइतिन॥ अ
स्सस्सकलनृपस्सस्सबल बिल स्सस्स बदिन॥१४॥ अथ
राजकुमारबर्णनम्॥ दोहा वृत्तं॥भावतमनरावत कँवर उ
पजावत आनंद॥ नीं नहुमनुत्रिभुवन तिलकउपमा अषि
ल अमंद॥१५॥ कलित केसरीकेसरी सोहत सदुपम शोष॥
हिम्मत हिय किम्मतकरन सकुचत सुकवि अशेष॥१६॥सो
रठावृत्तं॥ कँवरकनीय रसाल राजत अति रघुनाथ हरि॥नी
नहुगुन गनमाल चित चीनहु सब सुघर नर॥१॥ ॥श्री:॥
॥ ॥ इतिश्री पियलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलह सिंह
जी बिद्यापितरत्न पुरस्थ कविदाकाग्रामांगजगोबिन्दराम बिर
चिते श्रीवरबिलासे ग्रन्थावतरणिका बर्णनं नाम प्रथमोल्ला
सः॥१॥ ॥तदुक्तं नाटिकावतारे॥ ॥अष्टाभिर्दशभिर्वापि
नान्दी द्वादशभि:पदै:॥ आशीर्नमस्क्रियावस्तु निर्देशोवापि

तन्मुखम्॥ ॥इतिनान्दीमंगलबचनं॥ ॥दोहावृत्तं॥ ॥रावत
नरपतिहुकमगहि धियधारि अमितहुलास॥टीकमसुत ५
गोबिन्द द्विज श्रीवरबदत बिलास॥१॥ ॥मनोहर वृत्तं॥मंग
लनिधान कलि किल्विषहरनहार पावन पदार्थनकौ पाव॥
नप्रकाम है॥नांदीसत्वर परन पदप्रापत्तिकौं प्रस्थितजे मनुज
मुमुच्छुराहखर्च अभिराम है॥कविवरवैंन बिसरामधाम अ
कवहीसज्जनकौ जीवन जरूरवसुजाम है॥धर्मबृच्छबीज
होहुसकल बिभूतिप्रदरावरसदैवगुणग्राम राम नाम है॥२
॥कमलाकुचन पत्र रचना बिचित्र रचीमकरीकी मुद्रामंजु अं
कित हृदय है॥देवसर्वजगदीशमधूबधूवक्त्रकंज मुद्रितक
रनहेतु इन्दुसौ उदय है॥क्रीडाकाज कियो क्रोड कलितकल
वर है द्वैज चंदजैसी श्वेत दंष्ट्र समुदय है॥तापैं दियैं भूमि कढी।
प्रलयपयोधिमुक्ता यमसालसत ऐसो राम सो सुदय है॥३॥
शैव शिव धारैं ब्रह्म वदत बेदांतवारे बोद्ध मतवारे बुद्ध बुद्धि मैं
बिचारे हैं॥ कर्ता कहैं नैयायिक जैनी अर हंत रटैं मीमांसक
कर्म अेक ईश्वर उचारे हैं॥गावत गोबिन्द होहु बांछितफल
दप्रभु सैंन दिनरावरे सुधारे काजसारे हैं॥वह है त्रिलोकीनाथ
सीतानाथ रघुनाथ न्यारेन्यारे लोक न्यारे रूपनौं निहारे हैं॥
॥४॥रामवहरावणारि दशरथ सुतुलसैं लच्छमन अग्रजा
तसुगुन समेत है॥ पूज्यप्रद्य पूरण आब्धि संतलौं प्रतापजास
सकल सुहाग सिद्धि बिद्याकौ निकेत है॥ आनन्दकौ कन्द

कलिकिल्विसपटलध्वंसिसौम्यदेवसेवातमसर्बकौसंके
तहै॥त्रिभुवनशरनअशरनकौशरनसदाँनित्यनिकलंक ता
हिप्राणवौसहेतहै॥५॥अवधपुरीकौभूपदशरथहोतभयौ।
सूर्यवंशकेतुभूरशत्रुनसँघारीहै॥बलीवीरबिक्रमीकरीही
पुत्रइष्टितानेनारायणतबैंतासआसनिरधारीहैं॥दुष्टदैत्य
कष्टभूरिभारभयोभूतलपैंतिनकेसँहारहेतचारमूर्तिधारी
हैं॥जेष्ठश्रेष्ठरामलच्छभरतरूशत्रुहनचारौंभ्रातमातता-
तआयसानुसारीहै॥६॥असुरनभूरिभयभीतमुनिबिश्वा
मित्रअवधअधीशअंगजातजुगजाचेहैं॥ओनिपयशस्वी
निजचित्तमैंदुचिंतहोयदीनेंसुतदोयरामलच्छमनराचेहैं॥
सुदासुरसुन्दरीप्रहारीताटकाभिधानकौशिकहुजानीनृप
बालसूरसाँचेहैं॥विद्याद्वयदीनीसद्यअतिअनवद्यतदा।
कढिगेसमस्तजेमनोर्थमनकाचेहैं॥७॥मत्तगजेंद्रवृत्तं॥
कौशिकनंदनआश्रमआयकियोमषतूरनआपअबेहैं।
घूमनिहारतआसुरओधसुवाहुमरीचसमेतसवैहैं॥श्रीरघु
नंदनकंदकियोछिनछाडिमरीचसुजानजवैहैं॥कारजलौंन
कछुकरयोजिहितैंतिहिकोतजिदीनतबैहैं॥८॥मनोहरवृत्त
॥सीताकौस्वयंबरसुनतंश्रौंनकियोगौंनमारगमैंशिला।
रूपअहल्याउधारीहै॥जनकपुरीमैंजायसर्बसतकारपाय
महतमहीपनमैंपायेशोभभारीहै॥गावतगोविन्दलाखि।
कोसलकिशोरछबिचित्रसेभयेहैंयत्रतत्रनरनारीहै॥ इं-

दहेकिइंदुहेकिदिपतदिनेंदकिधौंदशरथनन्दरामचन्दव
लिहारीहैं॥९॥ ॥दोहावृत्तं॥ ॥निरखतनिमिनृपनंदिनीउर
उमगयोआनन्द॥निजमनमाधिसंकलपकछुकरनलगी
स्वच्छन्द॥१०॥चंद्रायणवृत्तं॥कच्छपपीठकठोरयेहशिव
चापहै॥कोमलमूरतिश्रीरघुनन्दनआपहै॥इनतेंहोयअधि
ज्यकौनयहवातहै॥परिहौंपणदारुणअतिकीनअहहतुम
तातहै॥११॥मनोहरवृत्तं॥लच्छमनलायलच्छमनतेंक।
हतरामपेयहुप्रथीपपुंजपुंजप्रगटानहै॥जम्बुद्वीपआदिद्वीप
द्वीपकेमहीपआयेकन्याअरुकीर्तिलाभमाननमहानहै॥
बकितकियौकाहुटंकितमहेशचापनमित्तकियौनकियौउ-
त्थापितथानहै॥चडीनाकवानकछुकडीनाजुवानमुख
मैंरंजानबीरताबिहीनभोजहाँनहै॥१२॥दोहावृत्तं॥किय।
अनंदरघुनंदहियनिजभुजबलबरनंत॥प्रौढीवचनप्रतच्छ
पढिलच्छबच्छहुलसंत॥१३॥षट्पदवृत्तं॥बहुतकहैं
मैंकहानाथसचबचनउचारत॥दासरावरोयासलच्छम
नधियग्रहधारत॥गिनौंनगिरिवरमेरुप्रमुखधनुकीकागि-
नती॥अतिशयजीरणपिनाककरौंप्रभुनैंयहबिनती॥मु-
हिहोयहुकममममलषहुबलकौंनकौंनकौतुककरौं॥ध-
किधरौंमरोरौंमूलजिमगहिशतयोजनअनुसरौं॥१४॥सो
रठावृत्तं॥सुबचनसुनिश्रीरामनीतिनिलयनिजअनुज।
के॥रघुकुलमणिगुणग्रामकियनिषेधदृगसैंनकरि॥१५

॥ ॥इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलह।
सिंहजी बिज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदराम विरचि
तेश्रीबरविलासेश्रीरामलक्ष्मणसंवादोनामद्वितीयोल्लास
॥२॥ ॥दोहावृत्तं॥ ॥लाम्योरावरापुरोहितवनरावननिमि
नाय॥ नितप्रतिदुहितारावरी चितचाहतदशमाय॥ १॥
मनोहरवृत्तं॥ देनीहैंअवस्यमवदुहिता कहूँनकहूँलेनी चहै
लंकाधीशचितमैंबिचारियैं॥ जाकेगुनगावैंमहामुनिमौ
च्यादिप्राच्यधरनीकीरेनुतैंविशेषधियधारियैं॥ परमप्रचं
डदोरदंडनप्रतापनतैंतिभुवन लोकलोकमच्छरनिहारि
यैं॥ ऐसौअवलंबआहिकीजियैंबिलंबनाहिअद्यआविलं
बआपकारजसुधारियैं॥ २॥ चंद्रायगावृत्तं॥ असुरपुरोहि
तपठतरामप्रतिबैनहै॥ धियधारीलंकाधिराजसियलैन
है॥ दिनचाहतजोश्रेयनिजेच्छाछंडियैं॥ परिहाँत्रिभुवन
विजयीसंगवैरनहिंमांडियैं॥ ३॥ बदतबचनवैदेहपुरोहि
ऐखियैं॥ यहमाहेस्वरधनुषदृष्टिदेदेखियैं॥ करिहैयाहिअ
धिज्यसुतासोपायहै॥ परिहाँअपरसबैंसियसियायआय
जिमजायहै॥ ४॥ पठतपुरोहितसुनौजनकमहाराजजू॥
अवलोकतभुजबीसकितकयहकाजजू॥ छिनमाधिचूर
नकरतधरतनहिंधरिहै॥ परिहाँनिजगुरुशिवधनुहेरिसुवि
कलशरीरहै॥ ५॥ विहासिबदनमिथिलेश पुरोहितज
रहौ॥ शंभुवासकैलाशलियौकरकिमकहौ॥ गृहउपेरत

वैरकियौअविवेकहैपरिहाँअवभषक्यौगुरुभावगहीधनुटंक
है॥ ६॥ दोहावृत्तं॥ जिमलीनोकैलाशकरतिमधनुकीजैस
ज्य॥ नातरनिलयसिधाइयैंउरआशयसंत्यज्य॥ ७॥ इमकछु
बचनविदेहवदिनिजउरकरतबिचार॥ अवआगैंहूहैकहा
समजपरतनहिंसार॥ ८॥ चंद्रायणावृत्तं॥ क्षुद्रसकलछितिपा
लसुअखिलअशक्तहै॥ अद्ययामदशग्रीवईशअनुरक्तहै॥
धनुषारोपणशुल्कमुल्कजाहरकियौ॥ परिहाँकसहूहौसिय
हायकहतनृपभरिहियौ॥ ९॥ श्रीवैदेहीवाक्यं॥ कोमलमृगनि
कौशलराजकिशोरहै॥ शंभुशरासनकमठसुप्रष्टिकठोरहै॥
किहिंबिधिहोयअधिज्यअसंभववातहै॥ परिहाँअतिदारुण
पणकियौअहहुतुमतातहै॥ १०॥ दोहावृत्तं॥ वैदेहीबरबचन
सुनिनीरभरैनृपनैंन॥ तवैंपुरोहितक्रोधकरिकहनलग्योक
कुबैन॥ ११॥ मत्तगजेंद्रवृत्तं॥ संजुतशंभुशिवागणनायककस्क
दननंदिगिरिंद्रउठायौ॥ विक्रमवेगपराक्रमपुंजदशाननको
छितिछोरनछायौ॥ भूपविदेहविचारकरौहियचापचढावन
वाहिबतायौ॥ आवतमोहिअचंभमहाइहिमैंतुमकोपुरुषार
थपायौ॥ १२॥ कविरुवाच॥ दोहावृत्तं॥ उपरोहितआक्षेपको
रिउरउमंगअधिकाय॥ जनकसुनावतसबनृपनतवनिजभुज
उठाय॥ १३॥ जनकउवाच॥ चंद्रायणावृत्तं॥ शंभुशरासनमध्य
महागुरुतारई॥ बीसभुजनकीशक्तिजहाँकुंठितभई॥ ऐसौको
इतआहियाहिसज्जितकरे॥ परिहाँत्रिभुवनविजयविभूति

सीयताकौंवरैं ।। १४ ।। कविरुवाच ।। सोरठावृत्तं ।। मुनि विदे
हनृपबोल श्रीरघुनंदनउमगिउर ।। लखन सुलोचनलोल
जटाजूटग्रंथीदई ।। १५ ।। ।। इति श्री पिपलोदपत्तनाधिः
पालरावतजीश्रीदूलहसिंहजी बिज्ञापितरत्न पुररथ कवि
टीकाशर्मांगजगोविंदराम बिरचितेश्रीवराविलासेपुरोहित
बिदेहसंवादोन्नामतृतीयोल्लासः ।। ३ ।। ।। तदुक्तंवसंतराजे
।। चक्षुर्वामंमृगदृशोजयकारिभृशांत्वरा ।। तदेव पुरुषस्या
रात्त स्फुरितंभयशंसन मिति ।। १ ।। ।। कविरुवाच ।। ।।
घनाक्षरीवृत्तं ।। पुलकितपरमस्मेरसहितमुवार बिन्दसिय
केकपोलमैंबिलाकतहैंवारवार ।। कौराएपकदंवनमैं होयर
ह्योकोलाहलतिनकेप्रपंचबोल श्रवन निधार धार ।। पंचान-
नतुल्यआप पंचाननवैंनसुनिमंचतैंउतरि पंचाननकोधनु
निहार ।। आनंद अधूटजोरजटाजूटग्रंथिदईलोगानकीलूटि
लईशोभाशुचिसारसार ।। १ ।। दोहावृत्तं ।। वामदेवकोदंड
दृढजवकरलीनौंराम ।। जामदग्निजनकात्मजातवफुरके
दृगवाम ।। २ ।। करनलगेधनुसज्जतबभ्रातलच्छमनतास
उरवीअहिकमठादिकोंदेनलगेविश्वास ।। ३ ।। रोला वृत्तं ।। थि
राहूजियैंथिराधराधारियैंभुजंगम ।। महिअहिधारहुकमठरा
मकरग्रीवधनुसंगम ।। दिक्कुंजर दृढहोयत्रितयधारहु इहिंअ
वसर ।। सज्जकरतहर चापआपरघुवंसविभाकर ।। ४ ।। षट प
दवृत्तं ।। भूमीभइबिनम्रनम्रफणिपतिफणमंडल ।। भयौ

भेचकितभूरिबुध्धिवेपतआखंडल ।। किलमिलाततिलकम
ठछोभपायौवरुणालय ।। दिग्गजदिशिभटसहितभयेकायर
करुणालय ।। वहुवारवारवंहितकरतधराधारधूजनलगे ।। ज
बसज्जकियौशिव धनुषतबइमलछमनकूजनलगे ।। ५ ।। मनो
हरवृत्तं ।। इतमैंउठायोधनुतिनैं विश्वामित्रतनुपुलकिउठयोहै
अंगअंगप्रेमपाथहै ।। इतमैंनमायोरघुनंदनमहेशचापतिनै
नमैंदेशदेशभूपनकेमाथहैं ।। इतमैंभमायोभूरिकौशलकि
शोरयह संशयगमायौतिनैंनिमिपुरनाथहै ।। कारमुकखैंच
तमैंखैंच्यौं मनमैथिलीकोजामदग्निमानओकमानभग्नसा
थहै ।। ६ ।। षट्पदवृत्तं ।। जबजारोयरणकियैंकरालौखैंचतशंक
र ।। तवैंत्रिपुरतियतोमभीमभासंतभयंकर ।। करणोत्यलग्रंथी
जुतिनौंकीभूसहोतहै ।। सदालगायैंरहतसुनतनिजश्रोत्रश्रो
तहै ।। जवजाउतारित्रिपुरारिनितआस्फालनधनुअनुसरैं ।।
तबव्हैनिरासनिशिचरवधूआस्फोटनकंकनकरैं ।। ७ ।। दो०
उग्रदेवअत्युग्रधनुउत्थापनतैंकाम ।। किहिंकारणभंजन कि
यौगुणगाहकश्रीराम ।। ८ ।। मनो० ।। ब्रह्मवधपातकसमेत
मन्मथारिअरुमात्रवधकारिक्षत्रियारिजियजानिकैं ।। इन
हूंकेसंगरयौदोषसंसरगलयौअपरअनेकअघयषानिउरआ
निकैं ।। गावतगोबिंदगिरासकलसुजानसुनौंमहतमहेश ।।
धनुयहमनमानिकैं ।। पायनकीभईहानतातैंतानैंतजेप्रानराम
पाणिपद्मपुन्यतीरथपिछानिकैं ।। ९ ।। टूटतहीभीमधनुकी

नौंहै कठोरनाद बिस्मय भयौहै ठोरठोरठामठाम है॥ रविवर।
वाजिराजिऊवदगमन कियौशंभुशिरकंपधुवधूज्योधोलधा
महै॥ दिग्गज गिरनतथा चलन कुलाद्रिन को अरगविमिलन
सप्तऊरधनमाम है॥ मैथिली मदन मद अंधन कदन ओघ
आसुरअदन शूरसदन भिराम है॥ १०॥ स्वष्टाके वरिष्ठवर अष्ट
हु श्रवनरुके अस्मूर्तिमूर्ति अष्टकष्टभयो भारीहै॥ मुयरित
अष्टदिशादलन कुलाद्रि अष्टअष्टकुलीनागपाँतिबधिरनि
हारीहै॥ लच्छमनभ्रात आतिस्वच्छमन लच्छलाय गोविंद
मतच्छ दच्छवदैं धर्मधारीहै॥ तोरदोरदंडजोर चंडिकेशकौ
प्रचंड खंडनको दंड नाद चंडता प्रचारीहै॥ ११॥ टूटत धनुषम
हीमच्यो महाकोलाहल निठुर निनाद लोकलोक ममैं छायो
है॥ औरग सुनि शब्द के अमर्षवस मूर्छित व्है आति अविलंब
ध्यान अवधकि धायाहै॥ जानकी निमित्त जान जानकी र-
षीन भान भंजिभवचाप आपवीरपद पायो है॥ क्रूर क्रोधअ
ग्निप्रले अग्निसो निमग्न उर निष्टुरता मग्नजामदग्निमुनि।
आयोहै॥ १२॥ मस्तक मनोहर बिराजैं टोपकंक पत्रपीठपैंनि
षङ्ग जुग्मख्यात खंडखंड है॥ परम पवित्र भूतिभूषित उरस्थल
है मंजु मृगचर्म मुंजमेखला अखंड है॥ वसन मजीठरंग रंजित
ललित ततु करमे धनुष अक्षवलय घमंड है॥ दंड औ कमंड
ललै ऊग्र अस्त्रमंडल लेपरसा प्रचंड चंड चरित उदंड है॥ १३॥
दोहावृत्तं॥ ब्रह्मसूत्र बायें कँधा दच्छिन दिश धनुधार॥ धर्म

दीधितीसो भसमाजिम अहिचंदन लार॥ १४॥ मनोहर वृत्तं
जबतैं जनम लियो तबहींतैं ब्रह्मचर्य शिलासंभजे सैभुजदंड
भासमानहै॥ अंकित ज्याघात पंक्ति सूचन करत यहै वसुमति
बिजय प्रसस्ति फहरान है॥ वच्छथल प्रबल घनास्त्र शस्त्रघात र
किरा कठिन कठोर पै सुधारैं धारवान है॥ छत्रिवन वारन बिदा
रन करनहार आयो जमदग्नि जायो जानत जहान है॥ १५॥ मुदि
तसमुद्रसप्त पौंमिप्रतिपालक हौ अर्जुन सहस्त्र भुज दुष्ट दर्पदा
ह्यो है॥ रेवातीरनीरके निरोधकौ करनहार दोरदंड झुंड खंडखंड
न उच्छाट्यो है॥ गावत गोविंद ऐसैं लच्छमन कहत राम पित्
बधपेषत अमर्ष उदघाट्यो है॥ वहीजामदग्नियह जाने गुरु द्रो
हीजान कठिन कुठारनैं कठोर कंठ काट्यो है॥ त्रिगुरिगत सात
वेर छत्रियसमस्त के रवसामांस रुधिर सनान बहुवार है॥ निध
नविधान बीच परम प्रधान यह तीय वृद्ध बाल नाहिं निर्दय नि-
हार है॥ राजन के कंध कूट कोटि कोटि काटन मैं साठौं घरी आठौं
पैर परम प्रचार है॥ वारवार बदत ध्रुवां काधिय धारधार छत्रिछय
कारघोर धारयै कुठार है॥ १७॥ ॥ इति श्री पियलोद पत्तना
धिप रावत जी श्री दूलहसिंहजी बिद्यापित रत्नपुरस्थ कविटीका
रामांगज गोविंदराम बिरचिते श्रीवरबिलासे परशुरामागम
नंनाम चतुर्थोल्लासः॥ ४॥ ॥ सोरठावृत्तं॥ कहत क्रोध करि
वैंन परशुराम संशय सहित॥ तोस्यो धनुष जिनैं न काल कलेवा
कौंन कहु॥ १॥ षट्पदवृत्तं॥ निजपति आयुध जानि पार्वती

पूजत जिहिं नित ॥ वासुकि कंचुक लाइ नंदि सादर आछादित ॥ धनुष धनंजय तुल्य त्रिपुर तामधि हुव इंधन ॥ मोहि अच्छत है टूक करे कानैं कहियैं जन ॥ जब काहु न उत्तर दियो तब उर अमर्ष अतिशय पगे ॥ फुरकंत ओठ पुट रक्त चष राम हि सन इरा रन लगे ॥ २ ॥ मत्तगजेंद्र वृत्तं ॥ फुल्लित गल्ल करैं फुंतकार प्रफुल्लन सा पुट कोटर आयौ ॥ ओघ अह कृति पावक पुंज हलाहल धूम तिनैं प्रगटायौ ॥ अंध समान किये सब लोकन अंबर लौं छिति छोर न छायौ ॥ लोयन लाल कराल कियैं तत काल महा विकराल लषायौ ॥ ३ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ रेरे रे अरेरे राम तेरे ये समग्र काम निज कुल कुंज पैं तुषार तोम तैं सोहैं ॥ मोहि पहिचान्यौं नाहिं रंच डर आन्यौं नाहि जान्यौं ना जरूर जाम दग्नि मुनि जे सोहैं ॥ कीनो है अकांड मैं प्रचंड दोर दंड वल षंडन कोदंड करि चडमान कै सोहैं ॥ आडंबर डिंभ तैं बिख्यात भयो षंड षंड मंडल महीप मैं उदंड मंड ऐसो हैं ॥ ४ ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ निषिल नरेंद्र निकाय कुमुद जिम जानियैं ॥ तिनकों मुद्रित करन मिहिर मुहि मानियैं ॥ कार्तवीर्य प्रति कढे जथा मम बोल हैं ॥ परिहांसो सुनि लीजैं राम अवण जुग बोल हैं ॥ ५ ॥ दोहा वृत्तं ॥ सहसबाहु नृप सैन्य सह हौं द्विबाहु दुज एक ॥ प्रगट प्रभा करयो यिहैं तब मम संगर टेक ॥ ६ ॥ जथा कही तैसी करी कार्तवाय के साथ ॥ सो जननसारो जगत मम बिक्रम रघुनाथ ॥ ७ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ कठिन स्वभाव मेरौ जाहर जगत बीच बाल वृध्ध तरुणन मामत सूराम

रे हैं ॥ छांड्यो नाहिं छौंना नव सूतिका बिछौंना बीच तिनके रुधिर सर्व पितृ काज सारे हैं ॥ सप्तत्रय बेर क्षुद्र छत्रिय त्रियन केर गर्भ थित अर्भन निकारि कादि डारे हैं ॥ अहो अहो अहो महा आचरज आवत है कहो कहो कहो राम तुम क्यों बिसारे हैं ॥ ८ ॥ कालसा कराल क्रूर कठिन कुठार यह कार्तवाय कंठ भुज छेदन मैं दच्छ है ॥ घर्षण केयूर मध्य मणिगण रणत्कार घोर सोर सुनैं शत्रु त्रसत नतत च्छहै ॥ तेज करि तुल्य दियैं द्वादश दिवाकर सौं छत्री गोत्र काज प्रलय पावक प्रतच्छ है ॥ लच्छमन लाय लषलच्छमन अग्रजात लच्छ लच्छ लच्छ वच्छ भच्छन बिचच्छ है ॥ ९ ॥ षटपद वृत्तं ॥ सुनि सुनि बचन मुनीश राम निज चेतसि चुनि चुनि ॥ पुनि पुनि नयन निहारि बैंन बोले हिय गुनि गुनि ॥ भुजबल बिदित न मोहि नाहि शिव धनु अनाल बल ॥ रावर महिमा महा कहा हौं जानि सकौं भल ॥ करियैं न क्रोध नाह कविभो धरियैं धीरज धूव धिय ॥ अभ्यात बाल आचरण लषि ह्वै प्रमुदित गुरु लोग जिय ॥ ११ ॥ दोहा वृत्तं ॥ कर कुठार यह कंठ मम करहु यथो चित सोय ॥ रघुबंशिन को शूरपन गो द्विज पैं नहिं होय ॥ १२ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ लीजैं मुनि बिप्रवर्य हमकों तिहारे संग संगर की बात हू किये तें होत पाप है ॥ सारे हीन बल हम तुम बलवान न कै सीस पैं लसत जथा पत्रन पैं छाप है ॥ कैसे करि सकैं कहौ रावरी बराबरी जु भुजन तैं भये है भूप ब्राम सुख जाप है ॥ ऐक गुण संजुत धनुष्य धराधीशन कों नव गुन जुग ब्रह्म सूत्र लसैं आप है ॥ १३ ॥ चित्रभानु वंश जन्म छत्रिय कहा

वतहौं श्रोत्रियसमस्तइभ्य अर्चन करतहौं ॥ भगवत विश्वामित्र
महत अनुग्रह तैं प्राप्त दिव्य अस्त्र पारधियमैं धरत हौं ॥ कोऊ जन क
रौ जस अथवा कुजस करौ हर्ष शोक नैंक नाहिं रसना ररत हौं ॥ धा
रत हौं शास्त्र शत्रु संघन संघार काज कालतैं डरौं न विप्र बालतैं डरत हौं
॥१४॥ दोहावृत्तं ॥ परशुराम रघुराम मुख निकसे सुनिवर बोल ॥ ति
नकों कियौ न मोल कछु उचरन लगे अतोल ॥१५॥ बिप्रा बिप्र कहि वद
नसु हरिशठ बारंबार ॥ जा विध कौ मैं विप्र हौं सो सुनि लीजै सार ॥१६॥
घनाक्षरी वृत्तं ॥ क्रोध करि जानैं निज जननी प्रहारी येष क्षत्रिय बिहीन
मही कीनी इकवीस बार ॥ क्षत्र अस्त्र मध्य आसव स्वाद मैं अभिग्य अ:
ति कुलिश कठोर घोर कठिन कुठार धार ॥ जाकौ बाण छिद्र मग ।
भासै क्रौंच पर्वत मैं हंस छल गिरैं अजौं आस्थि अद्रि के अपार ॥ ऐ
सौ उग्र ओज उग्र देव सौ उदग्र अति प्रलै अग्नि जैसो जामदग्नि भार्गव
निहार ॥१७॥ षट्पदवृत्तं ॥ क्षुभित निरखि भृगुनंद बचन रघुनंद उ:
चारत ॥ त्रिभुवन तिय मधि वीरजनी जननी तव धारत ॥ निज भुज व
शी विशाय बिलखि सुख ब्रीडा पाई ॥ अस सुत तैं प्रेम मउदर उमाउर
इच्छा आई ॥ अति धन्य मात अरु तात धन वीर आप अति धन्य हो ।
तिहु काल त्रिलोकी बीच किहुँ नहिं उपमा कछु अन्य हे ॥१८॥ चंद्रा
यणा वृत्तं ॥ हार पैरौ गर मोर कि कठिन कुठार है ॥ कज्जल तिय चख
बसै कि जल की धार है ॥ सुख लखि हौं संसार कि जम कौ मुख लखौं ॥
परिहौं विप्रन पैं वीरत्व पनौं क वहु नरखौं ॥१९॥ दोहावृत्तं ॥ कहे रा
म अभिराम अति अच्छर अखिल अमोल ॥ तदपि अभ्य सूयास

हितबोलत भृगुपतिबोल ॥२०॥ किरीटीवृत्तं ॥ सागुरगह्यौ सव अं
करके कर जीरन चापपिनाक कहावत ॥ टूटि रयौ पहिले तिहिं
टोरि प्रवीरन मैं नहिं बीर सरावत ॥ वैष्णव चाप हमार यहै करिस
ज्ज विकर्षण जो दरशावत ॥ शूर समग्रन की गिनती मधि तोर
घुनंदन राम गिनावत ॥२१॥ दोहावृत्तं ॥ भार्गव मुनि के बचन
सुनि भये चकित चित राम ॥ इत पर्वत उत कूप है मिलत न कित
बिश्राम ॥२२॥ धनुषाकर्षन करन मैं विप्र धर्षण होय ॥ जौन
करौ यह बात तौ मिलत पराभव मोय ॥२३॥ षट्पदवृत्तं ॥ अ
द्यप्रभृति मम भाव विप्र नहि परशुराम हैं ॥ पुत्र पौत्र रघुबंश भूप नहिं
यहै राम है ॥ वीर कहौ अथवा कुवीर कहियौ समग्र जन ॥ अव
अवश्य यह बात धारि लीनी मैं रमन ॥ सब सुजन कुजन मिलि भ
ल कहौ किंवा करि लीजो हसी ॥ द्विज दुष्ट प्रबल मद दमन हित
पीतांबर कम्मर कसी ॥२४॥ इम करि मनसि बिचार चारु रघुवं
श विभूषण ॥ पुनरपि प्रवचन पठत शांतिमय विरहित दूषण ॥
अराविमित्त भूमात्र जीति इकवीस वेर यह ॥ गहि गहि पुनि पु
नि दियौ नाहि रषि लियौ आप वह ॥ हौं डिंभ बहुरि नव वाहुब-
ल घोर महा अति वीरव्रत ॥ विरमियैं क्रोध हूजे मुदित जाति
पूज्य भगवंतकृत ॥२५॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ करत नाहिं द्वै बार बा
नसंधान है ॥ आश्रित कौं द्वै वार देन नहिं थान है ॥ आर्थिन कौं
द्वै बेर न अर्पत दान है ॥ परिहौं भाँयत नहिं द्वै बेर राम अभिधान
है ॥२६॥ राम लियौ वह धनुष सहेल सुजान है ॥ गुणयीजनक

रिबाण अकर्षनठाँनहै।छबिमकरध्वजमध्यनभासतमेद
है।।परिहाँकियभार्गवमुनिस्वर्गगतीउच्छेदहूँ।।२७।।रामबा
णसंधाननिरर्थकनहिंकदा।।मुनिप्रतिकियैंप्रहारब्रह्मवध।
छैनदा।।कियैंभूमिपरपतनभृतपीडाजदा।।परिहाँछेद्योमुनि
कोमरणअमरकीनौंसदा।।२८।।चापाकर्षणताटकारिआ।
कर्षणहै।।लषतसीयसासूपनैंनआकर्षणहै।।पहिलैंभवधनु
मंजिराममोकौंलई।।परिहाँअबैंकन्यकाअन्यलैंनइच्छाठई
।।२९।।दोहावृत्तं।।इहिबिधिसाशंकितभईकरिकुतर्ककमनी
य।।पुनिपुनिसियेंयषनलगीरामरूपरमनीय।।३०।।अबउदंत
सुनिलीजियैंपरशुराममुनिकेर।।गयेंगर्वकेटेरसबरयेराममतन
हेर।।३१।।षटपदवृत्तं।।कार्तवीर्यभुजदंडसहसउच्छेदनयं-
डित।।जामदग्निजुधवीरउरसिउद्दंडअषंडित।।लषतरामअ
तिउग्रविशिषकरधरउहिंअवसर।।अविनयगयौबिलापही
यहुलसायबिनयबर।।ब्राह्मन्यदैन्यप्रगटईभयौपिशुनभावभा
र्गवभग्यौ।।श्रीरामचंदअभिनंदितबअमलनबनउचरनल
ग्यौ।।३२।।अहोरामगुणग्रामधर्मध्रुवधामधुरंधर।।दिनमणि
कुलकलकलशप्रचुरपृहवीशपुरंदर।।जौंनआपअवतारअ
मलनिरमलमहिहोंतो।।नोअवलंबनअवनिअवनिआधिप
ननहिंहोंतो।।त्रैलोक्यतापत्रासकतरलनिजनरमुदमंगलक
रन।।अपराधओघछमियैंबिमोसकललोकअशरनशरन।।
३३।।दोहावृत्तं।।तबमुनिभृगुपतिवरतबनबदनवचनरघुनंद।

जामदग्निमुनिचरनजुगकरिअभिबंदनवृंद।।३४।।मनोहरवृत्तं
जायेंजमदग्निपुनिपायेहैंपिनाकीगुरुबीजविधाननावयान
तवनंतहै।।कर्मकरिसारेहूजहानबीचजाहरहौधरमधौरेयाधीरे
महिमाअनंतहै।।मुद्रितसमुद्रसप्तसप्तदीपवतीमहीदीनिहैत्रि।
सप्तबेरभूसुरमनंतहै।।सत्यानिधेब्रह्मनिधेतपोनिधेभगवंतआ
पलोकलोकोत्तरउपमाअनंतहै।।३५।।चंद्रायणवृत्तं।।जानि
आपअवतारभयेरघुनाथहै।।परमप्रेममिलिगाढनयनजुगसा
पाथहै।।अर्प्योतेजमहत्वछबिबधछंडिया।।परिहाँउत्तरदिशिकि
यगवनतपस्विमनमंडिया।।३६।।षट्पदवृत्तं।।बहुबिधबाजनब
जतमनहुघनगरजतमधुधुनि।।गावतमंगलगीतसुवासि।
निचेतसिचुनिचुनि।।बिरदावलीबदंतिवृंदवंदनबंदीजन।।
बेदमंत्रबरबिप्रउच्चारतअषिलमुदितमन।।श्रीरामसीयपा
णीग्रहणनिरषतमुनिनरसुरअसुर।।आनंदओघवर्ततभ।
यौउहिंअवसरसबजनकपुर।।३७।।दोहावृत्तं।।दूलहदुलह।
नदिपतदुहुरतिरतिपतीसमान।।मंजुमुहूरतजनकनृपदीनौ।
दुहितादान।।३८।।हरिगीतकवृत्तं।।श्रीरामश्यामसुकामअ
तिअभिरामपीतमपीयके।।पायैंपरसकरसकलसुषनिधि।
हीयहरसतसीयके।।आनन्दसतावतरूपभासतयोगनिद्रग-
तायथा।।कंदर्पकिबडदर्पकेत्राराभिन्नभ्राजतहैतथा।।३९।।बा-
ल्मीकिगौतमकुशिकनंदनजामदग्निबसिष्टहै।।येवाहबि
धिविधानबिरच्यौशतानंदविप्रिष्टहै।।संपूर्णकियपरि

पूर्णानूरगासीय लछमनसाथहै।।कीनौँगमन द्रुत्त आगमन
निज पुरीप्रतिरघुनाथहै।।४०।। ।।इतिश्री पिपलोदपत्तना
धिपालरावतजीश्री दूलह सिंहजी बिज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि
टीकारामांगज गोविन्दराम बिरचिते श्रीबर बिलासे सीतास्व
यंवरोनाम पंचमोल्लासः।।५।। ।।अत्र श्री हनुमन्नाटके
प्रथमोंकः।। ।।मनोहर वृत्तं।। ।।आवत अवधपुरीजान
कीलषनजुक्त बन्दिगुरुलोकरामचन्द्र प्रेममपायेहैं।।परमउ
छाह छायरयो गेहगेंहनमैं दिव्य देह देहमैं सनेह सरसायेहैं।।प
हलौपहरवीत्यौ मित्रनमिलनमध्य बाकीतीनजाम अतिदी
र्घदरसायेहैं।।दंडकरिताडनतुरंगततिसीतारामचित्रहय
सालामैं बिचित्र छोहछाये हैं।।१।। दोहावृत्तं।।पियताडतह
यशालहय सियताडतहयचित्र।।उभयभयेउन्मादथित कि
हिँकारणकहुमित्र।।२।।तस्योत्तरं।। ।।धनाक्षरीवृत्तं।। ।।
परनिपधारेप्रातहीते पुत्र पुत्रवधू अमितउछाह छायरयो औ
धमैं अपार।।आफताब गिरिमैं निहारि रवि रूप रम्य दंपतिह
दय भ्रांतिजाकोपेखियैंनपार।।मंगलमनोहर निहारनकोन काज
आये अर्क अम्बउनजानिजानिकछु धुनिधारधार।।अस्ताचलये हैं
कंब ऐसैं उर आन्यौं तवमे दुरमैं मंदुरामैं तजैं तिनैं वारवार।।षटपद वृ
त्तं।।गये अस्तगिरि अर्क उदयशशधर दरसायौ।।रंगपक्क नारिंगपिंग
सुन्दर सरसायौ।।गुरुजन आयसपाय गई निजमंदिर अंदर।।सिय
रम्यरंभोरुपति वृत्त प्रेम धुरंधर।।मुखमंद मंद मुसकन सहित रसिक

शिरोमणिस्वामिप्रति।।आनंदकंद रघुनंद जितराम काम अभिराम
अति।।४।।प्राचीभाग सरागतरुणि विरहिणि विस्तारे।।नीरजालि
निद्रालु कुमुद कुल बिकसितसारे।।बिगत बिकार चकोर शोकसह
कोकलोकहै।।स्रावकाशआकाशशामितनम ततीतोकहै।।कंद
र्पदर्प अर्पित हृदय प्रबल प्रसर्पण करियौ।।शार्वरीस्वामि
अभिराम अतिसार्वभौमसमुदयभयौ।।५।।कैरवकोरक बिकसि
तरुणतरुणी मन विदलत।।मीलत अलि अंभोजमानमानिनिउ
न्मूलत।।प्रसरिजुन्हाईजाल तोमतमकवल करत अ तौउई वेल
अंभोधिआकुलितकोककुलन तति।।दिशा बिदिशा सकल धवलि
मथरतहरतनिखिलतन तापहै।।बरबसहृदय आनंद निधिउदय
सुधाधर आपहै।।६।।कुचगिरि शिखरउतंग हीयसीमंतिनिसर
सत।।अजौं मानयह मूढ तिनैं निवसत नितदरसत।।कुपितक
लेवर अरुणरूप रोहिणिपति आन्यौं।।करपसारिचहुँ ओर कुमु
दकुल विकसनठान्यौं।।तितरुकीहुतीभृमरावली बाँधिपाँति
निकसीलसी।।मनु मानप्रहारणकारनैं असित असी निकस्यो
शशी।।७।।अस्तभयेदिननाथवेषडाहिँकौशशिलीनौं।।सहित
राग अनुरागकमलिनीसपरस कीनौं।।पायशीत करपरस तया
मुद्रितमुषठान्यौं।।परतियरत निजनाथ कुमुदिनी कामिनिमा
न्यौं।।परिहासकथनकौतुक किये तबअतिलज्जित हैरयो।।
अरुणिमागई सबअंगकी इहिँ कारण पांडुभयौ।।८।।दिक्का
गुरु सिंगार मुकुर प्राची दिशा तियको।।कुसुदनकोमुदकरनचको

नहरखनहियकेो।।प्रौढभयेँशीतांशुरोदसीवपुसरसतहै।।रामकहत
सषिकरहुतकेअसकसदरसतहै।।यहकिधौँपूरकर्पूरकत किंवाम
लयजलिप्तकिय।।पुनिकिधौँदधास्यो पारदनिश्चयथवाफटिकमणि
षचिय।।८।।दोहावृत्तं।।सषीकहतकरजोरिजुगसु।नैयैबिनयहजूर।
।यासकलसंसारमधिरावरजसपरिपूर।।१०।।फटिकनाहिँपारद
नहीँनहिचंदननकपूर।।श्रीरघुनंदनरावरोसुजस जगत परिपूर।।११
तवअंतरनिरयतभयेचुगत चकोरअँगार।।तिनप्रतिरघुवरउच्चरत।
सोधहुसारासार।।१२।।सुधासुधाधरस्वादगहिपुनिश्रंगारकप्री।
ति।।करनअन्यथाकौँनकहु १२८ रचीबिधानारीति।।१३।।षट्
स्वरसं।।तल्लतिमिरचयचमूँचक्रसंहारचक्रयह।।चक्रवाकक्री
डाक्रनांतनिक्रांतक्रांतिसह।।कांताकांत नितांतहृतसंजोगसा
च्छिरह।।गगनमान सरराज हंसराजतशशांकमह।।पुनिशुचि
संभोगसंभ्रमाधि कुंभकुमुदतियसमुदप्रद।।गीर्बाणनाहि नीर्वा
णप्रदपंचबाणनिशशाणहद।।१४।।सोरठाबृत्तं।।बंदैँसारिका वैँ
नसहचरिगननि सुनायकै।।यहसूचनकरिसैँन अवसरठहरन
कौनअब।।१५।।निज निजगईनिकेत सकल सहचरीसमुझिजि
य।।सौभास्सकलसंकेत सियसियपियहुलसंतहिय।।१६।।इतिश्री
पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजी बिज्ञापितकवि
टीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्री वरबिलासेसहचरीगम
नौनामषष्ठोल्लासः।।६।। ।।हरिगीतकवृत्तं।।श्रीरामचंद्ररुजान
कीजुगहृदयकियनीसाराहै।।जे चंद्रमंडलशारानैँउतीर्णरति

पतिबाणहै।।तेपंचबाणकबाणतैँनिकसेकसेआकर्णलौँ।।ला
गेअचानकआयकैँजुगवच्छथलवरबर्णलौँ।।१।।द्वाराग्रभाग।
निजायप्रीतमप्रीतिजुतगहि अंकपैँ।।लीनी निमीनृपनंदिनीआ
नंदजुत परियंकपैँ।।रोमांचवपुअतिनम्र आननिनाहिकछुतनु
भानकी।।संकोचकरिसंकुचितहेरइजानकीप्रियप्रानकी।।२।।
संसारसारौकहतस्मरशरपंचबानिप्रमानकी।।कोशादिकनमैँ।
काव्यगनमैँव्याकरणअनुमानकी।। बिष्यातहैसबष्यातमैशरपं
चइतिअभिधानकी।।मोगातमैँअगिनंतकिमरोमांचलषि क
हजानकी।।३।।षटपदवृत्तं।।गाढालिंगितहोयस्वपिहिस्वामिः
निपियभाषत।।नहिँनाहिँनहिँइति बचन जानकी आननरायत।
कोमलकमलसमानस्वामिवच्छस्थल राजैँ।।ममकुच्चकठिन
कठोरचुभनसंशायमनछाजैँ।।पुनि पवनप्रवेशनहौँनाहितकर
तरहतमेथिलिशिथल।।प्रभुप्राणनाथप्रियप्राणसियकिय
आकर्षणबाहुबल।।४।। बाहुपाशअन्योन्यग्रहणरसभरमल
भूषित।।जंयतिजुगलकिशोरमुहुर्मुहुउपमअदूषित।।स्मतिअ
भिमतफललेतउभयसुषदेतपरसपर।।गर्भसारसंसारभयोनृ
तनइवरसपर।।महमंजुलमधुरालायकरिहौँहाँहाँरघुबररटत
।।निमिनाथनंदनीमेदगिर नानानाकहिकैँनटत।।५।।षदिर
सारधनसारपुगचूर्णनकरिआवृत।।नागवेलिदल बिमलवीटि
कानिजआननधृत।।कहौलललीसौँलेउलियोसियचारभागकरि
धर्मादिकफलचारपदारथतुलितधियधरि।।पुनिरामचंदसानंद

हुइ भैथिलिसुरव निज मिलतसुष ॥ अतिमधुरपाइ प्रभु अधररस
पायेब्रह्मानंदसुष ॥ ६ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ जबकछु निद्रित नयनभ
येजुगसीयके ॥ तबैं हृदय पर किये पानिपुट पीयके ॥ चितथ्थित
प्रभुरूप बिनिर्गमन हिचहै ॥ परिहाँ यहउर आशय अमल निरुंधि
तहीरहै ॥ ७ ॥ दोहावृत्तं ॥ बैदेहीवरवच्छथल यच्छकर्दमाघ्राय ॥ आ
यौ अलि अवलोकि त्रिभुअहिं बरनत चितचाप ॥ ८ ॥ षट्पद वृत्तं ॥
कांताकांत नितांतकुचांतस्वन्दन चर्चित ॥ मदन दहनतपत्रामनहेत
घनसारसमर्चित ॥ सियाउरस्थलमध्यमधुपनिर्मग्नभयो जिहिं ॥ पच्छ
रहैवाहरेकरनउत्प्रेच्छ पेषितिहिं ॥ मनुधस्यौ पंचशर विशिषहियर
हेपुंय अवशिष्टहै ॥ सोसुनत व्याज निद्रित प्रिया श्रवणसुधासमसि
ष्टहै ॥ ९ ॥ प्रथुलजघन घनभारमंद आंदोलन आनैं ॥ मृदुचंचलअ
लकाग्र अवलि अलिआभा भानैं ॥ प्रकटित कृत भुजमूल फुरत श्रु-
तिकरणपूरहै ॥ स्तनलीलालालित्यबसनवपुपूरनूरहै ॥ जानकी ॥
व्याजनिद्रायहै प्रमदतमानसपीयकौ ॥ हीयकोम्हरनहुलसंतहैजी
वनजानहुजीयकौ ॥ १० ॥ लषिनारी निद्रालुबसनपिय हरि वेलागौ ॥
कांचीरवसुनिकामततच्छन आवतभागौ ॥ तस्करलुकिवेलग्यो
ताहि भरिगगरणनिवतायौ ॥ काम चलाये बान चोर अतिशयसतरा
यौ ॥ घनजघनजानिगिरिबरगुहातिततूरनकीनौंसदन ॥ लषिशं
भुजुगलउरऊपरैं द्वैसभीतरुकिगौ मदन ॥ ११ ॥ सोरठावृत्तं ॥ प्रगट ॥
पद्मिनीप्रीतिजिमबरनतरसग्रंथमाधि ॥ सोकीनीसबरीति अंतर्यामी
रसिकपिय ॥ १२ ॥ जनकजनकजामातजगजननीजनकात्मजा ॥

शुचिसिंगारकीबातउचितनहींबहुबरनिवौ ॥ १३ ॥ तदनंतरसुचरित्रेसु
नलीजैसज्जनसकल ॥ पूरन परम पवित्र जबजागी जनकात्मजा
॥ १४ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ करतप्रेमकरिस्पृहावालभावनकरिभीती ॥ आ
कुंचत निजअंगसुरत संगम परप्रीती ॥ अहहनाहनहिंनहीं व्याजस
हबचसरसावत ॥ मधुरसमेर कटाक्ष आदिभावनदरसावत ॥ पुनि
निधुबनघनकेलिकरिम्लानभाव जियभजतहै ॥ अरुशंकातंकित
चारुचित्र रमरागरभसभयछजतहै ॥ १५ ॥ ॥ दोहावृत्तं ॥ अधरदश
नसीत्कारकरि कहत जुगलकरजोर ॥ निर्विशंकमनहोय पिय पि
वपिवरसनामोर ॥ १६ ॥ ललितशालि आलापकरि विलसतवाक
बिलास ॥ अविरतनिमिनृपनंदिनी पियहिय करत हुलास ॥ १७ ॥ रं
भाबीरणनादतैं मधुरसरससुरववास ॥ सुरभितसुरद्रुमसुमनसमवर
सियबचनबिलास ॥ १८ ॥ रसिकशिरोमणिसाँवरो श्रीरघुवररमनी-
य ॥ सुनिबैदेहीबचनवरकहतबचनकमनीय ॥ १९ ॥ षटपदवृत्तं ॥ का
ननगयेकुरंगकुहरगिरिकेहरिगथेऊ ॥ दिग्गजगयेदिशानकमल
जलआश्रितभयेऊ ॥ चषकटिकुचबरबदनबिनिर्जितपेषहुप्यारी
पायपराभव परम भये अतिलज्जितभारी ॥ यहरीतिसदांसतपु-
रुष की मानमलानजरूरहै ॥ तबमानततच्छनमरनमन अथवा
जावतदूरहै ॥ २० ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ जल अंदरजपकरत कमलकुल
जापकैं ॥ अच्छमाल अलि अवलिपरमपटुपायकैं ॥ चहत चित्त
चषचोरतुल्यतहौंनहै ॥ परिहाँ धारन कृत इहिं हेत बनजमुरवमौं
नहै ॥ २१ ॥ सोरठावृत्तं ॥ श्रैंरागी श्रैंरागी भूरवनबसितृणाभच्छनकर

त॥चषसमहौंनजरूरमृगनेराीतप करतने॥२२॥ अयिश्रैंराी चष
श्रोर अहि श्रैंराी बैंराी लषत॥ तुलितहोतनहिंतोरइहिं कारण॥
छिपिरहतनित॥२३॥चहतवतुनुसमतौंन अयेचारुचंपकतनी॥
सुबरनसुवरनहौंनदहनदेहकिय दहनमधि॥२४॥दाडिम हीयदरार
दरकि दरकिदरसात दग॥ दंतपक्तिमरिा मार तवनिहारि निमिनं
दिनी॥२५॥षट्पदवृत्तं॥ क्षीरसिंधुअरुपुहविजुगलजिहिं पलुवा॥
कीनैं॥औषधीश अरुबदन तोरतिनमैंरषिदीनैं॥ अनिलदंडकरि
तुला बिधातातिनकौंतोलन॥ यहेभूमिकोभूमिवहे गगनांगनडो॥
लन॥तबतोलबराबर होंनहित तारागन तिनमैंरषत॥ तउरयो ऊ
ईकोउईवह गुरुताइमुषमैंलषत॥२६॥चंद्रायराावृत्तं॥ कहसी
ताकरजोरिनाथ चित चहतहौं॥ चरनभावना धारि गिरामुखकहत॥
हौं॥गुरुताभयेंनस्वादस्वादमधुराईमैं॥हरिहांकरिनिर्णयनिश्चे
षअधिक गुनजाइमैं॥२७॥दोहावृत्तं॥ गिरामनोहरसुनि सिया पू-
राीकामप्रभुतूराी॥ अभिमतआलिंगन कियौकृतमनोर्थ संपूराी
॥२८॥शुचितनुशोभासीयकीहरतरमराा हियतापा॥ अवधछैल॥
आभासियहिं आनंद देत अमाप॥२९॥मनोहरवृत्तं॥ ॥कविरुवा
च॥कैसेवैजलजनीलिअतसीकुसुमजैसे कैसेंवैकुसुमजैसेनीलम
ािधामहै॥नीलम धामकैसे शोभिततमालजैसे कैसेवेतमालजैसे
दुवदलश्यामहै॥दूव दलश्यामकैसेजमुनाप्रवाहजैसे जमुनाप्र-
वाहकैसेजैसेतनुरामहै॥रामसुठिश्यामकैसेनवघनस्यामजैसे
नवघनस्यामकैसे जैसेश्यामरामहै॥३०॥पीतमराि मालकैसी॥

लनिका सुबराीजैसी कैसीलताजैसीरंगकेसर अमंदरी॥ केसर
सुकैसीजैसीसौंनजुहीकैसीजुही जैसी गिरावारिदधिचंदवरबुंद
री॥कैसी ओप अंबुकी सुजैसी जग्यज्वालजोति कैसीज्वालजैसीपी
तपट छविछंदरी॥ कैसी पटज्योतिजैसीसीयछवि कैसी सीयजैसी
विज्जु कैसी बिज्जु जैसी सियसुन्दरी॥३१॥कैसेनील पीत पटपावन
प्रकाशवानजैसीप्रीतमालस्वराामाल छबिधामिनी॥ कैसीवेसु
मालजैसीनीलपीतपंकजकीमंजुल सुगंधप्रभा पूरित सुनामिनी
कैसेनीलपीतकंजजैसीनीलपीतमराीकेसीमराीजैसीगिराक॥
ठराा अभिरामिनी॥ कैसीनदीजैसे घन विज्जु घन बिज्जुकैसे जैसेजु
गकैसेजुगजैसे घनदामिनी॥३२॥चद्रायराा वृत्तं॥ बिरह दीर्घ आ॥
गामिजानि जियजानकी॥ चरराायुषधुनिसुनतभोरभइभानकी
पति बियोगजिनहोउधारिजियकंजरी॥ अरिहां तास पांनि केहे
तप्रपूजनमंजरी॥३३॥ ॥इतिश्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी
श्रीदूलहसिंहजी बिज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामविर॥
चिते श्रीवरविलासेश्रीजानकी विलासोनामसप्तमोल्लासः॥७॥
हनुमन्नाटकेद्वितियोंकः॥ षटपद वृत्तं॥ श्रीरघुनंदन आपसीयसं
जुतसुषसरसत॥ भोक्ताभोगसुरंगसमयकतिपय हियहरसत॥
ताहिंप्रेमकोनेम निरंतरहृदयलषावत॥ निरषि निरषि आनंद पर
मपरपरम पिषावत॥ अहु एतेपैं अविलंब अति वह अवसर आ
वतभयौ॥ जोदशरथ नृपमृगयाकरत मुनीशाप पावतभयो॥१॥
श्रवयनतपस्वीजग्यदत्तमुनि अवराातातहौ॥वहनिजतियासमेत

जरठजात्यंधगातहो॥दशरथनृपकेहातमस्यो तिहिंसुतगजभ्रमतें॥
शापदियोरिषिअंधतुमहुम रिहौयाक्रमतें॥अतिवृद्ध अवस्था
बीचतुम सुतबियोगदुःखपायहो॥वह तरलताप संतापसहिं अ
पहु सुरपुर जायहो॥२॥मलिनकिरण दिन मणीभूरि भूकंपहो
तहै॥उलकादंडप्रचंडपतन अंबर उदोतहै॥धूसरभोदिगभाग
ग्रहगणरविशशिवहुदरसत॥शारमेयरुत अमितफेरुपरचारप्रकर
सत॥बहुरुधिरबिन्दुबरसंतनभ तमतारादरसंतदिन॥उत्पातअमि
त चित्तकार रव प्रलयसरिससरसातछिन॥३॥दोहावृत्तं॥तिनल
खिसबउतपातअति कैकइकरतबिचार॥आइगयो अवसर अवै
लीजैंवरनिरधार॥४॥कविरुवाच॥षटपदवृत्तं॥पहिलैंभो सं
ग्राम अमर असुरन अतिभारी॥सुरसहायताकाज गयेउनृपसं
जुतनारी॥कठी चक्रकीकील सुरततिहिंनरपतिनाहीं॥तबैं अंगु
रिया आपदई केकइतामाहीं॥गहिबिजयलषीतियअंगुलीव्हे प्र
सन्नहैवरदिये॥तेथापरषेनरनाथमहँजेचितचाहतअबलिये॥५
दोहावृत्तं॥इकवरभरतहिनृपतिलक द्वितियरामवनवास॥यहउ
आयाय आनिकैंगईपुहविपतिपास॥६॥कहनलगीकेकयसु
ता सुनहु नाथ मम बात॥जबतें आगमसुतवधूतबतें अतिउत
पात॥७॥षट्पदवृत्तं॥वधू अमंगलरूपभूपइहिंजानहु जीमैं॥तं
त अमितउत्पातअहरनिश अवधपुरीमैं॥यांतेतिहेत सहसीयराम
वसिहैं सुगहनबन॥भरतराज्यअभिषेककीजियैं जो मानतमन॥ते
जियैंथापबरदानदुह जगतिमहाजसलीजियैं॥अति आपहोय

निश्चिंत अवसुषी होयइतरीजियैं॥८॥सुनतबचनकेकईमहिपमूर्छाभ
इभारी॥पुनिकछुहोयसचेत धीयनिजयहनिर्धारी॥मुखनकारजो
कढे घढे मिथ्या महःपातक॥सुत बिछुरनहूयहे घोरममवपुकोघातक
मनमरनश्रेयमान्यौंमहिपनाहिंभलोमिथ्याबचन॥तियतैंतथासु
कहिदियौतबतिहिविरचीबिधबिधरचन॥९॥सीसजटाविलसंत
बसनवलकलतनरामजु॥छत्रचमरढिगभरतविमनमननहिं रा
मजु॥नातचरनजुगनमतभ्रातजुगमन बचकायक॥अहह ता
तहामातभरतवदविकलवायक॥सहिसकौंअवरसंकष्टसब कछु
हुनमुषतैंकहिसकौं॥गहिसकौंसिंहअहिअगनियैंराम विरहनाहिर
हिसकौं॥१०॥चंद्रायणावृत्तं॥कहतरामममोहिपीरनाहिबनवासहै।
कोमलपदसियगमनतथानहित्रासहै॥भरतभ्रातउरअरुचिराज।
पररहतहै॥परिहाँयहअतिदारुणदाहदेहकौंदहतहै॥११॥सुनिसु
मंत्रबचभूपसुसुवनपयानहै॥शापसमयभोप्राप आपजियजानहै॥रा
मरामरघुनंदरामरटजासहै॥परिहाँफेरनलियोनरेशदूसरोस्वासहै॥
१२॥दोहावृत्तं॥अतिआतुरभरतव्हैबूजतहैनिजमाय॥कैकेईकर्कशा
हृदयद्विय उत्तर समजाय॥१३॥षट्पदवृत्तं॥मातताततिनपातभवन।
सुरपतिकेभ्राजत॥किहिंकारणसुतशोक कस्यतब अग्रजछाजत॥क
हाभयेंहिवाहिकियेबनवीचगवन तिहिं॥काननमाधिक्योगयेहुईओ
निपआयसजिहिं॥कहुकाहिभूप आज्ञादई नृपममवाचा वद्धहुव॥
फलतोहिकहानबराज्यपदसुनिकरिहाहागिस्यौसुव॥१४॥इतिश्रीपि
पलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजीविरचितकविरीका

विस

रामांगजगोबिंदरामबिरचिते श्रीवरविलासे दशरथनृपस्वर्गसंप्राप्तिव
र्णनोनामाष्टमोल्लासः॥८॥ षट्पदवृत्तं॥ रघुवरगहिगुरु गिरा राज्य पद
तृण इव तजिया॥ वनप्रतिजाउत्तभयेबसनवपुवलकलसाजिया॥ सुरभि
संगजिमबालबच्छतिमलछमन सोहत॥ धारिधनुषशरतून जुगल॥
सबजनमनमोहत॥ जानकीपेषिशुकसारिकासासुचरनलागिहुकुम
गहि॥ प्रियप्राणनाथश्रीनाथके साथ चली निज चितचहि॥१॥ राम
गवनवन कियैं भरतमूर्छाभइभारी॥ पाय चेतना कछुक गिरामुनिजन॥
धियधारी॥ कीनौं उत्तर्कर्म निषिलनिगमागम गायौ॥ दशरथनृपनिज
जनकपुरंदर पुरी पठायौ॥ पुनिभ्रातशोकपरिपूर्ण हियनंदीग्राम निवा
साकिय॥ शिरजटामुकुटबलकलबसनबसतसदारघुनंदजिय॥२॥
दोहावृत्तं॥ तितैं निवसिपालतप्रजाउर अंदर असइच्छ॥ बनतैं प्रभुपगु
धारिकैं पेहैं प्रीतिप्रतिच्छ॥३॥ चंद्रायणवृत्तं॥ त्रिचतुचरण चलिसी-
य पीयसैं यौंकहै॥ कानन कितनी दूर अवरणसुनिवौचहै॥ देषिदशा
मृदु अंगिनयनजलधार है॥ परिहाँ राम बिलोचनप्रथम अम्बु अवतार
है॥४॥ षट्पदवृत्तं॥ कहत सुनु (राम) सियाकृशोदरि प्रथम कहावत॥ पुनि
कुचकचकेभार निरंतरनम्र लखावत चारुचरणचंक्रमण चैत्यकरिश्र
मसरसावत॥ वेलांदोलनसमय स्वेदबहुबूँदबहावत॥ अतिसरितसो
तनिर्झरनिकर भूमिगर्तगिरिभूरहै॥ मृगसिंहभूतभैरवसहितवन च-
लिह्योकिमदूरहै॥५॥ चंद्रायणवृत्तं॥ पुनिपुहुवीप्रतिपठतरामरम
नीयहै॥ नवनलिनीदलअरुनंवसनकमनीयहै॥ पदपद पर प्रसय-
लत ललितगतिनीयहै॥ अरिहाँ नवदुहिना वनगहनसिधावतसीय

है॥६॥ दोहावृत्तं॥ काश्यपितवयहकन्यका कोमलतनसुकुमार॥ त
जियैं तुमरीकठनई धुवकोमलताधार॥७॥ इमकहि कछु कीनौं गमन॥
त्रिभुवनतिलकततच्छ॥ पथिकबधूवूजनलगीपांथिपाथिसीयप्रतच्छ
॥८॥ चंद्रायणवृत्तं॥ सषिकुवलयदलनीलरावरेकौंनहै॥ यहसुनि॥
स्मितकरितिनैं गहतमुषमौंनहै॥ लषिलच्छनपहिचानिलेततेवामहै
॥ परिहाँ पीतम परमसुजानसकलगुणग्रामहै॥९॥ कमलकोशान
वनीतसुकोमलचरनहै॥ दर्भसहित अतिकठिनकूरयहधरनहै॥
सीसत्रानपदत्रानसुवल्कलकीजियैं॥ हरिहाँ सीयदेतपथवधूसुमुखि
सुनिलीजियैं॥१०॥ दोहावृत्तं॥ इमसिषवतनिजनयनभरिनीरपथिक
जनवाम॥ क्रमक्रमकरिआयतभये चित्रकूट अभिराम॥११॥ ॥इति
श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजी विज्ञापित क
विटीकारामांगजगोविन्दरामबिरचिते श्रीवरविलासे श्रीरामचंद्र
चित्रकूटागमनोनामनवमोल्लासः॥९॥ ॥दोहावृत्तं॥ तित आये
सानुजभरतसहितसैंनरनवास॥ उमगिउमगि अकुलाय उर सहत
नविछुरनत्रास॥१॥ मरनभलौ विछुरनबुरौ सवजानतसंसार॥ वहै
दुष्षइकवारहै यहदुषवारंवार॥२॥ षट्पदवृत्तं॥ जटाजूट शिर सोह
बसनबलकलवपुविलसत॥ प्रणमतभरतपरेषिप्रेंम पुलकावलिउल
सत॥ तारसुरनकरिरुदितसकलकलविकलभयेहैं॥ वनबिहंगमृगदी
नतैंनातिननीरछयेहैं॥ मनुआयवस्यो करुणाकटकचित्रकूटकीनीफि
कर॥ तिहिं अम्बुओघनिकसंतयह नाहि झरतनिर्झरनिकर॥३॥ दोह
वृत्तं॥ देतसुमित्रासिच्छसुत स्वच्छलच्छमनलेष॥ पुनिसेवन अव

सरमित्यैाउरअशेषअवरेख॥४॥मोहिजातजनकात्मजाजनकजन
कजामाता॥अवधसरिसअटवीलषहुजाउजथासुषतात॥५॥शिर
धरिआयसभ्रातकियभरतअवधप्रतिगौंन॥सीयलच्छमनसहित॥
बिभुविहरतगिरिवरतौंन॥६॥चंद्रायणावृत्तं॥बैदेहीबचबदतसुन
हुसमीपयहै॥शिलाअेकहुइप्रथमसुगोतमतीयहै॥विंध्यअद्रि
परअमितउपलपदपरसहै॥परिहौंकरिहौमुनितियवंतकितक॥
पियसरसहै॥७॥षटपदवृत्तं॥नौकारोहणकियोलियोसुषअमित
जानकी॥अरजकरीकरजोरकंतकरुणानिधानकी॥गौतममुनिके॥
शापआपअहल्याउद्धारी॥यहकाहूमुनिपाप्तयोतपुत्रीभइप्यारी
लीजियेसगपाकौंअवसचरनपरसनितदीजिये॥उद्धारहोयतव
लौंविभौममआलंवनकीजियैं॥दोहावृत्तं॥जलयानरुथलयान
मैंजानतनाहिअयान॥अेकरहीरणवासमैंदूजैंशिशुताजान॥९॥
देषिदैन्यतासीयकीरघुबरदीनदयाल॥गोदावरितटविपिनमधिप
टुकीनीपतशाल॥१०॥लक्ष्मणउवाच॥षट्पद०॥जितैंरघुतमकुट
जितैंवहपंचवटीहै॥पंचावटीपरेषपायसुषअेकघटीहै॥तरलपुर
स्फुटतटीभितिसंस्लेषवटीहै॥गोदायत्रनदीजुतरंगितसरलतटीहै
कल्लोललोलचंचत्पुटीदिव्यामोदकुटीरटी॥संसारसिंधुपाकटीस
हशास्वत्सधर्मनरदुष्कटी॥११॥जानक्युवाच॥मनोहरवृत्तं॥कीड
अवतारकल्पवटसेविराजमानप्रकटीकृतविश्ववटपिष्टअंडघ
टहै॥विश्वअंबुजन्मवटभक्तनप्राकटध्वस्तसंकटछमीकेकांतिधं
वृतकपरहै॥लंपटअधरसींयभिन्नशत्रुकुंभीघटषंडनप्राकटवन्दै

रामदुरघटहै॥सीसजटाजूटपटवलकलराजमानकोटिकोटिक-
टैंबैगविपदाविकटहै॥१२॥दोहावृत्तं॥बिगतपरिश्रमहोयसि-
यपियअभिवन्दनकीन॥पेषिकुटीप्रभुदितभईगईतापविधती
न॥१३॥षट्पदवृत्तं॥वीसनयनमदनांधसदनमारीचसिधायौ॥
ह्वैविनीतजुतप्रीतिविदितयहबचनसुनायौ॥तुममंजुलमृगरूप॥
धारिदंडकबनविचरहु॥जितमृगनैंनीजनकसुतासोहततितप्र-
चरहु॥अतिअद्भुतअंगविलोकिमृगसियपियप्रतिजांचनकरहिं
अभिलाषअंगनापूरिवेरामतोरसँगअनुसरहिं॥१४॥हौंयह
अंतरपायसीयगहिजैहौंनिजपुर॥तवअधीनहैकाजकरहुभ
मआनिविनयउर॥जोयहइच्छितमोरसुनहुमारीचनकरिहौ॥
तोइतमैंबिनमौततुरतमेरेकरमरिहौ॥हैरावनतैंमरतव्यइत
रामहातमरतव्यतित॥मरतव्यअवशमारीचलषि श्रीरघुवरकर
होहिंहित॥१५॥दोहावृत्तं॥यहविचारचितचारुचुनिमृगतनुग
हिमारीच॥हरितदूबचुनिचुनिचरतविचरतबनबनबीच॥१६॥
षट्पदवृत्तं॥दशरथनृपकुलदीपपर्णशालामधिसोहत॥सह॥
सौमित्रीसीयमहामुनिजनमनमोहत॥स्वच्छसलिलपटुपानकरत
सुन्दरसरितासर॥ललितकंदफलमूलगहतबीतेबहुवासर॥
अवअेतेपैंआयौउतैंमृगवपुबनिमारीचहै॥पठयौजुनीचदश
कंठकोविचरतकुटीनगीचहै॥१७॥सुवरनसकलशरीरहरितम
णिमयश्रृंगद्वय॥विद्रुममयषुरचाररदच्छदमाणकमणिमय॥
नीलतारकानयनपटुलपेषनअतिचंचल॥सर्वरत्नमयरम्यरूप

सियलख्यो दृगंचला॥ मृगमहा मनोहर मंजुलषि मैथिलि मन प्र
मुदितमइ॥ उत्साभिलाष अतिहोयकैं पियविनती करती भई॥
॥१८॥ निशाचार मारीच सौंग माया कुरंग वह॥ निकट निधन जिहिं
केर सचरत धावत छिन मह॥ गहन गहन मधि फिरत ताहि चह गृहन
जानकी॥ कोटिकाम अभिराम राम प्रति गिरा गान की॥ शरनिशि
तधनुषधारन कियैं मृग पाछैं प्रभु अनुसरे॥ बहुवेर भई जियजानि।
कैं तदनु लच्छमन संचरे॥१९॥ सोरठा वृत्तं॥ सियसंरच्छन हेत ल
च्छन धनुरेषा रची॥ हियहुलसत बिभु हेत तदनंतर तित संचरे॥२०॥
॥ ॥इति श्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्री दूलहसिंहजी।
विज्ञापित कवि टीकाराम आत्मज गोबिन्दराम विरचिते श्रीवर बिलासे
मणिमय मृगमारीचागमनो नाम दशमोल्लासः॥१०॥ ॥श्री हनु
मन्नाटके तृतियोंकः॥३॥ षट्पद वृत्तं॥ आंदोलत शरश्रेक अपर
कर धनुष धुनावत॥ पुहुपलता लषि ललित जटाग्रंथी सरसावत॥
कोटिराम अभिराम राम शुभ उपमा लायक॥ विपिन वीथिका वीषि
स्याम सुन्दर सुखदायक॥ अति अद्भुत गति मृग रूप वह इत उत तित
चितवत फिरत॥ मायाधिराज रघुराज मनि इक छिन नाहि कित थित
थिरत॥१॥ कबहुक धर पद धरत कबहु रसना तृण चाटत॥ कबहु
होत अस्वस्य कबहु गुल्मन उदघाटत॥ कबहुक किसलय सूंघि अ
कबहु तनु चसत तापतौं॥ देषत दिशि दिशि कबहु करत कडूति आप
तैं॥ इम कबहुक धावत वेगतैं कबहुक थिरता गहत है॥ वह माया मृग
मारीच इम अद्भुत गति चित चहत है॥२॥ राम कहत भो लच्छ आप अ

वलोकहु आछैं॥ ग्रीवभंग अभिराम मुहुर मुहु हेरत पाछैं॥ धावनतैं
धियध्यान चपल चित चितवत चमकत॥ परतनु बीच प्रविष्ट पूर्ववपु अ
धारत धमकत॥ मन मानि मोर थरपत तन डर प्राप्त दर्भमुषतैं गिरत॥ क
तबहु तरवियति प्रचार है किंचित पुहवी पैं फिरत॥३॥ चंद्रायणा वृत्तं॥
मृगवच्छस्थल लच्छ कियौ प्रभु आपहै॥ दिव्यबाण संधान ठान ह-
ढ चापहै॥ परम प्रचंड प्रहार करयौ जब इहिं इतैं॥ परिहौं होय
तपस्वी गयौ दशानन तब तितैं॥४॥ चुनि मृगया मारीच गये जुग
भ्रातहै॥ इत आयौ दशकंध तपस्वी गात है॥ मय सजुत जिम मृगी
तथा सियनैंनहैं परिहौं तेल षिहौं यह ठानि कहत मुषवैंनहै॥५॥ यमि
णिभिच्छादेउ अहो इत आयकैं॥ लच्छन लच्छन लांघि देत सि
यजायकैं॥ धूरत ध्रुव धिय धारि धरी धरनीसुता परिहौं परम पतिव्रत
तीय तौं मन तिनि तवुता॥६॥ जब गहि चल्यो जरूर जानि जियजान अ
की॥ तब रघुनंदन पीउ गिरा गुन गानकी॥ अहह राम हा लच्छ
दुख लेजात है॥ परिहौं सिंह भाग प्राणा गहत यहै का बात है॥७॥
॥षटपद वृत्तं॥ ॥अति आतुर सियबोल सपदि सुनि जुगल श्र-
वनतैं॥ जरठ जटायू गिद्ध क्रुद्धि कह वीस श्रवन तैं॥ रेतस्कर प
रदार अरे अति द्रुत कयौं जावत॥ तिष्ठ तिष्ठ मतिमंद तोर।
त्रास कहौं आवत॥ तजसीय परम पति देवता नातर जे होश
मन पुर॥ मम चंड तुंड करि षंड तब गिद्ध पियेगे रुधिर उर॥
८॥ जन्म ब्रह्मकुल बीच कंठ कुंतन करि करिकैं॥ कियौ समर्च।
न शंभु सीस आगैं धरि धरिकैं॥ शक्र हुपैं है शक्ति चंडउ दंडन

दंडन ।। कंदुक इवकै लाश धारिकीनैं कर मंडन ।। व्है परम
पराक्रम पुंजजुत यहै कर्म अनुचित करत ।। हरि धर्म पत्नि
रघुबीरकी तनकन मन लज्जा धरत ।।९।। रावन सुनिवह बच
धीयलागौ निरधारन ।। येह किधौं मैनाक करत मम मार्गनिव
रन ।। शक्र बज्रतैं डरत काहि मम सन मुख आवत ।। नाहि गरुड़
निजनाथ सहित मोहिन बिसरावत ।। अब जानि लियो शठज
रठयह गिद्धजटायूनाम है ।। इत आवत निजवधकाज जड जे
हैं द्रुतजम धाम है ।।१०।। पुत्रिसीय जिन डरहु दुष्ट जेहैं नहिं आ
गैं ।। रैरे निशिचर नीच काहि मम भय करि भागैं ।। गहि रघु कुल
मणि दार किनैं जेहै रे तसकर ।। करिकैं चंचु प्रवेश तोरिहौं ध
मनी धसकर ।। द्रुत दशहु दिशा दिगदेव दश करौं सघ संत्रस्त सव
दश मत्य काटि दश मत्यतबऊ रन नृप दशरत्य अब ।।११।। कर
त अच्छ बिच्छेप दलन धुज चक्र चूर्णकृत ।। मर्दत युग हय हन
त रच्छ पति किय हत आवृत ।। गर्जत तर्जत रुंधि तिरस्कृत करत
ताहि अति ।। मगरोकत छिन मध्य छिन कतांडंत गिद्धपति ।। इम
छिन आकर यत शस्त्र तिहि छिन अब लुंपत बस्त्र घर ।। पुनि प्रच
लत नमतरु ऊर्धगत अति अद्भुत कीनौं समर ।।१२।। गिद्ध रा
जजब जुद्ध निरखि सह क्रुद्ध निशाचर ।। चुनि चपेट शिल सहश
गहन पीस्यो पंछीबर ।। कछुक प्रान अव शिष्ट पच्छि परियो उरवी
पर ।। रामराम श्रीराम होत धुनि गिर गुरवी पर ।। चित चहत चारु
रघुबर दरस तिहि तैं तजत न प्रान है ।। ध्रुव ध्यान धरत विभु चरनजु

गनहि अभिलाया औंन है ।।१३।। जिय किय शोच जटायु कछुन
मोतैं बनि आई ।। मुधा गयो मम जनम प्रथिप प्रीतीननि भाई ।।
नहि रच्छन बैदेहि बीस भुज भुजा न मोडी ।। अकछु मुड्यो न मत्थसा
वतीपा चहु जोडी ।। निरख्यो न नयन भरि राम मुख नाहि कछु की
नौं सुकृत ।। हौं भाग्य रहित का करि सकौं को मम गिनि सकि
हैं कृत ।।१४।। दोहा वृत्तं ।। इम मूर्छित करि गिद्धकौं कियो गौन
लंकेश ।। विविध भाँति बिलपत सिया व्याकुल हृदय विशेस ।
।।१५।। ।। इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपालरावतजी श्री दूल
हसिंहजी बिज्ञापितकविटीकारामां गजगोविंदराम बिरचिते
श्रीवरबिलासे जटायु मूर्छा वर्णनो नाम एकादशोल्लासः ।।११।। ।।
।। ।। षटपद वृत्तं ।। ।। अहह राम हा रमण नाथ हा रघुपति
सुंदर ।। हा जग बीर सुजान प्रचुर पुहुमी पुरंदर ।। हा दशरथ नृप
नंद सच्चिदानंद वृन्द निधि ।। हा प्रिय प्रीतम परम रम्य विपरीत भ
यो विधि ।। हा कृपा सिंधु संकट हरन दीनबन्धु अशरन शरन ।। द
र विदित बिमल बारिज बरन चरन चारु मंगल करन ।।१।। दोहा
वृत्तं ।। कूंदत निमिनृप नंदिनी जगत वंदनी सीय ।। कुररी ह्
वकूकन करत धरत न धीरज धीय ।।२।। अति अविलंबित ग
गन मग लिखैं जात लंकेश ।। लखि वानर गिरि सिखर पर निज
भरन अशेस ।।३।। सैरध्वजी उतारि द्रुत अलंकार निज अंग ।। डा
रि दियेगिरि सिखर पर उचरत गिरा अभंग ।।४।। मारुति प्रति इम उ
च्चरत ये आभूषन लेउ ।। राम पीउ देवर लषन तिनैं तात तुम देउ ।।५

॥ ॥कविरुवाच॥ ॥माया मृग मारीच होतिहिँ मनाक म-
धिमारि॥ पुनरागमन करंत तब कछुक कुचिन्ह निहारि॥६
दाहिन दिशि द्रुम डिथ्य पर करट रटत रवकूर॥ प्रान प्रयान स-
मान कछु है संकष्ट जरूर॥७॥ लषन ध्यान अनुजान जुत लषि भ्र
पलषन करूर॥ करत भ्रमित अनुमान मन हरन हार मुद मूर॥८
॥छिन छिन छिन माधि विभ्रमत धरत धीय नहिं धीर॥ पर्णशाल म-
धि भ्रात जुत पहुँचे श्रीरघुवीर॥९॥ सियन लषत बिलषत हिया
किया कोण त्रय शोध॥ सूर्य कोण तिन तजि दिया किया हृदय अ-
वरोध॥१०॥ शोक भीति धूजत हृदय सदय सदौं रघुवीर॥ कोण च
तुर्थ हु जौन सियता कस धरिहौं धीर॥११॥ ॥ अत्र श्री हनुम-
न्नाटके चतुर्थोंकः॥ ॥ षटपद वृत्तं॥ ॥ महा घोर तर सम
य प्रान उत्क्रमण अधिक है॥ सिय वियोग अधिगम्य असव त
नु तजन न धिक है॥ पर्णशाल सब अंतराल आलोकन कीनौं॥
कित हुन पतिव्रत साहित सीय अवलोकन लीनौं॥ हा हृदय बि-
दीरन होत है इहिं अध्वा असु कढन किन॥ मम प्रानन तैं प्यारी॥
प्रिया तिहिँ बिन नहिँ रहि सकत छिन॥१२॥ दोहा वृत्तं॥ अैते पैं-
अवलोकि उत उतरीय शुचि सीय॥ सुधि रमनी रमनीय मन करि
करि पिय कमनीय॥१३॥ पुनि पुनि पट जोवन लगे रोवन लगे अ
धीर॥ नैन नीर धोवन लगे लगे निचोवन चीर॥१४॥ षटपद वृत्तं॥
द्युत समय उद्योत होत इहिं को परण कीनौं॥ प्रणय केलि मधिकं
ठ पाश इहिं करि करि लीनौं॥ बर व्यंजन सुरतांत समय श्रम हर

सुभ सरसत॥ शैया सरस निशीथ समैं इहिं दृग दरसत॥ इत विधि
बसंत तैं आयत भयो उत्तरीय रमनीय अति॥ कमनीय कलेवर सीय
के बस्या मानि मुहु मुहु गहति॥१५॥ चंद्रायण वृत्तं॥ नहिँ अंदर
पद चिन है न वाहर धारियैं॥ पर्णशाल यह मोर कि अन्य निहारि
यैं॥ मैं यह वह हौं राम कि अथवा और है॥ परिहां सिय बिन नहिँ
सकत जु अबध किशोर है॥१६॥ षटपद वृत्तं॥ केहरि हरि लेग
ये कटी स्मित हिम रुचि लीनौं॥ दृग हरि गये कुरंग कांति चुनि
चंपक चीवौं कैं लरव कोकिल गह्यो गमन जुग भाग कियो है॥ अ
र्ध गह्यौ मातंग अर्ध हरि हंस लियो है॥ कांतार बीच पशु हानि
जथा सब बिभाग करि लेत है॥ कांता तथैव मम मैथिली ल
ई हाय दुख देत है॥१७॥ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधि-
पाल रावत्त जी श्रीदूलह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि
टीका रामागज गोबिन्द राम बिरचिते श्रीवर बिलासे राम बि-
लापारंभो नाम द्वादशोल्लासः॥१२॥ दोहा वृत्तं॥ युक्त यहीं के
कय सुता मुहि यठयो बन बीच॥ यह मम मति किन कनक
मृग ध्वरान नयन नगीच॥१॥ षट पद वृत्तं॥ अत्रालिंगित
ललित कमल कोरक चयवारी॥ पीताधर अति मधुर सु-
धा कर सम मुखवारी॥ कलक्रीडा बिर भाव मंजु मकरन्द
बिमर्दित॥ श्रुचि यह सुमन समूह देष दयिता बिन दर्दित॥
कित गई बचन बद रसमयी गज गमनी मृग लोचनी॥ हासि
ये प्रिये मम वल्लभे संतत सोच बिमोचनी॥२॥ गाहि गाहि

कांतार वनांतर बिपुल बिलोके ॥ बल्ली दर्पक भल्लि सदृशसव
चय अवलोके ॥ स्मार स्मार गइ दूर प्रिया बहु बार बार है ॥ गि
रि वर ऊपर अटत बिलोचन वारि धार है ॥ हासिय प्रिये कित
मैं गई कछु हुन मुखतैं गई ॥ मम सर्बस सुख संग ले गई अ
ति दारुण दुख देगई ॥ ३ ॥ भूरजरं जित सर्ब वपुः बिभु विलस
तकेसैं ॥ दह्य मान बिरहागि धरा लिंगित किय जैसैं ॥ मन्यु
बिदारित चित्त दुचित ह्वै उ चरत बानी ॥ हासीते हा जनक नंदि
नासिय सुखदानी ॥ लखतेरो आनन चंद्रमा मेरे नयन चकोर ॥
है ॥ पुनि मेरो हृदय पपीहरा स्वाति सलिल वपु तोर है ॥ ४ ॥ इहि
बिधि बिलपत बिबिध परर्ण शाला चहुँ ओरन ॥ फिरत धरत धु
व धीर बीर श्री अवध किशोरन ॥ हा जानकि कल कमल न-
यनि सीने सुख देनी ॥ मम मन बारिज बिपिन राज हंसिनि ॥
आह वैनी ॥ बहु बिरह बन्हि अतिदग्ध उर दीन भयो हग ज-
ल भरौं ॥ किहि ठौर जाय कासौं कहौं किहिं दिशि अवलोक
न करौं ॥ ५ ॥ गिरि शिखर स्थित तु च्छ लतावर बायुन बीजित
कौंन गयो गहि सीय लखी का हू कहु तुम इत ॥ चारु चखी बि-
म्बोष्ठि बिपुल जघना रसना रदि ॥ सीता नीमा केन वहू ना-
गेन्द्र काचि कटि ॥ तेतरु बूझत तुम कौंन हो आप कहत ॥
हौं राम हौं ॥ नृप अवध ईश दशरथ तनय शोक अनल धिय
धाम हौं ॥ ६ ॥ है गोदावरि पुन्य वारि पुलिने नैंदयी ॥ कम
ल लैंन मृगनैंनि इतैं आवत न बिसेखी ॥ बर बिनोद क

कुकरन बिमल वारी बिच विलसी ॥ ऐसें बूझत फिरत रई मूरति
हिय थिलसी ॥ इम प्रति पादप प्रति नग पठत प्रत्या पग प्रत्यग रटत ॥
पुनि प्रति बरहिण प्रत्येण प्रति जानकि जाच तति त अटत ॥ ७ ॥
दोहा वृत्तं ॥ पुनि लछमन प्रति प्रभु ह्वै विह्वल वचन बदंत ॥ बिपु
ल विरह उन्माद वस बावर सम विलसंत ॥ ८ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ को-
हो तुम कहु कहा यहे हे नाथ नाथ तर ॥ दास लच्छमन नाम आप
मैं कौन आर्य वर ॥ ॥ आर्य कौन श्रीराम बिजन बन कहा करत इ
त ॥ देखत देवी दिव्य कौन देवी सिय संज्ञित ॥ सियनाम श्रव
न सुनि बिकल ह्वै बिबिध भाँति बिलपन लगे ॥ हा जनक रा-
ज तनये प्रिये बिरह पयो निधि माधि पगे ॥ ९ ॥ दोहा वृत्तं ॥ इ
म वन बन ढूँडत फिरत सह सौमित्री राम ॥ बिलखत बिलपत
चकित चित नहि जित तित बिश्राम ॥ १० ॥ ऐते यैं निरखत भये
गिद्ध जटायू अचेत ॥ अरु रावन रथ भग्न लखि उचरत राम स
चेत ॥ ११ ॥ दशरथ नृपको मित्र वर शत्रु निसूदन हार ॥ ताप्र
ति प्रभु उच्चरन लगे मूर्छित नयन निहार ॥ १२ ॥ पूछत प्रभु प
च्छेन्द्र प्रति करी घोर घन घात ॥ कौंन कुटिल वृत्तांत सब मोहि
सुनावहु तात ॥ १३ ॥ तब बिलोकि बिभु बदन वर बदत जटायू बै
न ॥ बर नत अबऊ दंत सो सुनियैं नीर ज नैंन ॥ १४ ॥ निशा दि
न शशि रवि अर्ध सब रावन निज चित चीन ॥ सामल पच्छ
सितासमी बैदेही हर लीन ॥ १५ ॥ किरीट वृत्तं ॥ देवनको
दिन अर्ध लखो यह लेख कियैं चित चेत चितावत ॥ पित्र न

की निशा अर्ध कहैं जिहितैं अध पच्छ प्रतच्छ यिषावत
॥ आठ कला जुत अर्ध शशी पुनि मध्य दिने रवि अर्थ
लषावत ॥ निर्मल पच्छ भयैं भृगु वासर अस्टमि ष्योसह
री सिय गावत ॥१६॥ दोहा वृत्तं ॥ चैत्र शुक्ल तिथि अस्टमी
भृगु वासर वरतंत ॥ मध्य दिवस माधि मथिली रावन हरी
असंत ॥१७॥ षट्पद वृत्तं ॥ यह सुनि बोले राम भग्न
किम कियो महारथ ॥ बज्रां कूर इव क्रूर तुंड धनु षडे गिरे
पथ ॥ हे सीर ध्वज राज पुत्रि तूं धन्य लषावत ॥ पंचानन
पच्छीन्द्र दशानन कुंजर यावत ॥ अति भयो भूरि संग्र
म इत सोतैं निरख्यो नयन भरि ॥ संचार दशानन मथ्थ
पर भौ जटायु समरत्थ करि ॥१८॥ पुनि जटायु प्रतिक
हत राम भो तात सुनहु मम ॥ तुमरे तेज प्रताप स्वर्ग पद
पावत हो तुम ॥ भलैं सिधावहु स्वस्ति सहित पैं अेक
कहत हौं ॥ काँता हरन वृतांत तात ढिग न कहु चहत
हौं ॥ हे राम नाम जो मोर तौ कछु थोडे से दिनन में ॥
तित रावन स सुत सबंधु जन अैहैं केहि हैं छिनन में ॥
१९॥ ॥ इति पिपलोद पत्र नाधि पाल रावत जी श्री दूलह सिं
ह जी बिज्ञापित कवि टीका रामांगज गोबिंद राम बिरचिते
श्रीवर बिलासे जटायु स्वर्ग संप्राप्ति बरर्ननो नाम त्रयोदशोल्ला
सः ॥१३॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ ॥ तदनंतर श्री राम बिपिन बि
चरत मृग देषे ॥ इन दुष्टन के वपुप्र पंच मारीच विसेषे ॥ प्राण

वल्लभाश्लेष बिपुल विश्लेष कियो है ॥ मृगी चक्र वध ठाँनि च
हत मृग बिरह दियो है ॥ अति मम अमोघ नालीक सब दूर घा
त नित करत है ॥ पैं प्रिया सदृश सोहत नयन इहिं कारन जिय
डरत है ॥१॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ अेतेपैं गिरि अस्त गये रवि
आप है ॥ उदय भयो शशि तस्य सदृश वपु थाप है ॥ देन
लग्यो संताप कमल दल नैंन है ॥ अरिहाँ उचरत है श्री राम
लच्छ प्रति बैंन है ॥२॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ ॥ चलत तरु त
ल सोमित्रि तरणि तैं तनु तापत अस ॥ लच्छ कहत भो ना
थ निशा माधि मिहिर कथा कस ॥ चंद्रोदय है यहै सुनत प्र
भु पुनि बच बोले ॥ बच्छ लच्छ मन ललित कथं वच्छ थ्य
ल तोले ॥ सोमित्रि बदत सुनियैं बिभो लषि कुरंग लच्छ
न लसत ॥ हा हा कुरंग लोचनि सिये चंद्रानति तव बिनत्र
सत ॥३॥ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ ॥ मंदिर गिरि करि मथि
त भयौ नहिँ पातकी ॥ जास्यौ नाहिं तम तुच्छ तोहि घन घात
की ॥ हौं तेरे सत टूक करौं इक छिनक में ॥ परि हाँ जो होतौ
नहिँ बदन बिदेही बनक में ॥४॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ ॥ दाव द
हन तरु पीवर निवारहु निर्झर जल कर ॥ नाहिँ दवानल
नाथ उदय गिरि समुदय हिमकर ॥ वच्छ सुधाकर स्वच्छ
धूम धारन किम कीनौं ॥ नाथ नाहिं यह धूम छौनि छाया
चित चीनौं ॥ हा धरनि सुते सीते प्रिये कांते कुत्र गता असी
तव बिरहानल संदग्ध हिय तदु परि जारत यह प्राणी ॥५

॥ ॥दोहा वृत्तं ॥ ॥ रामचन्द्र करुणा सहित बदत बचन
अति रम्य ॥ प्राण प्रिया पटु प्रेयसी परम प्रेम अधिगम्य ॥ ६॥
चंद्रायणा वृत्तं ॥ ॥ अंक कहत कवि कोपि कहत केउ पं
कहै ॥ कितनें कहत कुरंग बिंब निशंक है ॥ प्रव दत बिदु
ष कितेक छाय यह भूम है ॥ परिहाँ हौं जानत जिय विरह दह
न धुव धूम है ॥७॥ ॥षट्पद वृत्तं ॥ रे रे निर्दय दुर्निवार कंद
र्प मनोभव ॥ पंकेरुह प्रोत्फुल्ल बाण संवृणु संवृणु तव ॥ त
जहु धनुष धरि धीय कहा पुरुषारस मोप्रति ॥ कांता संग बि-
योग जात हुत भुक ज्वाला अति ॥ वपु होय रयो संदग्ध अति।
ताहि प्रहारत है कहा ॥ सब शूर पुरुष पावत नहीं मृतक मारि
के यश महा ॥ ८॥ आपुंखाग्रानि मग्न तोर शर पंच पंच शर ॥
मदग्नाग्नी निर्दग्ध यहै वपु होहु निरन्तर ॥ निपट निरायुध
काम जीति सकि है न अपरजन ॥ सुखी हूजियो सर्व दुखं
इक हौं हिँ रहहु मन ॥ अति उत्तम तैं उतम अखिल यहे दा
त अवलोकियैं ॥ इत अेक आप संकष्ट सहि दुख विलोक
को रोकियैं ॥ ९॥ दोहा वृत्तं ॥ तरु असोक दिक स्नित विम
तिहिं तल गहि विश्राम ॥ चुप रहि कछु किंचित समय व
दत बचन श्रीराम ॥ १०॥ ॥षटपद वृत्तं ॥ ॥ तूँ नव पल्लव र
क्त रक्त मैं प्रिया गुनन कर ॥ आवत अनिश अभंग ति
ती मुख्द गनतो ऊपर ॥ तथा काम धनु मुक्त श्रिली मुख
मो प्रति आवत ॥ कांता पद तल्ल हती हीय उभयन हर स

वत ॥ सम भाव मो रत वस कल है भिन्न भाव इक यह बसत
लख सुहि सशोक बिधि नैंकि यौ तव अशोक अभिधा लस
त ॥ ११॥ सोरठा वृत्तं ॥ हिय परध र्यौ न हार सिय वियोग भ
य मानिजिय ॥ तरु बर सरित पहार अव अनंत अंतर बसत
॥ १२॥ षट्पद वृत्तं ॥ चंद्र चंड कर सदृश पवन मृदु गति पवि
ओपम ॥ मलयज लेप फुलिंग सुमन मम सूचि अग्र सम ॥
रात्रि कल्प शत तुल्य प्राण भासंत भार इव ॥ यहै बैदेही वि
रह समैं संहार काल मिव ॥ हा हंत कितक संकट सहौं कौंन
सुनैं कासौं कहौं ॥ हिय हट कत हट कत फटत है अटत रटत
जकि थकि रहौं ॥ १३॥ वपु भृश कृश तायायमो सविरलाय
गयो है ॥ नैन निरंतर नीर चलैं वारी नरयो है ॥ दीर्घ दीर्घ
निस्सास लियैं सव श्वसन अस्यो है ॥ हरन होत ही तीय
तेज तर तोम घट्यो है ॥ इम चारतत्व भौगवन तनु रयो शू
न्य अवशिष्ट है ॥ यह कहा राम जीवंत जउ कुलिश कठिन
अति क्लिष्ट है ॥ १४॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल राव
तजी श्री दूलह सिंहजी बिज्ञापित रत्नपुरस्थ कवि टीका-
रामां गज गोविंद राम विरचिते श्रीवर बिलासे श्री राम चं
द्र विरह दशा बर्णनो नाम चतुरदशोल्लासः ॥ १४॥ ॥ष
ट पद वृत्तं ॥ लच्छ सहित श्रीराम महा बन विच बिचरत
उत ॥ गोर गवय मातंग शरभ शार्दूल कोल रुत ॥ कोला
हल आहूत भूत वेताल पाल हैं ॥ समुत्ताल कंकाल काल

नीहारकलितकाश्मीर फटिक रिग ॥ सुद्ध पंय कर्पूर कुं
द अवदात अपरिमित ॥ महाभुजंगम परम स्फीत फुत्कार
प्रफुल्लित ॥ फणामणिन माधि यंजरीट क्रीडंत बिलोकिन ॥ हु
व वाम नयन सकरुण सजल इतरस बिस्मय मोद मय ॥ उभ
चिन्ह अशुभ शुभ सूचना भये संग मन प्रीति भय ॥ १० ॥ सं-
स्थित कोल कपोल काकरव वाम भाग हुव ॥ कहत व्यस
न अति दुथित उथित संतत सबजन भुव ॥ वरत नहै दिन रैंन
कहा अब अग्र दिषा वहि ॥ पुनि दच्छिन दिशि यंजरीट शु
भ लच्छ लया वहि ॥ आधिरूढ भुजंगम फणन पर क्रीड
त यह है राज्य प्रद ॥ मम अेक संग दौंनों भये हे यह अति ॥
आचरज पद ॥ ११ ॥ ॥ सोरठा वृत्तं ॥ ॥ भरे नयन जुग
नीर छिन विश्रमि करि चिंतवन ॥ सकरुण श्री रघुवीर
बूजन लगे भुजंग सौं ॥ १२ ॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ ॥ तरु
पल्लव इव लोल जिव्ह बंधुक सुमन सम ॥ तेरे नीरज नय
न भूरि भ्राजंत भुजंगम ॥ हौं बूझत हौं तोहि पवन भुक क
हु करुणा करि ॥ कोमलांगि शर दिंदु मुषी देषी कोउ सु-
न्दरि ॥ इम सुनत बचन रघुवीर वर रचन रम्य सुकरुण
सनैं ॥ बोल्यो बिनति हुइ वैंन सुभ भुजग राज हिय हित घनैं
॥ १३ ॥ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ ॥ गई गई वपु चंप वर्ण-
पीन स्तनी ॥ कुंकुम चर्चित अंगि करुणा रसमैं सना ॥
शीन लांगि आकाश गंग इव भ्राजिता ॥ हरि हौं तारागन

माधि चन्द्ररेय समरा जिता ॥ १४ ॥ कहत राम इहिं व्यसन
अधिक कान्धौर है ॥ कहा होयगो अग्र अभ्युदय मोर है ॥
मरन शरन वर मोहि नाहि यह राज है ॥ परि हौं वह लछमन
कौं होउ सुसुषद समाज है ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिपलोद पत्त
नाधिपाल रावतजी श्री दूलहसिंहजी बिज्ञा पित रत्नपुरस्य ॥
कविटीकारामंगज गोविंदराम विरचिते श्रीवर विलासे
शुभा शुभ शकुनावलो कनो नाम पंचदशोल्लास ॥ १५ ॥ ॥
षटपद वृत्तं ॥ ॥ वामतिरस्कृत कियो कियो दाहिनौं पुरस
कृत ॥ धन्य सुवन्य शरन्य अरन्यानी गाहन भृत ॥ किस कं
धाद्री रौद्र रुद्र अवतार मारुती ॥ दीनी सकल सुनाय ता
हि निज उरसि आरती ॥ लेगयो सीय हरि कोउ किन तुम ॥
ताकों देषी सुनी ॥ कपि इष्ट होय संकष्ट हर वद वानी चेत ॥
सिचुनी ॥ १ ॥ सुनियैं कृपा निधान कापि रामा अंबर मग ॥
हौं थित हो तिहि समय अहोइ तमैं याही नग ॥ पाप रजनि
चर प्रवल्ल कियैं आकर्षणा अति द्रुत ॥ जावत हो जिहिं बेर श्र
वण धुनि आई अद्भुत ॥ हा राम प्राणपति जहि रिपुं मुष उच्चर
त डारत भई ॥ मणि भूषित भूषन भव्य ते अवलोकन करियैं ॥
सई ॥ २ ॥ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥ आंजनेय इम कहि गिरा भूष
न मव्य समग्र ॥ अविलंवित उत आनिकैं रषे राम के अग्र ॥
३ ॥ राम सजल चष सह करुण गद गद गिरा गंभीर ॥ भूष
न निरषे नयन भरि बाढे पुलक शरीर ॥ ४ ॥ हे भूषन वैदेहि

के निश्चय मेरे जान ॥ तुमहु लच्छमन निरयियैं करिलीजें
पहिचान ॥५॥ ॥लक्ष्मण उवाच॥ ॥नाथ न जानत औ
र मैं कुंडल कंकन आदि॥ पहिचानत नूपुरन कौं अनिश
अंघ्रि अभिवादि॥६॥ ॥कविरुवाच॥ ॥षट्पद वृत्त
॥ ॥सिय आभूषण आथिल राम निज हृदय लगाये॥ जु
गल नयन भरि नीर वयन गदगद गिर गाये॥ इतर आभर
न धरत्त हुती नहिं हार हीय पर॥ इत कछु अंतर सहिन सक
त जानकी जीय पर॥ फल पंक्ति भेद की प्राप भौ यह कीनौं
निरधार है॥ अव हारन की गिनती कहा अगिनत परे पहा
रहै॥७॥ मुद्रा मुय मैथिली लये बिन गमन चहत चित॥ प
रम हंस यह जीव तदपि नहि जाय सकत कित॥ वैदेही वहु
विरह वन्हि ज्वाला विदग्ध तनु॥ तिहिं तैं भौ परवण्य पंगु प्र
चरत तन बनत जनु॥ पुनि पवन पुत्र प्रापत किये आभूषन अव
लोकि उन॥ थुवि गये प्राण न पयान किय आंजनेय आलाप
सुन॥८॥ अनुनय सह हनुमान बिनय बर बचन उचारत्त
पुहुमिपाल श्री राम हीय नहिं हूजैं आरत्त॥ त्यज निज दयिता
शोक एक लंकेश लोक सह॥ जीतन कौं समरत्य कछू संशय
नहिं यामह॥ यह गिरि सुग्रीव निवास थल तितमैं प्रभु पगु
धारियैं॥ रघुवंशनाथ नरनाथ उत बानर नाथनि हारियैं॥९
॥ ॥कविरुवाच॥ ॥तदनंतर हनुमान लच्छमन राम स-
हित तिन॥ गवन कियो अविलंब सभय सुग्रीव हुते जित॥

तीनहु कौं कपि नाथ लयत भौ उत मैं कैसैं॥ मूर्तिमंत मनु अ
ग्नि अंग धरि आवत ऐसैं॥ है गार्हपत्य इक अनल अरु द-
च्छिदहन द्वितीय है॥ अभिधान अमल दिल संत उहिं आ
हवनीय तृतीय है॥१०॥ अनिलज आनन अकनि रामकं
ताह्वति वृत्तं॥ वानरेंद्र बरनंत प्रवल वाली कृत कृत्तं॥ विद्यमा
न पति होत यहै अति अकृत कियो है॥ मारन कारन ताहि
राम पन तुरत लियो है॥ श्री रघुवर कियो आधिज्य धनु सुबहु
ल रोयानल प्रवल॥ कांता पहरन की ताप अति हुती अनुभ
वित भांति भल॥११॥ ॥चंद्रायण वृत्तं॥ ॥नमन ससं
भ्रम कियो अवध के इंद्र कौं॥ आलिंगन करि प्रचुर प्रेम सु
क पींद्र कौं॥ द्रुत भावि निकं दर्प केलि स विलास है॥ परिहीं
विस्मृत पुनरभ्यास करत मनु तास है॥१२॥ ॥दोहा वृत्तं॥
कपिपति बूझत मारुती दशरथ नृप सुत चार॥ ताटक अं-
तक कौंन कहु बोले पवन कुंवार॥१३॥ षट्पद वृत्तं॥ ॥
राम भरत अरु लयन शत्रुहन सुवन चार चुन॥ दशरथ
नृप के विदित विश्व कपिराज श्रवन सुन॥ दिनकर कुल संतान
वल्लि वर गुच्छ सुमधुकर॥ राज पुत्र सुवि राजमान तिन मध्य
धीयधर॥ ताटका काल रात्री हुती रामचंद्र प्रत्यूष यह॥ जि
हिं चरित कथा कल कंदली मूल कंद सम स्वाद गह॥१४॥
इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह
जी बिरचिता पितरत्न पुरस्थ कवि टीका रामांगज गोविंद राम

द्विरचिंते श्रीवर विलासे श्री राम सुग्रीवसमागमो ना॰
मषोडशोल्लासः॥१६॥ ॥कविरुवाच॥ ॥षट पद
वृत्तं॥ ॥सुनत प्रतिग्या परम राम मुख वारिज विकसी॥
बाली पठये सप्ततालअवली उन निकसी॥दैत्य सात तरु ता
ल सात अंतर्गत आतिद्रुत॥प्रकृतिकुटिल करि क्रुद्ध जुद्ध॰
कारन आये उत्त॥सौ मित्रि कियेतेसरल जिनशेष एष्ठ थि
त मूलकिय॥निज चरनभारकरि लच्छमन दिव्य अस्त्ररघु
राजलिय॥३॥ ॥सोरठावृत्तं॥ ॥सुनियें कृपानिधानव
दतलषन सार्थंक वच॥इनपैं शरसंधान सावधान व्है॰
कीजियैं॥२॥ कीजैं सात निपात अेक साथइक विशिष॰
करि॥करन प्रहारक घातयामें व्है जो अन्यथा॥३॥जिन॰
शंकियैं सुजान रामकहत सावग्य हुइ॥हरतअसतज्ञन प्रान सज्जनभयं
सज्जन रहत॥४॥ ॥कविरुवाच॥ ॥षट्पद वृत्त॥ ॥
राम लियौ कर वान बानि मुषलगे उचारन॥कियौ होय दृढ
भाव कुशिकनंदन पद धारन॥अरु पुनि जो मैं होउं निरस्कृ
त विप्रगेय विन॥अन्य अंग नामध्य गयौ मम मनन अेक॰
छिन॥तौ सप्त तालकौं भेदि कैं प्रवि शाहु शर पाताल मह॥
इमकहि करि धनुषहिं सज्ज करि कियौ बाणसंधानतह॥५॥
कदली बाल प्रकांड भंग सम सत्वर कीनौं॥अेक बान म॰
धि सप्त तालनरु वेधन चीनौं॥सप्त सप्ति गज सप्त सप्त मुनिस
प्त सरित्पति॥सप्तद्वीप अरु मातृसप्तभयभीत भये अति॥सं

ख्यान सांप्यता ताल सम हनि तिनकौं हमकौं हनैं॥जेसा॰
त सात जितनैं हुते ते सब धबरानैं घनैं॥६॥छूट्यौ बाण क॰
वान ताल ताल तरु सात फोरिकैं॥धस्यो धरा तल ले प्रमा
न तिहिं तुरन दौरिकैं॥भंग भुजंगम भूरि भीत अंबर पुनि॰
आयौ॥पुंष धुनाय धुनाय भाव विधि कौ दरसायौ॥की॰
नौं न पराक्रम प्रवल कछु रख्यौ शेष अव शेष है॥निरशे॰
षवसुंधर दारिवौ यामैं कहा बिशेष है॥७॥ सुनत श्रवनसं
ग्राम राम हत सप्ततालसब॥निरपराधवधकियौ तरुन
अस जियजान्यौं जब॥कोपानल प्रज्वलित हृदय निक॰
स्यौ वह वाली॥गिरिचत्वर बिच चल्यौ निरंतर संगर शा
ली॥फटकारी पुच्छ अति उच्छलत कट कटात किल कि
लकरभ॥उच्छाह छक्यो बहु बच्छ थल अति अधीरधी
रनधरत॥८॥ ॥कविरुवाच॥ ॥ताराभई सहर्ष मो
द मनमैं नहिं मावत॥पुरुषोत्तम श्री राम परम कृपया पु
नि पावत॥चिर बिरही सुग्रीव बच्छथल लूठि हौं तूरन॥
प्रियतम प्रान सुजान काज सिधि है संपूरन॥इतिमन्य
मान गिरि शिषर पर आरोहन कीनौं कलित॥सं॰
ग्राम राम अरु वालि कौ लोयन भरि लषिवे ललित॥९॥
शैल शिषर संचरत मनोरथ बित रत तारा॥पारागत शोका
ब्धि बीर सुग्रीव सुदारा॥प्रभु नारा नाराच प्रवल धारा धिप धारा
॥हारावलि संत्यक्त स्वस्त धम्मिल्लन भारा॥किल किला॰

शालि बाली महा कुटिल कूचाली कूर है ॥ प्रिष संतापी प्र
पापी परम जम पुर जलादि जरूर है ॥१०॥ गिरी गरिम गं-
भीर महा महि मालषि वाली ॥ कहत लच्छ सन राम बच्छ
निरषहु बल शाली ॥ बहल कल कला करत बानराली प्र-
त्ति पाली ॥ शिव शिव तुमुलोत्काल चलित अतिकृत घृणि
माली ॥ लांगुल वह्नि प्रोषत शिखर कवलित कौशिक कुलि
शाकिय ॥ दोर्दंड शैल प्रहरण निपुण किहिं करि कैं यो इव्य-
जिय ॥११॥ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥ राम धीरता धारि धिय ना
रायण नाराच ॥ सज्ज कलित कोदंड करि सुरचन बचन उवा
च ॥१२॥ ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ ॥ पुरा मूर्द्ध अभिसिक्त सगु-
ण बर विप्र है ॥ वेद मंत्र करि कियो कलित तब छिप्र है ॥ तिन
के तेज प्रताप करहु उच्छिन्न है ॥ परि हौं दारुण पर तिय हा
रि मारण वपु भिन्न है ॥ १३ ॥ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥ पौरं दरि पर दा
र कौ हरन परा भव श्राप ॥ ब्रह्म तेज परि पूर्ण पटु लसत रा
म सर आप ॥ १४ ॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ पायो बीर प्रमान प्र
वान रघुपति दर बिलसत ॥ पावक प्रलय समान रोचि विजु
री जिम उलसत ॥ हृदय भेद कृत वालि तबैं पौरं दरि उचरत ॥
सबके शिर पर काल यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता पुरं
दर तास रिपु रावन अनिहत इत रयौ ॥ यह सल्य हृदय साल
त प्रवल हौं सशल्य पर पद गयौ ॥ १५ ॥ ॥ इति श्री पिप
लोद पत्त नाधि पाल प्रवत जी श्री दूलह सिंह जी बिज्ञापि

त कवि टीका रामां गज गोविंद राम बिरचिते श्री बर बिला
से बालि हृदय भेदनो नाम सप्त दशो ल्लासः ॥ १७ ॥ ॥
षट पद वृत्तं ॥ ॥ कविरु वाच ॥ ॥ ह्वै सकरुण सविषा
द राम उच्चरत लछमन प्रति ॥ श्रणु सौमित्र यहै काजकी प्र
तौं अनुचित अति ॥ गिरि गव्हर माधि विहित यौनि निज मानि
महत सुख ॥ अनपराधि अनुभवत ताहि दीनौं महान दुख ॥
किय महावीर वाली हनन तास प्रवल परिताप है ॥ हौं मं
द भाग्य हूहै कहा अब मुहि सिय सुष प्राप है ॥ १ ॥ सिर धुना
य पछताय राम कह पौरं दरि प्रति ॥ तूं ऊरनर न तात बात य
ह जग जाहर अति ॥ मेघनाद शस्त्रौघ प्रसर हरि दुर्यश दीनौं
गौतम मुनि के शाप नियंत्रित भुजबल कीनौं ॥ किय जनक
जा सरावन त्वया कक्षा गर्त कुलीर है ॥ हूजै बिसल्य तब स-
ल्य हर जाग्रत अंगद वीर है ॥ २ ॥ दोहा वृत्तं ॥ मेरी पाय सह
यता अंगद हनि है ताहि ॥ ह्वै विसल्य कीजै गवन रावन र
हि है नाहि ॥ ३ ॥ ॥ बालि रुवाच ॥ ॥ कह वाली सु
ग्रीव जो कारज करिहै तोर ॥ सो हौं का नहिं करि सकत निर प
राध बध मोर ॥ ४ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ ॥
राम नयन भरि नीर बिमल बर बोले बानी ॥ सुनहु पुरं दर नं
द कहत हौं तोहि बषानी ॥ निरपराधि सुख अर्थि तोर वध
भयो मोर कर ॥ हनहु अबैं तूं मोहि शुद्धि हूहै मम सत्वर
मत होहु जनक जा विरह अब अविरत उर इच्छत यही ॥

शालि बाली महा कुटिल कूचाली कूर है ॥ प्रिष संतापी।
पापी परम जम पुर जलादि जरूर है ॥१०॥ गिरी गरिम गं-
भीर महा महि माल षि वाली ॥ कहत लच्छसन राम बच्छ
निरषहु बल शाली ॥ बहल कल कला करत बानराली प्र-
त्ति पाली ॥ शिव शिव तुमुलोत्काल चलित ऋतिकृत घूरिण
माली ॥ लांगुल वल्लि प्रोषत शिखर कवलित कौशिक कुलि
शकिय ॥ दोर्दंड शैल प्रहरण निपुण किहिं करि कैं योद्धव्य
जिय ॥११॥ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥ राम धीरता धारि धिय ना
रायण नाराच ॥ सज्ज कलित कोदंड करि सुरचन बचन उवा
च ॥१२॥ ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ ॥ पुरा मूर्द्ध अभिसिक्त सगु-
ण बर विप्र है ॥ वेद मंत्र करि कियो कलित नब छिप्र है ॥ तिन
के तेज प्रताप करहु उच्छिन्न है ॥ परि हौं दारुण पर तिय हा
रि मारण वपु भिन्न है ॥ १३ ॥ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥ पौरं दरि पर दा
र कौ हरन परा भव श्राप ॥ ब्रह्म तेज परि पूर्ण पटु लसत रा
म सर आप ॥ १४ ॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ पायो बीर प्रमान।
बान रघुपति बर बिलसत ॥ पावक प्रलय समान रोचि विजु
री जिम उलसत ॥ हृदय भेद कृत वालि तबै पौरं दरि उचरत ॥
सबके शिर पर काल यहै वासर निशि प्रचरत ॥ मम पिता पुरं
दर तास रिपु रावन अनिहत इत रयौ ॥ यह सल्य हृदय साल
त प्रवल हौं सशल्य पर पद गयो ॥१५॥ ॥ इति श्री पिप
लोद पत्त नाथि पाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी बिज्ञापि

त कवि टीका रामांगज गोविंद राम बिरचिते श्री बर बिला
से बालि हृदय भेदनो नाम सप्त दशो ल्लासः ॥ १७ ॥ ॥
षट पद वृत्तं ॥ ॥ कविरुवाच ॥ ॥ व्है सकरुण सविषा
द राम उचरत लछमन प्रति ॥ श्रुणु सौमित्र यहै काज की।
नौं अनुचित अति ॥ गिरि गव्हर माधि विहित यौनि निज मानि
महत सुख ॥ अन पराधि अनुभवत ताहि दीनौं महान दुख।
किय महावीर वाली हनन तास प्रवल परिताप है ॥ हौं मं
द भाग्य हूहै कहा अब मुहि सिय सुख प्राप है ॥१॥ सिर धुना
य पछताय राम कह पौरं दरि प्रति ॥ तूं ऊरनर न तात बात य
ह जग जाहर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ प्रसर हरि दुर्यश दीनैं।
गौतम मुनि के शाप नियं त्रित भुजबल कीनौं ॥ किय जनक
जास रावन त्वया कक्षा गर्त कुलीर है ॥ हूजें बिसल्य तब स-
ल्य हर जाग्रत अंगद वीर है ॥ २ ॥ दोहा वृत्तं ॥ मेरी पाय सह
यता अंगद हनि है ताहि ॥ व्है विसल्य कीजे गवन रावन र
हि है नाहि ॥ ३ ॥ ॥ बालि रुवाच ॥ ॥ कह वाली सु
ग्रीव जो कारज करिहै तोर ॥ सो हौं का नहिं करि सकत निर प
राध बध मोर ॥ ४ ॥ कवि रुवाच ॥ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ ॥
राम नयन भरि नीर बिमल बर बोले बानी ॥ सुनहु पुरं दर नं
द कहत हौं तोहि बषानी ॥ निरपराधि सुरव आर्थि तोर वध
भयो मोर कर ॥ हनहु अबैं तूं मोहि शुद्धि ह्वै है मम सत्वर
मत होहु जनक जा विरह अब अविरत उर इच्छत यही।

मुनिदैंन कमल दल नैंनके वाली तब बोल्यौ सही ॥५॥ ॥
दोहावृत्तं ॥ जबलौं हौं हनि हौंन तुहिं तबलौं शमन सका
स ॥ व्हे निवास तज दीजियैं स्वर्गवास अभिलास ॥६॥ इ
मकहिकैं श्रीराम प्रति वाली छंडे प्रान ॥ तिहिं वच कौं सच
करन बिभु रघुबर परम सुजान ॥७॥ कछुक काल सेवित
शमन संजमनी पुर बीच ॥ महरि पुरंदर पुत्र कौं निबसे न-
यन नगीच ॥८॥ पुनि बियाद परि हार करि किय पौरुष
अवलंब ॥ परम सुहृद सुग्रीव कौं दियो राज अवि लंब
॥९॥ ॥षट पद वृत्तं ॥ ॥ आदि कियो अभियेक सुहृ
द सुग्रीव राजपद ॥ यौव राज्य अभिशिक्त वालि सुत कीं
नौं अंगद ॥ पवन तनय ले आदि कपिन सैंना पति कीनैं
बिन प्रांका प्रस्थान ललित लंका प्रति चीनैं ॥ तब वर्षा का
ल बितीन की कपिभट मंत्रिन बिनय किय ॥ सुनि माल्य वा
न गिरि प्रवर पर वर निवास जानंत जिय ॥१०॥ ॥ चंद्रायण
वृत्तं ॥ ॥ नाहिं राम तैं इतर प्रहूर तर कोयहै ॥ तिय हति
सम नाहिं अन्य पराभव होयहे ॥ तदपि न कीनौं सपदि समु
द्रप्रवेशहे ॥ हरि हाँ बंधन सेत करंत आप अवधेशहे ॥११
नाहिं राम समबली सकल संसार है ॥ दार हरन सम अहं
कारन निहार है ॥ तदपि प्रतिच्छा शरद सेतु दृढ बंधिया
परिहाँ तदनंतर तित जाय निशाचर रंधिया ॥१२॥ ॥
दोहा वृत्तं ॥ ॥ माल्य वान गिरि शिखर थित लखन स

हित श्रीराम ॥ सुमरि सीय कमनीय ता बदत बचन गुण
ग्राम ॥१३॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ ॥ इन्दू अंजन लिप्त ग
लित दृष्टी इव हरनी ॥ विद्रुम अरुण मलान स्याम छवि सु
बरन बरनी ॥ सिया स्वल्प सुर लेश को किला कंठ परुष स
म ॥ बरहिन के बर बरह गरह जुत हेरत हियहम ॥ इमब
रनि अंग सा दृश्य कौ जानकि गुन कीर्तन कियो ॥ लखि
तांडव आडंबर तडित कहन लगे पुनि भरिहियो ॥ १४॥
॥ ॥ किरीट वृत्तं ॥ ॥ लोचन चारु समान सरोज
तिनैं यह वारि डुबावत पावत ॥ तोर सुरवच्छ बिछाय
छटा सम छुज्ज छपा कर मेघ छिपावत ॥ तोगति तुल्य
हमेश चलैं गज हंस हमैं दृग दूर दिखावत ॥ यावत ता
वत मात्र बिनोदन वस्तु सबैं लखि देव दुरावत ॥१५॥ ॥
इति श्री पिपलोद पत्त नाधि पाल रावत जी श्री दूल
ह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि टीका रामां ग
ज गोबिन्द राम बिरचिते श्रीवर विलासे वालिबधो ना
माष्टादशो ल्लासः ॥१८॥ ॥ अत्र श्री हनुमन्नाद
के पंचमों कः ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥
श्री रघुबर कह बचन बर बानर भटन सुनाय ॥ शुचि
सैनिक सुग्रीव के सुचित सुनत लगाय ॥१॥ महत व्यस
न प्रापत भयैं थिरन रहत कोउ लोग ॥ लखि निसंक लंका
पुरी को इत आवन जोग ॥२॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ ॥

मुनिदैंन कमल दल नैंनके वाली तव बोल्यो सही ॥५॥ ॥
दोहा वृत्तं ॥ जबलौं हौं हनि हौंन तुहिं तबलौं शमन सका
स ॥ व्है निवास नज दीजियैं स्वर्गवास अभिलास ॥६॥ इ
मकहिकैं श्रीराम प्रति वाली छंडे प्रान ॥ तिहिं वच कौं सच
करन विभु रघुवर परम सुजान ॥७॥ कछुक काल सेवित
शमन संजमनी पुर बीच ॥ प्रहरि पुरंदर पुत्र कौं निवसे न-
यन नगीच ॥८॥ पुनि बियाद परि हार करि किय पौरुय
अवलंब ॥ परम सुहृद सुग्रीव कौं दियो राज अवि लंब
॥९॥ ॥ यट पद वृत्तं ॥ ॥ आदि कियो अभियेक सुहृ
द सुग्रीव राजपद ॥ यौव राज्य अभि शिक्त वालि सुत की
नौं अंगद ॥ पवन तनय ले आदि कपिन सैंना पति कीनैं
बिन शंका प्रस्थान ललित लंका प्रति चीनैं ॥ तब वर्षा का
ल विनीन की कपिभट मंत्रिन विनय किय ॥ सुनि माल्य वा
न गिरि प्रवर पर वर निवास जानंत जिय ॥१०॥ ॥ चंद्रायण
वृत्तं ॥ ॥ नाहिं राम तैं इतर शूर तर कोयहे ॥ तिय हृति
समनहिं अन्य पराभव होयहे ॥ तदपिन कीनौं सपदि समु
द्रप्रवेशहे ॥ हरि हाँ बंधन सेत करंत आप अवधेशहे ॥११
नाहिं राम सम बली सकल संसार हे ॥ दार हरन सम अहं
कार न निहार हे ॥ तदपि प्रतिच्छा शरद सेतु दृढ बंधिया
परिहाँ तदनं तर तित जाय निशाचर रंधिया ॥१२॥ ॥
दोहा वृत्तं ॥ ॥ माल्य वान गिरि शिखर थित लयन स

हित श्रीराम ॥ सुमरि सीय कमनीय ता वदत वचन गुण
ग्राम ॥१३॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ ॥ इन्दु अंजन लिप्त ग
लित दृष्टी इव हरनी ॥ विद्रुम अरुण मलान स्याम कवि सु
बरन बरनी ॥ सिया स्वल्प सुर लेश को किल कंठ परुष स
म ॥ बरहिन के बर बरह गरह जुन हेरत हियहम ॥ इमद
रनि अंग सा दृष्य कौ जानकि गुन कीर्तन कियौ ॥ लखि
तांडव आडंबर तडित कहन लगे पुनि भरि हियौ ॥१४॥
॥ ॥ किरीट वृत्तं ॥ ॥ लोचन चारु समान सरोज
तिनैं यह वारि डुबावत पावत ॥ तोर मुखच्छ विछाय
छटा सम कुञ्ज छपा कर मेघ छिपा वत ॥ तो गति तुल्य
हमेश चलैं गज हंस हमैं दृग दूर दिखावत ॥ यावत ता
वत मात्र विनोदन वस्तु सबैं लखि दैव दुरावत ॥१५॥ ॥
इति श्री पिपलोद पत्त नाधि पाल रावत जी श्री दूल
ह सिंह जी विज्ञापित रत्न पुरस्थ कवि टीका रामां ग
ज गोबिन्द राम विरचिते श्रीवर विलासे वालिवधो ना
माष्टादशो ल्लासः ॥१८॥ ॥ अत्र श्री हनु मन्नाट
के पंचमों कः ॥ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥
श्री रघुवर कह बचन बर बानर भटन सुनाय ॥ शुचि
सै निक सुग्रीव के सुचित सुनत लगाय ॥१॥ महत व्यस
न प्रापत भयैं थिरन रहत कोउ लोग ॥ लखि निसंक लंका
पुरी कोइत आवन जोग ॥२॥ ॥ षट् पद वृत्तं ॥ ॥

हुइ सहर्ष हनुमान भुजन आस्फालन कीनौं ॥ निजप्र
चंड दोर्दंड परम प्रौढत लखि लीनौं ॥ देव पथ्य मम अंग
अष्ट अंगुल मय दरसत ॥ द्वादश अंगुल पुच्छ बाहु अ
तिलघु तरसर सत ॥ अति अमित अगाध अपार है रतना
कर किहिं बिध तरत ॥ यह सुनत राम बिस्मित भये जांबु
वान तब उच्चरत ॥ ३ ॥ ॥ चंद्रायराग वृत्तं ॥ ॥ देव मा
रुती यहै रुद्र अवतार है ॥ करहु रुद्रको तवन धीय निज
धारहै ॥ सुनत यहै बच स्वच्छ राम नुति कीन है ॥ हरि हाँका
रज मोर अशेष आप आधीन है ॥ ४ ॥ मुद्रित मन जिन क
रहु कहा वपु छुद्र है ॥ लसत रुद्र अवतार किलोक समु
द्र है ॥ अघटित घटना घटन पटीयस पेखियैं ॥ हरिहाँ
लंका पंका कहा गिनत मैं लेखियैं ॥ ५ ॥ दोहा वृत्तं ॥ ॥
सुनत बचन श्रीराम के हिय हरखे हनुमान ॥ मनसि मह
मुद मानिकैं बदत प्रबल बलवान ॥ ६ ॥ ॥ मनोहर वृत्तं ॥
कूरम है मूल आलवाल तूल पाथो निधि दर्यों दिश शाखा
सर्ब शोभा की समाज है ॥ पल्लव समान मेघ सुमन नक्षत्र सबै
सूर्य सोम फल दोऊ बिपुल बिराज है ॥ कहैं हनूमान स्वामि ॥
करुना निधान सुनौं यहे व्योम वृच्छ मोर क्रम गत आज है ॥
सुनि कपिराज की अवाज सिय सोध काज आयस उचारी ॥
जोधपुर अधिराज है ॥ ७ ॥ हुकम चढाय सीस बोले पुनि हाथ
जोडि इहिं की षुलासा षूब स्वामि सुनि पाऊँ मैं ॥ लंका इत

लाऊँ जंबूद्वीप लेय जाऊँ उत अथवा अशेष अंबु सागर सु
खाऊँ मैं ॥ किंवा कइलाश मेरु मंदर विंध्याद्रि आदि अद्रिन उ
षारि सेतु बंधन कराऊँ मैं ॥ ऐसो पारि पूर्ण प्रभो कीजियैं हुक
म तूर्ण सीय इत लाऊँ लंका चूर्ण करि आऊँ मैं ॥ ८ ॥ राजन
के राज महाराज अधि राज राम रावरी रजाय सज थेव सुनि ॥
पाय हौं ॥ सोषिहौं समुद्र छुद्र लंका कौं अलंका करौं । लंका
अधिपाल बेग बाँधि इत लाय हौं ॥ पति वृतमान कीर्ण जान ॥
की ले आऊँ नाथ अंघ्रिप उषारि अद्रि ओघन उठाय हौं ॥ सागर
पटाय हौं हटाय वारि निधी वारि दुसन दटाय के अरिष्ट उचटाय
हौं ॥ ९ ॥ कहियैं कृपा निधान होत है बिलंब मोय मारतंड वंश
के बिभूषन अखंड है ॥ संजुत आकार सविहार तोरणादि सह
लंका लाऊँ इतै केतितेई करौं खंड है ॥ जुद्ध काज क्रुद्ध व्है समु
इत सकल सैन्य सब कौं उठाय तित जाय करौं मंड है ॥ कछू हू
असाध्य नाहिं सकल सुसाध्य मम परम प्रचंड चंड मेरे दो
र दंड है ॥ १० ॥ ॥ सोरठा वृत्तं ॥ ॥ सुनि मारु तिबर बोल ॥
श्रीरघुवर प्रमुदित भये ॥ मंजु मुद्रिका षोल पवन सुवन अ
र्पण करी ॥ ११ ॥ लंघन करहु समुद्र सिय विसास दे मुद्रिका
॥ पुनि इत आवहु रुद्र मो जीवत अविलंब अति ॥ १२ ॥ न
व तथा स्तु हनुमंत कहि गहि मंजुल मुद्रिका ॥ किय बंदन अ
गिनंत श्रीरघुबर सुग्रीव सह ॥ १३ ॥ पवन पुत्र बड बीर च
पल चले बहु बेगतैं ॥ पत्ति तरंगिनी तीर चित वत किय ॥

चित चिंतवन ॥ १४ ॥ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपा
ल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापित कवि टीका रामा
नाज गोविंद राम विरचिते श्रीवीर विलासे पवन पुत्र प्रया
णो नाम द्वितीयोल्लास : ॥ १५ ॥ ॥ कवि रुवाच ॥
षट्पद वृत्तं ॥ ॥ दुरित क्रम क्रम मिलित ऊर्मि निर्मर्छि
द ॥ जुव खेचर की देव ककुभ रुंधत गुरु गति मिद ॥ गा
ढ़ा खंडन रूढ घटा घन संघ हूनकारि ॥ नील व्योम सुरस
रित अंबु कण गाहन धाय धारि ॥ अति क्षेपे झंझा वातये
काल घोर घन घात है ॥ अब लखि धैर्य थिय श्वसन सुत॰
सज्ज कियौ सब गात है ॥ १ ॥ ओद्धत कृत लांगूल स्फाल
केली करि व्याकुल ॥ भये गगन चर अखिल पृच्छ फटका
र छटा कुल ॥ स्तंभित अक्षि प्रकाश जलधि जल चरदा
चालित ॥ भये भूरि दिग भाग वीर लंघत जल निधि जित
॥ जंघाल चंड उड्डीन अति खग पति अंगी कृत कियौ
॥ मन मगन गगन मग संचरत हनूमान हरषित हि
यौ ॥ २ ॥ पुच्छ केतु उत्ताल नभसि रघु गति अंगी कृत
॥ अथ द्विधा उत्पतन प्रष्ठ कृशोग्र सत्व व्रत ॥ उरु वेग उ-
च्छलित पयो निधि ललित लहर किय ॥ अरुण अंग
रुचि पूर दूर सिंदूर छटा लिय ॥ अति तेज भाग करिकैं॰
सकल दिक्करि कटि तट अरुण कृत ॥ ते सर्य विड अंबुद
सहस्र अति उत्तम उपमान भृत ॥ ३ ॥ ॥ कविरुवाच ॥

दोहावृत्तं ॥ ॥ उहि अवसर आयौ उतैं हिम गिरि सुत
मैनाक ॥ कछु मोपर विश्राम गहि गमन करहु पुनि ना
क ॥ ४ ॥ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ ॥ प्रेरित पयोधि रत्नना भ-
काल कांच नांग सुवन हिमाद्रि मइनाक नाम धेय है ॥
वचन उचारत भौ आये दूर अध्व आप सुन्दर शिखर मो
र खत्र श्रम हेय है ॥ सुनि गिरि वाच अंग्रि अंगुली ल-
गाय ताहि चले अग्र उग्र गति मारुति अगेय है ॥ भुजरय
पौन पुंज पूरित ककुभ करि आंजनेय अरिन अजेय मग ॥
श्रेय है ॥ ५ ॥ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ ॥ माला शाल तमा
ल ताल गन जाल है ॥ वेला तट मारुती लखत सुवि
शाल है ॥ वल्लभ कल्लोलिनी तूर्ण उल्लं घयन ॥
परिहाँ उच्च वाल धी वल्लि गगन मुल्लो लयन ॥ ६ ॥
षट पद वृत्तं ॥ ॥ अथ दशरथ नृप सूनु अमल आ
यश करि आयौ ॥ दन मक्षिक सम रूप पुरी लंकाल
खि पायौ ॥ पवन पुत्र हनुमान अदतर ताशी शुप अ
गेहे ॥ मात्रा परिमित देह जाहि जान्यो नहिं जग है।
जानकी अग्र उत आयकैं अभि वंदन आगिनत कर
त ॥ कर अंगुलीय रघु नंद की धरणि सुता सन्मुख धर॰
त ॥ ७ ॥ जनक नंदिनी जननि कौंन तूंहीं शाखा मृग
॥ कौंन पठायौ तोंहि राम पठयौ इत तो ढिग ॥ यहे॰
कहा तब हात मुद्रिका तिनके करकी ॥ तोंहि दई यह

नाहिँ निसानी है निजबरकी॥ जब लई जानकी प्रैम
जुत हृदय लगाई सहित हित॥ रोमांच कलेवर संच
रे नयन नीर बरसत अमित॥८॥ ॥दोहा वृत्तं॥
आयिनतैँ अविरल गलत अश्रुन ओघ अमाप॥
सुबरन की जानी नहीँ तब मारुति कह आप॥९॥
॥ ॥नगानि का वृत्तं॥ ॥ सुवर्ण की ॥सुबर्णकी
॥ सुवर्णकी ॥ सुवर्ण की ॥१०॥सोरठा वृत्तं॥ ॥अ
वनि अंगजा आप कछु आशा उर आनि कैँ॥ पौंके
अश्रुकलाप मुद्रिक सौँ बूजन लगी॥११॥ ॥षट पद
वृत्तं॥ ॥ अरी मुद्रिका कहहु कुशल सह श्री रघु नं
दन॥ कहु कुशली है लच्छ स्वच्छ चित्त सर सत चं
दन॥ सुन स्वामिनि जुग भ्रात कुशल पैँ तव चिंता नु
र॥ बिरहन दीजैँ देव यहे अभिलाष रहत उर॥ सिय
तव बियोग जबतैँ छयो मुद्रिक अभिधा भजि गयौ॥
प्रभु कर माधि धारन करत नित नाम धेय कंकरा॰
भयौ॥१२॥ इहिँ मुद्रिक मणि मध्य पीड प्रति विंब वि
लोकत॥ करौँ दरस अस आस उरसि चितदे अव लो
कत॥ निज प्रति विंब निहारि अमित उर अचरज आयौ॥
प्रभु मन मे रो ध्यान धरत सोही वपु पायौ॥ तद्रुप तन क
हू नाल षत पेखि परत मद्रूप है॥ भ्रम भूरि भयद भ्राजं
त मन सुता जनक पुर भूप है॥१३॥ कविरुवाच॥ चंद्राय

णा वृत्तं॥ ॥ पुनि कछु चेतन पाय कहत हनुमान नैँ॥
अति कृश पिय वपु जान परत अनुमान नैँ॥ मुद्रिक कं
कण भई अवर कहियैँ कहा॥ परिहाँ दारुण दशा बियो
ग रची है बिधि महा॥१४॥ ॥तब बोले हनुमान जुगल ॰
कर जोर है॥ पहिलैँ ही छश परम बिरह पुनि तोर है॥ प्र
ति पद तिथि नर पढत तास बिद्या जथा॥ परिहाँ पावत
तनु ताकंत कलेवर है तथा॥१५॥ ॥षट पद वृत्तं॥ ॥
पुनि बैदेही बदन बिरह माधि कछुन सुहावत॥ दिन कर स
म दीधिती सुधाकर दृग दरसावत॥ पंकज लगैँ फुलिंग कु
लिश कर्पूर परस है॥ शंपा सम शशि कला वायु बडवान
ल जस है॥ मनुमल यज दावा नल लगत बहु बियोग
दुख गाइयैँ॥ संदेश मोर गहि राम ढिग आवि लंवित
उत्त जाइयैँ॥१६॥ ॥ हनुमानुवाच॥ चंद्रायणा वृत्तं
॥ ॥कछुन राम शर दूर मात मन मानियैँ॥ हरि यूथप
दुर्गम्य कछुन पहिचानियैँ॥ कुपित स लछमन स्वामि ॰
रच्छ कुल है कहा॥ परिहाँ सानुकूल तव देवि दैव प्रभुदित
महा॥१७॥ ॥ इति श्री पिप लोद पत्त नाधि पाल
रावत जी श्री दूलह सिंह जी बिज्ञापित रत्न पुरस्य कवि
टीका राम गज गो विंन्द राम बिरचिते श्री वर विलासे
मारुति मैथिली संवादो नाम बिंशोल्लासः॥२०॥
कविरुवाच॥ षट पद वृत्तं॥ ॥ अैते पेस प्रपंच पवन॰

सुन पूछन लागे ॥ राजवाटिका कहाँ मात कहु पच्छिम
भागे ॥ धार्‍यो रूप प्रचंड पुच्छ फटकारि गये तित ॥ ली
लावनउत्पादि कियौ मधु फल भच्छनजित ॥ अभिधान
अच्छ रावन सुवन मार्‍यौ परिघा घातहै ॥ तिहि क्रोध अ
रुन लोचन कियैँ मेघनाद दरसातहै ॥ १ ॥ ब्रह्म दत्त ब्रह्मा
स्त्र चलायौ मेघनाद जब ॥ रुद्र रूप मारुती ऊपरैँ वृथा
भयौ सब ॥ इंद्रजीद उर आनि अमित बिधि निंदा कीनी
नवैँ बिधाता पवन पुत्र नुति कृत चित चीनी ॥ चुनि चा
रु चतुर्मुख बिनयतैँ आये बंधन बीच हरि ॥ बानरबि
लोकि रावन तदा बोलत रचना बचन करि ॥ २ ॥ रे-
बानर तू कौँन अरे हौँ तब सुन हंता ॥ खंड खंडन श्री
राम दूत अभिधा हनुमंता ॥ मम दौर्दंड कठोर ताडना
द्रुत गति सोहै ॥ त्रिकुटाचलहै कहा मेरुका तू पुनि कोहै
॥ को दंड जगत दीक्षा गुरू अवध आधिप आधिकायते
॥ लंकेश निशाचरनाथ तू कहा कोटि कीटा यते ॥ ३ ॥ ॥
चंद्रायरगा वृत्त ॥ ॥ कुपित होय लंकेश चलायौ खग्गहै ॥ क
ट्योन कपिको केश सुमन जिम्र लग्गहै ॥ सज्जन मैत्री जथा
नाहिँ उच्छिन है ॥ हरि हाँ तथा श्वसन सुत वपुष भयो नहिँ
भिन्नहै ॥ ४ ॥ शरा वेष्टित करि वहल्ल चल चय तूलहै ॥ ते-
लसुत द्रुत कियो ललित लांगूल है ॥ दनुज करत दे दिव्य
मान दर संतहै ॥ हरिहाँ हेरि हेरि हनुमंत हीय हरसंतहै ५

सिया हिया अकुलाय कहत वर बैंनहै ॥ चित्त चिंतातुर महातन
क नहिं चैंनहै ॥ अरजी अनल चुनंत अनिल सुत कारनैं ॥ हरि-
हां सुहृद सुवन जिय जानि कृपा कच्छ धारनैं ॥ ६ ॥ आज्य होम क
रि कियौ राम तुहिं तुष्टहै ॥ परुष बचन सुनि बिप्र भये नहिं रुष्ट
है ॥ पति भक्ती करि जुक्त मोर जो चित्तहै ॥ हरिहां हूजो शीतल
सद्य मरुतके मित्तहै ॥ ७ ॥ सोरठा छंद ॥ सीतल भयो हुतास सु
नि सिय की पटु प्रार्थना ॥ हनुमत हीय हुलास चारु चंदना लेप
सम ॥ ८ ॥ मनोहर छंद ॥ निपट निसंक लंक गडकौ दहन कियो
बानरके पुच्छ पायो जन्म अगिन आपहै ॥ ज्वाला आसमान लौँ
बिकास मान भासमान दसौं दिशा पूरि रई अंबर अमापहै ॥ आ
सुरी असुर बाल वृद्ध तरुणादि सब व्याकुल बिशेष हाय अधि
ल अलापहै ॥ मनौं राम चाप शर दापके संताप तप्त स्वर्ग भौप-
लापमान रावन प्रतापहै ॥ ९ ॥ चंद्रायरगा वृत्त ॥ पल भच्छ कपल
भच्छि हुतासन प्रबलहै ॥ परम प्राप्त संतृप्ति भयो अति चपलहै ॥
गिर्‍यौ अंबुनिधि बीच जासु प्रति बिंबहै ॥ अरिहां मनौं पिवत अ-
तितृषित तितें अब अंबु है ॥ १० ॥ दशग्रीव उहिं बार करत सुबि
चारहै ॥ हनूमान बर बिदित रुद्र अवतारहै ॥ हौं भ्राजत भव भक्त
नगर मम किम दस्यौ ॥ परिहां इहिं कौ कारन यही चारु चित मैं च
स्यौ ॥ ११ ॥ दश शिर करि दश रूप भये संतुष्ट है ॥ ऐकादश अब
शंभ भयो यह रुष्ट है ॥ पंक्तिभेद कल्याण कोन कौं देतहै ॥ हरि
हां नगर दाह हनुमान कियौ इहिं हेतहै ॥ १२ ॥ षटपद छंद ॥ बड

बानलकरि सिंधु बिंब दिन मरिग करि अंबर ॥ चपला चयकरि
लसतकहा अति मेघाडंबर ॥ भालनेत्र भ्राजंत तथा नहिं शशि
भुतक रहे ॥ प्रलयानलकरिकाल इंद्र धनु धाराधर है ॥ इमध्रुव
मंडल करि मेरु गिरि तस शोभा नहि लहत है ॥ देदिप्यमानक
पिपुच्छ करि अनुपम उपमा गहत है ॥ १३ ॥ मंदमंद गिर कहत नि
शाचर नगर निवासी ॥ मरुत पुत्र इकयहै पुच्छ धुज गगन बिला
सी ॥ रच्छा मरिग कपिकटक अहह इत पीछौ अहै ॥ बीनि बीनि
केसकल दुसह दारुग दुयदे है ॥ इहिं अेक कियौ उतपात अस
अगनित वानर आय हैं ॥ अति हाय हाय घबराय घट कहा कहा
दुखपाय हैं ॥ १४ ॥ नभमंडल थित होय कहत कपिबर दशमुख
सौं ॥ हैं इकतूं कोटीश तदपि तुहिं जीतौं सुयसौं ॥ जनक सुता जा
नकी लैं जावौं तित अतिद्रुत ॥ सबप्रकार समरन्थ स्वामि मुहि
दियन हुकम उत ॥ सुग्रीव अग्र रघुबीर बर भुज उठाय अेसैं क
ही ॥ छिन्न मध्य छपाकर निकर जुत रावन हौं हनिहौं सही ॥ १५
दोहा छंद ॥ इमकहि लंका भस्म करि बनिका शोक विहाय ॥ अ
भिग्यान याचन करत श्री जानकि ढिग जाय ॥ १६ ॥ इति श्री पिप
लोदपत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापित
कदिसीका रामांगज गोबिंद राम बिरचिते श्री वर विलासे लं
का पुर दहनो नामैक बिंशो ल्लास: ॥ २१ ॥ कविरुवाच ॥ चंद्रा
यरगा छंद ॥ काल व्याल बर बधू सदृश बिलसंत है ॥ धूम शि
षा सम शत्रु शिवा सर संत है ॥ शिरोरत्न सिय लेय दियौ हनु

मान है ॥ परि हां अभिग्यान यह अेक सु प्रथम पिछान है ॥ १ ॥
चित्रकूट गिरि काक कलेवर धारिकैं ॥ शक्र सुवन मम गयौ
सु हृदय बिदारिकैं ॥ ईषिकास्त्र करि कियौ तस्य चय कान है
॥ परि हां श्री रघुबर कौं देउ द्वितिय अभिग्यान है ॥ २ ॥ मन
शिला मम तिलक सुललित कपोल मैं ॥ कियो पारिग तल
मृष्ट करहु जिय तोल मैं ॥ यह तीसर अभिग्यान पीउ प्रति भा
षिहौं ॥ अरि हां जीवन अवधी मास मात्र की राषिहौं ॥ ३ ॥ क
विरुवाच ॥ षट्पद छंद ॥ जल जुक्त गहि रत्न प्रमुष अभिग्या
न अनूपम ॥ अभिबंदन किय जनक नंदिनी पद वारिज सम ॥
आय उदधि तट आप अटन अंबर मग कीनौं ॥ आडंबर भुजम
बल पराक्रम अद्भुत चीनौं ॥ हनुमंत महामति मंत अति साधि
स्वामि कारज सकल ॥ अति सत्वर उत आवत भये जित रघुबर
बिलंत बिकल ॥ ४ ॥ चंद्रायरगा छंद ॥ मारुत चुंबित चारु केस
गलसत है ॥ प्रमुदित तारा धीश अग्र सरहसत है ॥ बिरहित राम
लोक सु आतुर वंत है ॥ हरि हां आयो यहै वसंत किधौं हनुमंत है
॥ ५ ॥ दोहा छंद ॥ सीतापति संभ्रम सहित आलिंगत अवलो
कि ॥ बिनवत जुग कर जोरिकैं बारंबार बिलोकि ॥ ६ ॥ हनुमा
नुवाच ॥ षटपद छंद ॥ पियो नाहिं अंबुधी नाहिं लंका चुरनीता ॥
रावन शिर लायो न नापि सीता आनीता ॥ आश्ले षा पर गा पारि
तोष कारग किहिं पाऊं ॥ लषि प्रभु प्रभुता परम अनुग निज नीय
लजाऊं ॥ विभु वार्त्ता हारक दूत मैं जुग संदेस इत उत कहौं ॥ किहिं

लायक हैंकरुणानिधे आलिंगनकैसैंचहौ ॥ ७ ॥ कविरुवा
च ॥ दोहाबृत्तं ॥ रामकहत बिकलपसहित औरेकुटिल बिधा ।
त ॥ कहाकहाकरिहै अहो सोजानीनहिंजात ॥ ८ ॥ हनुमानु
बाच ॥ षट्पदवृत्तं ॥ कितैं अयोध्यापुरी अवर पुनि रामभद्र ।
कित ॥ तेऊ दशरथबचनपाय आये दंडकइत ॥ कौंनदुष्टमारी
च कनकमयमृग अति अद्भुत ॥ कुतसीता अपहार कितैं मैत्री
कपिपतिजुत ॥ मुहि कितसीताकीसोधकौं पठयौ श्रीरघुबर ।
तितैं ॥ अतिक्रूरकर्मसुबिधातयह अघटित अघटित कृतइ
तैं ॥ ९ ॥ कविरुबाच ॥ दोहावृत्तं ॥ रामरत बिदरत हृदय प्रान
चहतपरलोक ॥ तूरन आवेदन करहु जिमजानकि अवलोक
॥ १० ॥ हनूमानसत्वरवदत जगदानंदकराम ॥ तोर प्रानगति
द्वारकी अर्गल कर अभिराम ॥ ११ ॥ इमकहि अर्प्यौ शिररत
न तिलकमृष्टचय चूर्णा ॥ चित्रकूट गिरिशिखर पर सोबर ।
न्यौं संपूर्णा ॥ १२ ॥ रामपाय अभिग्यान त्रय साधुसाधु कहहैं बै
न ॥ प्रिया कुशल पूछन लगे जलभरि नीरजनैंन ॥ १३ ॥ हनू
मानुबाच ॥ षट्पदवृत्तं ॥ कृशाता बरनन करौं शशिकला प्र ।
तिपदथूला ॥ पठियैं पुनि पांडुता मृणाली मेचक तूला ॥ अ
श्रु ओघ उद्धरौं अंबुनिधि अलप लगत है ॥ लखत सीय संता
पहु तासन शीतपगत है ॥ लावन्य शेष वपु लगत वह हियरा
वर स्मृतिमात्र है ॥ हनुमंत कहत सुनियैं प्रभो केवलकरुणा ।
पात्र है ॥ १४ ॥ कविरुबाच ॥ दोहावृत्तं ॥ प्रभु पूछत हनुमंतपु ।

निलंकापुरकेबीच ॥ कहाकथा कियकर्णागत कहहु उच्च अरु
नीच ॥ १५ ॥ हनुमानुबाच ॥ षट्पदवृत्तं ॥ नाहिं कथा सिंगार
कुतूहल कथा नाहिं कित ॥ नहिं सांगीतक कथा कथा बिद्या
न जितैं तित ॥ नाहिं करिन की कथा तुरंगम कथा तथा नहिं ॥
नाहिं धनुषकी कथा बिशिष आदिकन कथा कहिं ॥ सुनना
थ निशाचर नगरमधि सुपनहु मधि नहिं अन्यथा ॥ भयभी
त रावरे भूरिमन प्रबल पलायन की कथा १६ ॥ श्रीरामउबाच
॥ दोहावृत्तं ॥ त्रिदशन करि दुर्द्धर्ष अति लंकापुरी महान ॥ बि
घमान दशकंठके किम जारी हनुमान ॥ १७ ॥ हनुमानुबाच ॥
सीताकेबिश्वासकरि कियौ लंकपुरदाह ॥ पहिलेही वह दग्ध
हीकोपानल नरनाह ॥ १८ ॥ इकशाखातैं कूदिकैं शाखांतरपै
जाय ॥ शाखामृगकौ जोर यह रंचन अधिक लखाय ॥ १९ ॥
सागरकौ उल्लंघिबौ तथा लंकपुरदाह ॥ रावरपूर्णप्रभावभ
ल निरखि लेउ नरनाह ॥ २० ॥ कविरुवाच ॥ लंकामधि शंका
सहित शरमा प्रति सिय बैंन ॥ कीटभ्रमरके न्याय करि पियब
पु मेर बनैंन ॥ २१ ॥ शरमोवाच ॥ तूँ गहिहै जो पीयबपु पिय ब
निहै तनु तोर ॥ होहिं जुगल बिपरीतरति यामधिक हौ निहोर ॥
इतिश्री पिप्लोदपत्तनाधिपाल रावतजी श्रीदूलहसिंहजी ।
विज्ञापितकविटीकाराम आंगज गोबिंदराम बिरचित श्रीवरवि
लासे हनुमद्विजयो नाम द्वाबिंशो ह्लासः ॥ २२ ॥ हनुमन्नाट
केषष्टोंकः ॥ कविरुबाच ॥ षटपदवृत्तं ॥ पवनपुत्र [illegible]

कहीकपिपतितें अैसैं॥ राज्यगर्भ करि बिसार गयो प्रभुकारज:
कैंसें॥ बालीदशा बिसारि दई सब भूल्यो निज दुख॥ पूरनराम
प्रभाव अनुभवत इत सारे सुख॥ सुग्रीव सुनत मारुति बचन॥
सकल सैंन सह संचरत॥ परिहारि प्रारा प्रिय प्रेयसी समर बीर
ता धिय धरत॥१॥ बिजय दशमी आसोज बिशद दल श्रीरघुनं
दन॥ कियो प्रबल प्रस्थान निखिल निशिचरन निकंदन॥ ब
ल अष्टादश महा पद्म संख्या कस बल हैं॥ यूथनाथ ये कहे अ
पर कपि संख्य प्रबल हैं॥ बहु व्याप्त भयो भूतल सकल दिशा बि
दिशा आकाश हैं॥ कपि कटक बिकट कट कट्टत रद किल कि
ल शब्द प्रकाश हैं॥२॥ हनुमान कह सुनहु निखिल नरनाथ-
मुकुट मणि॥ आवत यह चहुंओर अमित कपि कटक अनी
कनि॥ जिनके भारा क्रांत भूमि मज्जत तिहिं भर करि॥ दशन
टंक करि लिखत शेष अहि कमठ पीठ परि॥ उत्पतत पतत-
जौं जौं प्लवंग त्यौं त्यौं नमत रु उन्नमत॥ फणिराज अपारा प्र
शस्ति लिखि फैंन पुंज अविरत वमत॥३॥ रुंधित संधी संधि-
स्वास ऊर्मिन करि अविरत॥ हारावलि गलछिन्न रत्न अद्याप्र:
लु अमित धृत॥ कीनौं फणा भंजि का भंग क्रम परम परिश्रम॥
श्रवणाकाशनि रंत शाल शिरस्तब्ध भुजंगम॥ धुव धारत धर
नी धीर धरि भुग्न भयो भासंत हैं॥ बानर सुबीर बिक्रमन भर
[illegible] तापत्रासंत हैं॥४॥ रटत राम भो मरुत सूनु सुनि लीजैं:
सा[illegible]र॥ क्लेश करन कौं कूर्म ककुभ कुल थगित निखिल कर॥

धराधरन धूजंत धूलि भर सिंधु कर्दमित॥ रज करि रुंधत गगन
कटक कपि केर अपरिमित॥ नासीर पुर प्रचुर वल वागाडंब:
र बहु लसत॥ पैं जानत हौं यह मोर सब बिजय तोर भुज बल बस
त॥५॥ कविरुवाच॥ दोहा वृत्तं॥ अति अद्भुत कपिकटक लखि
भिल्लभामिनी भूर॥ बदत बचन परिहास जुत निरखत सैंना नूर॥
६॥ षट्पद वृत्तं॥ नाहिं शस्त्र कित लखत न कछु अस्त्रन अवलो
कत॥ नाहिं रथन की कथा वाह वारण नविलोकत॥ नाहिं छ
त्र भन नहिं सुतर शिविर नहिं नृप बहु जटाधर॥ बित्त नाहिं बरवस
न नाहिं नृप रचन छटाधर॥ भाषत जरठ भिल्लीन सौं हम बैठीइ
त प्रात हैं॥ सुनि कहत सकल समुझाय कैं तिन की ते सब मात:
हैं॥७॥ लंका गढ जेतव्य चरण तरणीय जलधि जल॥ प्रब
ल शत्रु पौलस्त्य सहायक इत मरकट बल॥ जदपि राम यह अ
के सकल रिपु प्रति बल दलिहैं॥ निशिचर निकर निशेष परा
भव पावत पलि हैं॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्व मधि महत जन
न की मानियें॥ आडंबर हैं उपकरन कौ यह अवश्य उर आनि
यें॥८॥ कविरुवाच॥ अत्रांतर वृत्तांत तत्र लंका लीजैं सुनि॥
मंत्रशाल उपविष्ट मंत्रि प्रोच्छाहित चित चुनि॥ वदत बिभीषन
बचन सहित उत्कंठ भटन प्रति॥ स्वर्ण पुंख शित विशिख वज्र:
सम मनौं वायु गति॥ जब लौं न गहैं शिर सवन के तब लौं हैं कत
व्यय हृ॥ द्रुत दशरथ नंदन दीजियें निमि नृप नंदिनि मोद भ-
ह॥९॥ मनोहर वृत्तं॥ त्रिवरग धर्म अर्थ काम ये कहावत हैं मो

यकौंमिलायचतुर्वर्गपहिचानियैं॥धारियैंधरमप्रातहीतैंमध्य
द्यौसजौंलौंउत्तरअहनिअर्थसग्रहसुंठानियैं॥सायंकालसमैं
कामसेवनजथोच्छकीजैंगावतगोविंदश्रुतिवचनप्रमानियैं॥
मोषहैमहानजियजौंनहूजहांनवीचआठौंजामसौंअवश्य
मेवउरआनियैं॥१०॥सोरठा॥अर्पहुसीतारामकहतविभी
षनभ्राततैं॥नयधारहुधियधामअनयकियैंविनसतसकल
॥११॥षट्पदवृत्तं॥पुनिरावनप्रतिकहतयहैनरवानरजाती
॥इनतैंरहियैडरतवडेयेसबउत्पाती॥हयिहयमहिपति।
मनुजवसैकारागृहअंदर॥निवसेजाकीकक्षवहैवालीहोवं
दर॥पौलस्त्यकरतहौंप्रार्थनारघुवरसीयसमर्पियैं॥बंधना
गारथितविवुधगनतिनविसर्जिमंत्रपियैं॥१२॥चंद्रायणवृ
त्तं॥किलनाशककुलकीर्तिकोपतजिदीजियैं॥वहुवर्धनयः
शावंशधर्मधियधीजियैं॥क्लेशमन्नसववंचैंकाजसोकीजियैं॥
हरिहौदाशरथीश्रीराममैथिलीदीजियैं॥इतिश्रीपिपलोदप
त्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामांगजगोबिंदरामविरचितेश्रीवरविलासेविभीषणसंभा
षणोनामत्रयोविंशोल्लासः॥२३॥रावनउवाच॥चंद्रयणा
वृत्तं॥कहसकोपजानकीजीयजानंतहौं॥मधुसूदनरघुनंद
नसिमानंतहौं॥वधजानतदशवदनतदपिथिरथप्पिहौं॥ह
रिहौंमेरेजीवतरामसीयनसमप्पिहौं॥१॥दोहावृत्तं॥रावन।
ऐसेवचनकहिकृतवामांघ्रिप्रहार॥तबैंविभीषनगमनकि।

यलियेसचिवसँगचार॥२॥महातंकलंकानगरधूमकेतुनि
जवंश॥छांडिविभीषनतूर्णतिहिंचल्यौहुलसीहियहंस॥
३॥विविधविराजितनितहुतेश्रीरघुनंदनराम॥तितआनितू
रनआयकैंचितपायोविश्राम॥४॥षट्पदवृत्तं॥लषतवि
भीषनभावपरसपरवानरउचरत॥करिहैलंकाधीशप्रणति
पदपंकजप्रचरत॥जिमिकीनौंसुग्रीवसकलमर्कटभटराजा
॥तैसैंयाहिअधीशअरपिहैंअसुरसमाजा॥इहिंसाथीतुम
हमसकलहैयामैंकछुसंशयनहीं॥अतिउरउदारदातारतरः
श्रीरघुनंदनहैंसही॥५॥दोहावृत्तं॥जोविभूतिदशग्रीवकौं।
शिरछेदेशिवदीन॥रामविभीषणकोदईदरशहोतलघुची
न॥६॥प्रनमिचरनवारिजवरनपुनिवरआयसपाय॥निकट
विभीषनथितभयेछविलषिउरनअघाय॥७॥षट्पदवृत्तं॥
अथसौमित्रीमित्रपुत्रदशरथनरनायक॥उत्तरतटअंभोधि।
भयेथितजनसुषदायक॥गर्भदर्भआकीर्णअमलउपवेशन
उपर॥वैठेरघुवररामअपरमवभ्राजतभूपर॥आयौनअग्न
जवअंबुनिधितवअनिकोपारुनवरन॥आग्नेयअस्त्रआद।
तउनसिंधुसलिलशोषनकरन॥८॥कविरुवाच॥चंद्राय।
णावृत्तं॥रामचंद्रदशवदननाशउद्यमकियौ॥मांसाहारी
जीवमहामनमुदलियौ॥मृगकपिवनअरुवैश्यतपोधन।
आदिकी॥अरिहौंमहामित्रतामानिलइजुअनादिकी॥९॥
षट्पदवृत्तं॥होतौनहिमारीचहिरनवंचनकोकरतौ॥हनुम

त कपि बिन कौंन कहौ मन संशय हरतौ ॥ सघन महाबन बिना ।
सीय हर रावन कैसें ॥ बिन तपसी के शाप सबै वानक किम खे
सैं ॥ ये सुहृद वर्य हमरे सबैं परम रूपा इन शाप है ॥ अब करिहैं
खदन अघाय कैं आमिष असुर अमाप है ॥ १० ॥ कविरुवाच
॥ सोरठा वृत्तं ॥ अतिभय संजुत सिंधु सुर वपु धरि आयौ उतैं ॥
रामदीन जन बंधु तवन करत कर जोरि जुग ॥ ११ ॥ समुद्र उवाच
षटपद वृत्तं ॥ पूर्वपितामह सगर आप निश्चय अनु मान्यौं ॥ हू
है हमरे गोत्र नृपति दशरथ जग जान्यौं ॥ हय मष करिहैं वहै
आज्य आहुति बहु परिहैं ॥ व्याकुल ह्वै है कमठ शेष किमध
रनी धरिहैं ॥ तिन ताप शमन सागर सकल सुरसरि संजुत अग
ट हुत ॥ थिर थपैं तिनैं उथपत अवैं अनुचित उचित न धीयध
त ॥ १२ ॥ श्रीराम उवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ चापल्या उ सौमित्रि मम
सोखौं सागर नीर ॥ चरननतें चलि जायगे बिन श्रम वानर वीर ॥
१३ ॥ कविरुवाच ॥ तबैं बिनय किय तोयनिधि जो व्है बंधन सेतु
जुग जुग लौं जाहर रहहि जग मधि कीरति केतु ॥ १४ ॥ सुनि वा
रिधि के वचन वर हुकम दियौ श्रीराम ॥ करत सेतु रचना रुचि
र बानर नल अभिराम ॥ १५ ॥ कविरुवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ ति
रत दीयि प्रस्तरन मरुतसुत बचन उचारत ॥ वड अचरज की वा
त प्रभौ प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन डूवत आप अवर संगीन डुबा
वत ॥ इहां तिरत सब तेपि अपर सह चरन तिरावत ॥ यह म्या
वन कौ गुन है न ही वारिधि वानर कौ तथा ॥ रावर प्रताप महि

माल सत इतरन की इत का कथा ॥ १६ ॥ चद्रायणा वृत्तं ॥ प्रवग
पुरोगम सिंधु सलिल भय देषिया ॥ तिन पाछे कपि कटक पंकम
यपेषिया ॥ अन हू के पश्चात भागवान रहे ॥ हरि हौं जलधि इतो
इहिं ठौर बचन ऐसैं कहे ॥ १७ ॥ इतिश्री पिपलोद पत्तनाधिपाल
रावतजी श्री दूलहसिंहजी विज्ञापित कवि टीकाराम गंगाजगो
विंदराम विरचिते श्रीवर विलासे सेतुबंधनन्नाम चतुर्विंशो
ल्लासः ॥ हनुमन्नाटके सप्तमोंकः ॥ ७ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं
॥ गिरि सुवेल तट कपि कटक जुत उतरे रघुवीर ॥ अर अनुकंपा
आनि कैं उचरत गिर गंभीर ॥ १ ॥ श्रीराम उवाच ॥ महावीर अंग
द वली तुम रावन ढिग जाउ ॥ प्रथम साम कर्तव्य है सो करि द्रुत दू
त आउ ॥ २ ॥ षटपद वृत्तं ॥ उभय बंधु असमच्छ होत तेनैं हरि
सीता ॥ आधीपत्य अहंकार मत्त अथवा आनीता ॥ ताहि दी
जियैं तुरत न तर लछमन मार्गन गन ॥ करहिं असुर उच्छिन्न उ
च्छल च्छोनित छिति घन ॥ सह पुत्र पौत्र परिजन सहित अंतक
पुर प्रति जाय हौ ॥ जउ वीस श्रवन चय वीस तउ वधिर रू अंधक
हाय हौ ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु जुवराज पित्र वध वैर
विसर्जित ॥ चल्यौ चपल गति लंक उर सिरिपु शंक विवर्जित ॥
गगनांगन उत्पतन करत किलकिल रव करि करि प्रवल पुच्छ
फटकार उच्च धाराधर धरि धरि ॥ उत्पात केतु उद्भट असुर सिं
हासन आसीन वहि ॥ उपमान अमित अंगद लसत निर्जर पति
सुत सुवन सहि ॥ ४ ॥ कविरुवाच ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ मालुम

करिप्रहस्तरामकौदूतहैं॥आवनचाहतइतैंकोपिकपिपूतहै
आयसअसुराधीशदईअंदरगयौ॥हरिहाअवलोकन।
आकाशवचनउचरतभयौ॥५॥अंगदउवाच॥षटपदवृत्तं॥
रेकौंनपकुलकहौकौंननरावनअभिधाना॥रत्ननरवीन्द्रूवंशहू
रेकरिनष्टनिदाना॥त्रिजगदहनत्रयनयनत्रिशिषशूलहुतैं।
अतुलित॥प्रलयानलप्रभुरामअसुरंहूहैपतंगतित॥चितचाह
तजोतुमरीभलोउत्तमवातबतातअब॥सीतासमर्पिसंतर्पियें
घटिजैहैंघनघातसब॥६॥कविरुवाच॥दोहावृत्तं॥साभ्य।
सूयरावनरटतअंगदउत्तरदेत॥भयउक्तीप्रत्युक्तिजुतउत्तम
उपमालेत॥७॥अन्योन्यभाषरा॥षटपदवृत्तं॥रेकपितूंहैव
हीकौंनंजोपहिलैंआयौ॥जाकीजारीपुच्छतनयममजाहिवं
धायौ॥तानैंतोतितकहीनिखिललंकापुरजारयौ॥मारयौतव
सुतअच्छमुधाकपिवचनउचारयौ॥यहझूठवातकैसत्यहै
कौपल्लाजभयजुतभयौ॥अंगदवरिष्टवरवैंनसुनिरावनमुखमु
द्रितरयौ॥८॥पुनिरावनवूझंतअरेकपिगुनकहतावक।राम
राजलेख्यार्थदूरप्रापकवहुधावक॥लंकादाहकहनूमानवह
कहहुकहाँअव॥राच्छससूनूवद्धश्रवनसुनिततिताडितसव
॥भासतजितसव्रीडअतिपरमपराभवपायके।वहकोजानेकिहिं
ठौरहैंकितमैंरयौंलुकायकैं॥९॥जिहिंकपिकियपुरदाहअव
रकाननकृतभंजन॥गिरिदरिअसुरनभरीअच्छसुतकीनौंगंज।
न॥तुमजानतहोतहिकछुवहकरिहौंविनती॥पैंहमरेइहिंकट

कैताकीनहिंगिनती॥वहदूरदूरधावनविषैंविदितवडोम
जवूतहै॥संदेशाइतैंउतभेजवेल्यावनकारनदूतहै॥१०॥लंका
दईजलायअच्छतबसुतसंघारयौ॥अरुपुनिअसुरनखोघ
अमितछिनवीचप्रहारयौ॥संभाषनसियकीनअब्धिउल्लंघ
नठान्यौं॥उहिंअभिधाहनुमानमानकाननभलभान्यौं॥जः
वकामपडेबडजुद्धकौतितैंताहिभेजततनकित॥कछुदूरलेन
संदेशाव्हैतबतितकौंप्रेषतिनित॥११॥रावनउवाच॥रामसु
दरीविरहविदितवेंव्यौवपुहारित॥तासचिंतयालच्छभयौभ
लवच्छविदारित॥वधेपासद्धसुग्रीवजथानिर्मूलकूलतरु॥
कौंनविभीषनगिनतअतिथिअरिभयौदीनअरु॥रावनवंद
तअंगदसुनहुऔरनकोउअनेकहै॥लंकालगायपावकप
रममोरबध्यकपिएककहे॥१२॥अन्योन्यभाषरा॥कोहैव
नपतितनयकोनवनपतितवसंगी॥कोसंगीइकदिवसमप्र
सागरकृतअंगी॥कक्षापुटतुहिलियैंफिरयौवहवानरवा।
ली॥होंजान्यौंवहकुशलकुशलकितकर्मकुचाली॥श्री।
रामचंद्रजबरुष्टव्हैस्वाभिमानकोरहिसकत॥अन रन्यभूप
तर्पराकरनरम्यरुधिरतोतनुतकत॥१३॥कहाकरतहेराम
प्र तीपनविजयनिरंतर॥किहिंप्रतीपजयकियौविदितवाली
सुदिगंतर॥कोवालीकाविसरिगयौपहिचानकहाकपि॥य
हहूविस्मृतितोरअहोवडमोहमहानपि॥परियंकवद्धदश
वदनतूंनिजवालककलकेलिकृत॥लत्ताप्रहारममविस

करिप्रहस्तरामकौदूतहै॥आवनचाहतइतैंकौपिकपिपूतहै
आयसअसुराधीशदईअंदरगयौ॥हरिहाअवलोकन
आकाशवचनउचरतभयौ॥५॥अंगदउवाच॥षटपदवृत्तं॥
रेकौंनपकुलकहौकौंनरावनअभिधाना॥रतनरवीन्दूवंशह
रेकरिनष्टनिदाना॥त्रिजगदहनत्रयनयनत्रिशियशूलहुतें
अतुलित॥प्रलयानलप्रभुरामअसुरहूहैपतंगतित॥चितचाह
तजोतुमरीभलोउत्तमवातबतातअब॥सीतासमर्पिसंतर्पियैं
घटिजेहैंघनघातसब॥६॥कविरुवाच॥दोहावृत्तं॥साभ्य
सूयरावनरटतअंगदउत्तरदेत॥भयउक्तीप्रत्युक्तिजुतउत्तम
उपमालेत॥७॥अन्योन्यभाषरा॥षटपदवृत्तं॥रेकपितूंहैव
हीकौंनजोपहिलेंआयौ॥जाकीजारीपुच्छतनयममजाहिवं
धायौ॥तानैंतोतितकहीनिखिललंकापुरजास्यौ॥मास्यौतव
सुतअच्छमुधाकपिवचनउचास्यौ॥यहझूठवातकेसत्यहै
कीपलाजभयजुतभयौ॥अंगदवरिष्टवरवैंनसुनिरावनमुखमु
द्रितरयौ॥८॥पुनिरावनवूझंतअरेकपिगुनकहताविक॥राम
राजलेख्यार्थदूरप्रापकवहुधावक॥लंकादाहकहनूमानवह
कहहुकहाँअव॥राच्छसमूनूवद्धश्रवनसुनितितताडितसव
॥भासतजितसव्रीडअतिपरमपराभवपायके॥वहकोजानेकिहिं
ठोरहैंकितमैरयौंलुकायकैं॥६॥जिहिंकपिकियपुरदाहअव
रकाननकृतभंजन॥गिरिदरिअसुरनभरीअच्छसुतकीनौंगंज
न॥तुमजानतहोतहिकछूवहकरिहौंविनती॥पैंहमरेइहिंकट

कैंचनाकीनहिंगिनती॥वहदूरदूरधावनविषैंविदितबडोम
जवूतहै॥संदेशाइतैंउनभेजवेल्यावनकारनदूतहैं॥१०॥लंका
दईजलायअच्छतबसुतसंघास्यौ॥अरुपुनिअसुरनओघ
अमितछिनवीचप्रहास्यौ॥संभायनसियकीनअब्धिउल्लंघ
नठान्यौं॥उहिंअभिधाहनुमानमानकाननभलमान्यौं॥जः
बकामपडेबडजुद्धकौतितैंताहिभेजततनकित॥कछुदूरलेन
संदेशव्हैतबतितकौंप्रेषंतिनित॥११॥रावनउवाच॥रामसुं
दरीविरहविदितबेरुयौवपुहारित॥तासचिंतयालच्छभयोभ
लबच्छबिदारित॥वपोवृद्धसुग्गीवजथानिर्मूलकूलतरु॥
कौंनविभीषनगिनतअतिथिअरिभयौदीनअरु॥रावनवदं
तअंगदसुनहुऔरनकोउअनेकहै॥लंकालगायपावकप
रममोरबध्यकपिअेकहै॥१२॥अन्योन्यभाषरा॥कोहैव
नपतितनयकोनवनपतितवसंगी॥कोसंगीइकदिवससप्त
सागरकृतअंगी॥कक्षापुटतुहिलियैंफिस्यौवहवानरवा
ली॥हांजान्यौंवहकुशलकुशलकितकर्मकुचाली॥श्री
रामचंद्रजबरुष्टव्हैस्वाभिमानकोरहिसकत॥अन रन्यभूप
तर्पराकरनरम्यरुधिरतोतनुतकत॥१३॥कहाकरतहेराम
प्रतीपनविजयनिरंतर॥किहिंप्रतीपजयकियौविदितवाली
सुदिगंतर॥कोवालीकाविसरिगयोपहिचानकहाकपि॥य
हहूविस्मृतितोरअहोवडमोहमहानपि॥परियंकवद्धदश
वदनतूंनिजवालककलकेलिकृत॥लत्ताप्रहारममविस

रिगौ अति अचरज धुव धीय धृत ।। १५ ।। अंगद उवाच ।। प्रथम
तिर्यौ दुर्लंघ्य अंबुनिधि वानर प्रावक ।। दैत्य नि वहु दुर्मेद्य
भेदि प्रविस्यौ पुरतावक ।। वनरच्छक उच्छिन्नभच्छि फल अ।
च्छ हनन किय ।। प्रदहन लंकापुरी कियौ अवलोकन हू सिय
।। इत विद्यमान दशवदन तव अेक अल्प कपि आचरित ।।
मैं कौंन कौंन वर्णन करौं राम भूप अगनित चरित ।। १५ ।। राव
नउवाच ।। रावन करि आच्छेप उचारत आँनन अैसैं ।। भग्न
भग्न शिव चाप वालि आहत हत तैसैं ।। सप्त ताल हत हतक
वारि निधि बद्ध वद्ध कृत ।। कहा परा क्रम राम अहंकृति क
रि इर आवृत ।। धुव धग्न शैल मागर धरा अहिपति अंगद शि
वलसत ।। तिन सहित अचल कैलाश धृत विरहित रुज मम भु
ज हसत ।। १६ ।। इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री दू
लह सिंह जी विज्ञापित कवि टीकाराम आंगज गोविंद राम विरचि
ते श्री वर विलासे रावणांगदान्योन्य संभाषणो नाम पंच विंशो
ल्लास ः ।। २५ ।। कवि रुवाच ।। दोहा वृत्तं ।। सुनि २ रावन के वचन क
रि करि कपि पति कोप ।। स्वामि भक्ति अभिनीय उर वच उचरत ः
साटोप ।। १ ।। अंगद उवाच ।। षटपद वृत्तं ।। करि कक्षा गत तोहि।
वालि नामा वल वारौ ।। कपि कुल तिलक सुसप्त सिंधु संध्यार्चन
सारौं ।। कियौ अखिल अविछिन्न दलिष्ठ न उहिं सम कोऊ ।। श्री
रघुवर रणधीर हन्यौं इक शर करि सोऊ ।। सं त्यज्य अहंकृति
अमित उर वह वानर सुरपुर गयौ ।। तजि देउ गर्व यह सर्व तुम नि

ज हिय अंदर जोरयौ ।। २ ।। जिहिं संदेश हर दूत मरुत सुत तिर्यौ वा
रिनिधि ।। गोपद इव उर आनि स्वामि किय सर्व काज सिधि ।।
निज आलय जिम आय प्रवेशन कृत लंकापुर ।। सिय संभाषण
दर्श कियौ कानन भंजन तुर ।। तव भूरि सैंन गंजन ससुत पटु पत्तन
प्रदहन ठयौ ।। किहिं भांति राम वर्नन करौं प्रभु प्रताप सव छिति छ
यौ ।। ३ ।। कवि रुवाच ।। दोहा वृत्तं ।। वालि तनय वर वचन सुनि।
रावन भयौ सक्रोध ।। अहंकार आरूढ व्है उचरन लग्यौ अवोध
।। ४ ।। रावन उवाच ।। षटपद वृत्तं ।। हन्यौं कनक मृग मात्र तुच्छ त्र
णाचर कानन मधि ।। प्लवन वृच्छ तैं वृच्छ करन शाली वाली वधि
।। बीर कहावत राम मोर हिय हास होत है ।। प्रवल पराक्रम पुंज
दशानन जग उदोत है ।। वहु वन्हि माल ज्वाला जटिल अति दृढ श
र संधान है ।। जिय जवर जुद्ध उद्योग जुत मम समान नहिं आन है
।। ५ ।। अंगद उवाच ।। दोहा वृत्तं ।। मोकौं दूत भये सतैं संधी विग्र
ह होय ।। अछत सछत तनु पीठ छिति अवलुंठन है तोय ।। ६ ।। चं
द्रायणा वृत्तं ।। रावन जानहु मोहि दूत श्रीराम कौ ।। महावीर रण
धीर सुगुन गन ग्राम कौ ।। खर दूखन मृग भच्छि तृषित शर भूर
है ।। अरि हौं पिवहिं कंठ घट रंध्र रुधिर सु जरूर है ।। ७ ।। रावन उ।
वाच ।। दोहा वृत्तं ।। रेरे वानर अति अधम कटुक प्रलापत काहि ।।
श्रवन लाय सुनि लीजियैं इहि विध रावन आहि ।। ८ ।। षटपद वृत्तं
।। मृत्यु भृत्य पादांत तपति दिनकर सुमंद रुचि ।। लोकपाल पुनि।
अस्र मोर भय चकित रहत शुचि ।। वंदत नित पद रैंनु इंद्र आदिक

निशावासर ॥ चंद्रहासममलयतगर्भस्त्रवसुर अहि तियनर ॥ अ
तिउग्रप्रतापी असुरपतिरहतसकल करजोरिकैं ॥ अब आयेइ
ततपसीजुगल वानरसैंनवटोरिकैं ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृ
त्तं ॥ भूतलताडितपानितलभुज स्फालनकीन ॥ अंगद होइस
क्रोधवपु उचरतवचनअदीन ॥ अंगदउवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ रे
रे राच्छसवंश घोर घातकपातकचय ॥ समरमध्यश्रीरामकर
हिंतवसकलसीसछय ॥ दिशाविदिशपरिपूर्ण निकरनारा
चनकरिहैं ॥ रघुवरवीरसुधीर जबैं करवरधनुधरिहैं ॥ तवतो
रमत्यभूपरपरहि गिद्ध करहि लुंठितलपटि ॥ समुदायशिवा
क वलितकरैं भषैं कागकुंडनरूपटि ॥ ११ ॥ कविरुवाच ॥ दो
हावृत्तं ॥ रावन बदतप्रपंचजुत कटु वादी कपितोहि ॥ हौंनह
नत इहिं हेतु तुहिं धर्मशीलतामोहि ॥ १२ ॥ दूतयथोकतवा
दिव्है नरपति हनतनताहि ॥ क्रूरकोपकरिकरतहैं वपुविरूपक
छु वाहि ॥ १३ ॥ अंगद उवाच ॥ परदाराअपहरनमधिलईनरं
चकलाज ॥ अवैं दूतपरि ज्ञान विच धर्मशीलता आज ॥ १४ ॥
रावण ॥ उवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ इंद्र माल्य कर मोर द्वार प्रति हार
महमकर ॥ गृह ममा जंक वायु वरुन चुन चंद्र छत्रधर ॥ परिनि
यतपाचकस्य परम पावक पद्द पाचक ॥ राचक नारद प्रमुख देव
गुरु आदिक जाचक ॥ ममभवन विभवलयतन कहा तवनक
रत रघुवर महा ॥ वह मनुजमात्रवपु विदितहैं वर राछसभच्छन
रहा ॥ १५ ॥ अंगद उवाच ॥ रेरे रावन हीन दीन कुमती तवदर।

सन ॥ रामहिं मानत मनुजपुंजपाचकचयपरसत ॥ कहानदीसु
रनदीकहागज ऐरावतगज ॥ रविहय हैं हय कहा कहा परजा
पतिहै अज ॥ रंभाकहाय अवला कहायुग गिनती कृतयुगक
हा ॥ किलकामधनुषधारीकहा ॥ कावानर हनुमत महा ॥
॥ १६ ॥ इतिश्रीपिपलोद पत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलह सिंह
जीविज्ञापित कवि टीकारामांगज गोविंदराम विरचिते श्रीवरवि
लासे रावणांगदयोरुत्तर प्रत्युत्तर वर्णनंनामषड्विंशोल्लासः ॥
२६ ॥ अथप्रश्नोत्तर ॥ षटपद वृत्तं ॥ रावण उवाच ॥ कोतूंकिं
हिकौ सुवन यहां आयौ किहिं कारन ॥ विश्वप विजयीरप्रस्तता
हितृणसम कियधारन ॥ अंगदउवाच ॥ वाली तव वलमथ
नपुत्र अंगद अभिधाना ॥ आयौ अचल सुवेल दूतरघुवरज
गजाना ॥ बहुवारवारसमुझायकैं कहत तोहि जडमति अज
हु ॥ जानकी देहु जगदीशकौं किंवा मस्तक ताति तजहु ॥ १ ॥ राव
नउवाच ॥ सोरठावृत्तं ॥ धिक धिक अंगद जान जानैं तव मारयौ
जनक ॥ वीर वृत्ति निर्मान दूतहोय अरि लजत नहिं ॥ २ ॥ अंग
दउवाच ॥ युक्त कियौ श्रीराम जानैं मम मारयौ जनक ॥ शास्ति ति
लोकी धाम कृत्य काजसुदुरातमन ॥ ३ ॥ प्रश्नोत्तरं ॥ रावनउ
वाच ॥ रामकहा कृत कार्य यह चित चाहत चीनौं ॥ उत्तर दिय
जुवराज अंबनिधिबंधन कीनौं ॥ रावनउवाच ॥ लंकानाक नि
काय वैरि वसतीनहिं जानत ॥ अरु अतरलबल मोहि मनाक
हू नहिं पहिचानत ॥ तवकहि अंगद जानत सबैं पैं तुमरी नहिं बा

तहै ॥ लंकाधिराज वह बिभीषन विदित वीर विख्यात है ॥ ४ ॥
रावनउवाच ॥ वानर बाँध्यौ सेतु लख्यौ कौंनसी बडाई ॥ गिरिस
मानबलमीक पिपीलिक विरचित पाई ॥ लंकदही हनुमंत या
हुमैं नहिं अधिकाई ॥ दाहक अग्नि सुभाव विदित जग जन सब
गाई ॥ आश्चर्य शौर्य निज भुजन कौ राम अपर किंचित कियौ ॥
जुवराज वह वरनन करहु सो सुनि वे हुलसत हियौ ॥ ५ ॥ अंगद
उवाच ॥ तिहिं तिय निकट नितांत थिरी हुत तनु तित बिलसी
॥ सिय समान मुख लैन बहिन रावर हिय हुलसी ॥ तिहिं कीना
सावसाय षडग कीनौं अभु पंकिल ॥ खर दूषन त्रिशिरादि रुधिर
करिकैं धोयौ किल ॥ परियस्त नयन तव दर्प इव शवसा नाक छे
दन कियौ ॥ श्रीराम वही विसरत कहा विश्व विदित जिहिं जस
लियौ ॥ ६ ॥ रावनउवाच ॥ परिमित महिमा छुद्र तितहु हुत
छितिधर घटना ॥ तिरिकैं तुच्छ समुद्र लगाई अविरत रटना ॥
अकलित महत महत्व दुखद दुष्पार परम है ॥ विंशति भुज दश
वदन विंशती सागर सम है ॥ ते अति अगाध जिन थाह नहिं ह
थापरिश्रम करत हौ ॥ सब सिद्ध करहु निज निज निलय विना
मौत क्यौं मरत हौ ॥ ७ ॥ अंगद उवाच ॥ रे रे रावन असुर अव
निपर रावन केते ॥ हमनैं बारं वार श्रवन पुट कीनें ऐते ॥ कार्तवी
र्य दोर्दंड चंड पिंडी कृत इक है ॥ दूसर गत दैत्येंद्र द्वार दासी दत
धिक है ॥ नाचियौ नाच गहि कवल तित तीसर लज्जा जन्य है ॥
इन बीच कहहु तूं कौंन सौ अथवा इनतैं अन्य है ॥ ८ ॥ राव॰

नउवाच ॥ कुंभकरन मम भ्रात अखिल अरिकुल संहारक ॥ का
लरूप विकराल कलेवर भवभय कारक ॥ मेघनाद मम पुत्र पुरं
दर बंधन करता ॥ चंद्रहास मम षडग सकल शत्रुन संहर्ता ॥ मम है
सहाय निशिचर निकर त्रिभुवन विजई शत्रुसुर ॥ रावन लसंत अ
भिधान मम राजत राजा लंकपुर ॥ ९ ॥ भये हुते बलवान महा क
पिपति हैं हयपति ॥ दशकंधर की कंध प्रतिष्ठा अब छाई अति
सद्य विपाटित कंठ कंदली की कस करा कारि ॥ अंसस्थलि अ
वकीर्ण इभाजिन पल्लव निज धरि ॥ धूर्जटी झटिति प्रस्फोट्य
त आनन उचरे धन्य है ॥ मम वाली अर्जुन समयतैं अब प्ररूढ
बल अन्य है ॥ १० ॥ बच्छत्थली कठोर मोर संगर भो सुरपति ॥
ऐरावत गज दंत मुसल उन्नत आहत अति ॥ भग्न भयौ मुख क
री हृदैं मम तन कन त्रासत ॥ अरु हेलाउच्छिप्त अद्रि कैलाश
प्रकासत ॥ संत्रस्त अंगनालिंगने प्रचुर प्राप्त आनंद हर ॥ लं॰
काधिराज रावन विदित रिपुन ओर है अन्यतर ॥ ११ ॥ अंगद
उवाच ॥ रे रावन हर शैल मथन प्रख्यात पराक्रम ॥ चहत राम
तैं युद्ध युक्त नाहि लखत तोहि हम ॥ रहन दे उ रघुराम लच्छमन
कृत धनुरेखा ॥ लंघित भई न तुच्छ तबहि तव बल सब पेखा ॥
उन लघु किंकर लंघित जलधि पुरी दग्ध अरु अच्छ हत ॥ रन
घन घमंड तजि दीजियैं मम बच कीजैं श्रवन गत ॥ १२ ॥ राव॰
रा उवाच ॥ हिरनकशिपु हिरनाच्छ दैत्य इश्वर भस्मांगद॰
॥ अवर अमर द्विप सकल बल कथा तुलित न चांगद वाहु सा

रममसलं अलंकृत इन अवलोकत ॥ समतालहतनकोपि।
जदपि बहु विश्वविलोकत ॥ जोरामचंद्र रिपुहा कहत भयो
प्रिया अपहरन अब ॥ अरुसंधिवातकरवातहै जानिलि
यौ इहिं बीचसब ॥ १३ ॥ अंगदउबाच ॥ मन्थन करि मतक्री
ड कहत कैलाश सुभट सुन ॥ शिव गहि गहि पुनि देत तथा
रामनरावनचुन ॥ अब्धीवंधनदेय स्वल्पसर इव सरसायौ
॥ कमलबंधुकुलवधू छंड चह जो सुखपायौ ॥ हमहितू हेरि
हितकी कहत यामधिनकर अचंभहै ॥ ममजनक दिव्यदो
र्दंडजयकलितसुकीरतिथंभहै ॥ १४ ॥ प्रश्नोत्तर ॥ चंद्राय
णावृत्तं ॥ कौतूं वालीतनयदूत श्रीरामकौ ॥ कोरखु बर अ
रु वानर वालीनामकौ ॥ बाँधितोहि चतुसिंधु मुहूरत मधि
भ्रम्यौं ॥ हरिहाँ वह वालीममतात हीयतैं किमगम्यौं ॥ १५
षट्पद वृत्तं ॥ दोर्दंड परचंड तोर प्रतिहनन प्रबल गति ॥ स।
हसबाहु भुजसहससद्य छेदनकृत भृगुपति ॥ परशुरामग
र्वापहारि श्रीरामदूतहौं ॥ अंगदमेरोनाम पुरंदर पूतपूतहौं
जबभूरिभ्रमन मूर्छितलख्यौ जनक घृणा संजुतभयौ ॥ पु
च्छाग्न बालसुनिवासदिय तदपितुच्छविस्मृतरयो ॥ १६ ॥
इतिश्री पिपलोदपत्तनाधिपाल रावतजी श्रीदूलहसिंहजी
विज्ञापित्त कवि टीकारामांगज गोविंदराम बिरचिते श्रीवर
विलासे रावणांगद प्रश्नोत्तर वर्णनं नामसप्तविंशो ल्लासः
॥ २७ ॥ रावण उवाच ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ बालतालतरुह

नसाढ्य बचनेहुते ॥ जर्जर जीर्णपिनाकभंगनहि अद्भुते ॥ हर
क्रीड़ा चल कियौ कंदुकी क्रीडहै ॥ हरिहाँ सो सुनि सुनि सब।
बीर होत सव्रीड है ॥ १ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ श्रवनपथनमधि प्राच
र्य आवत मम कति कति ॥ साम्यशरणि उल्लंघ्य जगतिजा
गर्ति लंकपति ॥ जिहिँ दोर्मंडल गाढ परम पीडन दरवसतैं ॥
रक्तछटा घनघटा मनौं द्रवधातुदरसतैं ॥ अंकुरित कणपं।
का अजौं शंकर गिरिकैलाशहैं ॥ अंगद अशेष ममभुजन
मधि प्रबल पराक्रम वासहैं ॥ २ ॥ मूरधनिज उत्क्रान्त्य हुताश
नहुतजबतैं अति ॥ स्फुरित बही व्याकीर्ण भाललिपि लखि
लंकापति ॥ होहिं शमतैं काल अस्य इति वर्णौं चिंतित ॥
अधिक उमगि शिर आप असखलित होय चारुचित ॥ प्रभुप
टु पिनाकि प्रीणित किये गिराजासगुण गायते ॥ असल।
सत लंकनगराधिपति कवनतास वैरायते ॥ ३ ॥ इहिँ दशमु
षबड बीरधीरका वर्णन करियैं ॥ प्रबल पराक्रम पुंजप्रचुरधि
यधी वरधरियैं ॥ पूजन काज पिनाकि करन चह मस्तकमा।
ला ॥ सूत्रहेत हर कंठ विकर्षन कृत वरव्याला ॥ तब भृकुटी
की करि सूचना प्रमथ गगन प्रतिषेध किय ॥ लंकेशमानि।
तिनकौ कथन लियौ अपरिमित हरखहिय ॥ ४ ॥ कविरुवा
च ॥ दोहावृत्तं ॥ इहिं अंतर मधि आइ उत पठत बचन प्रतिहा
र ॥ सभास्तार संदोह मधि अधिक उच्च सुरधार ॥ ५ ॥ प्रति।
हारउवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ नैषसमय अध्ययन मौंन मुखध

रहु विधाता॥स्वल्प २ संजल्प तुरी जडमतियलुष्याता॥ना
हिं शक्र की सभा स्तवन गिर संहर नारद॥पूर्ण करहु स्तुति
कथा तुम्बरो गीत विशारद॥भल सीता रत्नक भक्ष करि भा
ग्न हृदय लंकेश है॥अश्व पथ्य पत्र इव स्वस्थ नहि व्याकुल
बुद्धि विशेष है॥६॥कविरुवाच॥अंगद होय स क्रोध क
हत अरे रावन सुन॥तव मथ्यन करि करहि राम दिगदेव।
बली चुन॥हौं हू मारन जोग तदपि तोकों नहि मारत॥तात
कक्ष अव शिष्ट बिदित यह बात विचारत॥किल क्रीडित
तव शिर कंदुक निपद प्रहार अगनित किये॥निज क्रीड
न की सामग्रि यह भंजन करि लज्जत हिये॥७॥सोरठावृ
त्तं॥सत योजन विस्तार तिमि तिहिं निगलत तिमिंगिल॥
तिमिंगिल गिलहु निहार ताहि गिलत राघव विदित॥
८॥षट्पद वृत्तं॥अविरल गल दल गलित ललित लोहि
त रत धारा॥धौत विलोचन ईश अंघ्रि अंबुज बहु वारा॥
प्राप पिनाकि प्रसाद मुधा जय महिमा जग मधि॥अरु अ
द्री उद्धरन गर्व आरूढ हस्त अधि॥दश मस्तक विंशति
करन कौ केवल भार उठान भल॥किल कर्तन फल बहु शि
रन कौ भार उद्वहन भुजन फल॥मुंच मुंच मैथिली राम प
दु पद पंकज भज॥करहु राज चिर काल हविर्भुज होहु अ
मर त्यज॥लंका पुरीश तच्छ पराभव पावन जैसें॥उर अंदर
निरधारि काज वर कीजै ऐसें॥नातर चपेट वानरन की।

मुष्टि वृष्टि हू है अमित॥अति क्रूर कीन कुकरम कठिन ति
न सब कौ फल मिलहिं तित॥१०॥निरये नहिं रघुनंद अथ
मनहिं सुनै श्रवन पथ॥कीनौं क्यों न विलंब विपिन बिच
हुतो महारथ॥युध्यो नाहिं छिन मात्र भाग मधि भग्यो भ
यातुर॥अजों नाथिर ता गही हसत उर अतिशय आतुर
अव अखिल मान तजि दीजियें लियौं शौंन मुनि वालि व
ध॥सीता समर्पि रघुबंश निज दास होहु अधिपति अव
ध॥११॥रावण उवाच॥चंद्रायण॥वृत्तं हरि पवि पाय प्रहा
र शोध कछु ही लियौ॥उर उदग्र गुरु गगन प्रसभ सब पी
लियौ॥सुर श्रिय करि रागी काज मोर भुज बन कियौ॥अरि
हौं अंगद दशमुख वीर तोहि विस्मृत रियौ॥१२॥मैंने मेरे
हस्त मस्त दश छिन्न हैं॥चंद्रहास असि किये अखिल उछि
न्न हैं॥गद गद गिर गलिताश्रु नाहि स्मित वान हैं॥परिहां
याके मध्य प्रमान शंभु भगवान हैं॥१३॥छिंधि मोहि मुहि
छिंधि छिंधि मुहि बोल हैं॥पुनरुद्भूत न निरखि करत हिय तो
ल हैं॥नव भव आगैं इन्हैं दशानन काट हैं॥परिहां भूमि पति
न शिर हसन लगे अट्टा हैं॥१४॥मूल पंच शिर पुष्य रम्य रच
ना करी॥तदुपरि लर दूसरी चार मस्तक धरी॥दशम कहाय
ह शांक दशम मस्तक भई॥परिहां धर परि करि कर परसत
इ छेदत सई॥१५॥लंकेश्वर सम धीर वीर अति रम्य हैं॥
जिहि के गुनगन गूढ गिरादि अगम्य हैं॥मत्य हो मिल

षिअनल मंद शिष भीतहै ।। परिहौं स्वासानल संदीप्त कियौ
जुतप्रीतहै ।। १६ ।। अंगदउवाच ।। षट्पद वृत्तं ।। विक्रम मस्त्र:
कहौंम कथापौलस्त्य वहुत किय ।। सारो अंगजलाय देतवैः
धव्य भीत तिय ।। अरु शिव गिरि उद्धरन पराक्रम तुम हियहे
रे ।। रासभषर उष्ट्रादि भार वाहक वहुतेरे ।। कछु अपर परम
पुरुषार्थ कृतहोय वहै वर्णानकरौ ।। बहु बार बार विस्तार ।
किय अब यह प्रकरन परिहरौ ।। १७ ।। कविरुवाच ।। सोर
ठा वृत्तं ।। विदित वीस चय अंध विंशति श्रवनन करि वधिर
चहन संधिसंवध अंगद उर ऐसैं तुली ।। १८ ।। स्वामी शौर्य
सुनाय पुनि अंगद चलिवो चहत ।। उचरत सीस धुनाय वा
लिसुवन दशसीससौं ।। १९ ।। अंगदउवाच ।। षट्पद वृत्तं ।। ।
अर्जुन नृप तुहि वद्ध बिदित कारागृह अंदर ।। मुनि पुलस्त्य ।
तव हेतु भये जाचक जिहिं मंदिर ।। तिहिं भुज वन उच्छिंन का
र अंतक छत्रियकुल ।। परशुराम प्रख्यात पराक्रम बहु वल
संकुल ।। श्रीरामतेज वडवागि कृत शौर्य सिंधु तस कियचु
लक ।। लंकेश तोर बल तुच्छ सर द्रुत सूषहि लंका मुलक ।। २०
रै रे राकस राज मुंच सहसा वैदेही ।। धर्मपत्नि श्रीरामचंद्र सत्व
र वैदही ।। मिथ्या निज पुरुषार्थ प्रचुर प्रागल्भ्य रषत उर ।। वा
नरभट वाहिनी भयंकर भासत तव पुर ।। इम कहि कहि अ
तिउत्त कट वचन आतंकित लंका करी ।। निसक्रांत भयौ जु
वराज द्रुत कछु दशमुष श्रवनन धरी ।। २१ ।। ।। इतिश्रीपि

पलोदपत्तनाधिपाल रावतजी दूलहसिंहजी विज्ञापित्तक
विटीकारामांमज गोविंदराम विरचिते श्रीवर विलासेराव ।
णांगद संवादो नामाष्टविंशोल्लासः ।। २८ ।। अथ हनुमन्ना
टके ऽष्टमोंकः ।। ८ ।। कविरुवाच ।। सोरठा वृत्तं ।। निज प्रताप
परचंड चंड समर उच्छाह करि ।। परिपूरन दोर्दंड बिलसत पु
र लंकापती ।। १ ।। षट्पद वृत्तं ।। सुनिके दशरथ सुवन सुवे
लाचल कटकोपर ।। रावन रन उद्योग अमित उच्छव निज
उरधर ।। दशाकर धनु टंकार ककुभ परिपूरन कीनी ।। बहुरि
शिलाशित विपुल विमल विशिषा वलि लीनी ।। अवशि
ष्ट रहे दशहस्थ तस तिनकरि चित्राकृति करन ।। अभ्यसत
अंगना कुचन पर पत्र वल्लि रचनाधरन ।। २ ।। तदनंतर लंके
शराज मंदिर शिषरस्थित ।। मंचोपरि आरुह्य लषत वानर
वाहिनि जित ।। यह वानर दग्धाग्न पुच्छ लंका विकृती कृ
त ।। यहे वालिसुत विदित तस्य आकृति इव वपुधृत ।। शर
धनुषधारि कामाकृती श्याम होहिं सीतापती ।। प्रत्येक श
त्रु अवलोकि उत मंचस्थित उचरत अती ।। ३ ।। तस तिय मं
दोदरी परम सुंदरी बषानत ।। निशिचर बन स्वच्छंद दवान
ल राघव मानत ।। पुनि निज पति कौ परम प्रेम सिय प्रतिपहि
चानत ।। चहत विजय निज पच्छ अजय प्रतिपच्छ प्रमानत ।।
वह कबहुक गृह संचार कृत कबहुक पति ढिग प्राप है ।।
छिन पावत नहिं ऐकत्र थिति अंतराल गत आप है ।। ४ ।। चं

द्रायणा वृत्तं॥ वृंदारक वंदारु वृंद अभिवंदिते॥ अतिसुंदर मं
दार मालमकरंदिते॥ मंदिर मंदिर मध्यम्लानन्ता मंजिते॥ प
रिहौं मंदोदरि चरणार विंदरजरंजिते॥५॥ दोहावृत्तं॥ रिपु
विद्रावण रावणहि करि करि बहुरि निहोर॥ मंदोदरि अति
सुंदरी कह अंजलिपुट जोरि॥६॥ मंदोदरी उवाच॥ षट्पद
वृत्तं॥ शशि शेखर गिरि आप बाहु उधत जग जान्यौं॥ कुंभ
करन निज भ्रात जगत भच्छक उर आन्यौं॥ वासव विजयी
विदित सुवन घन नाद निहारौ॥ तदपि बालि जित बली राम
रनधीर निहारौ॥ इहिं अवला छल बल करि हरी नाथ आन
की दीजियैं॥ निज मंदिर मधि मंदोदरी रहसि विनय सुनि
लीजियैं॥७॥ कविरुवच॥ दोहावृत्तं॥ मंदोदरि के वचन सु
नि सुललित लंकानाथ॥ निज भुज आडंबर कियैं वचन बद
त दशमाथ॥८॥ षट्पद वृत्तं॥ रावन उवाच॥ भामिनि क्यों
भय करत भीरु बहु निशिचर नायक॥ नसिहैं रिपु मम महत
लेषपति नहिं रन लायक॥ घन मार्गन गन प्रान हरहिं हैं रहु
तपसी के॥ जानहु नाहिं विलंब लंब निज उर मधि नीके॥ सु
नि स्वामि वचन वाक्छल सहित भई सभय मंदोदरी॥ क
हि पाय अमंगल शांत व्है पुनि आनन गिर उच्चरी॥९॥ जे
हि पाय अमंगल ...

के भ्रत्य सुग्रीव प्रथम कपि इतमैं आयौ॥ वन वनपालक भं
जि अच्छ हति नगर जरायौ॥ चल्यो गयो चुपचाप लखि रहे
वीरवर सब॥ किहिं तैं कछु हनवनी सकल है विद्यमान तब

अवहून आयौ कपि बल प्रबल उल्लंघन जलनिधि कियौ॥ वे
दुच्छत उर नहिं आन कछु चाहत चित मैथिली लियौ॥१०॥
कविरुवाच॥ चंद्रायणा वृत्तं॥ सुनि मंदोदरि कथन सभय
रावन भयौ॥ शुक सारण है दूत पठावन मन ठयौ॥ रामदेव
के शिविर जाउ आयस दई॥ परि हाँ पुनि निज मंत्रिन सहित
स्वहित चिंतन सई॥११॥ विरूपाक्ष उवाच॥ षट्पद वृत्तं॥
विरूपाच्छ वर सचिव सुहित वच उचरत ऐसैं॥ संप्रति प्रति
भट उपरि नाहिं प्रोल्लासन जैसैं॥ सीता रच्छन दच्छ लच्छ
मन कृत धनु रेषा॥ नाहिं उलघी गई भई विस्मय प्रद ले
षा॥ कपि कटक सहित लंघित जलाधिराज नराम महान है
उन वैदेही वैदही दुत यामह कछु नहिं हान है॥१२॥ जब
लौं नाहि निहार राम दशरथ नृप नंदन॥ जबलौं नाहिं नि
हार नयन पाथोनिधि बंधन॥ जबलौं नाहिं निहार निरखा
लक लंका पुर॥ कुलांगारता प्राप्त अनुज सुचरित पवित्र उ
र॥ तबलौं विचारि असुराधिपति अनघा सीता अर्पियैं॥
इत होयन को राय कुल कदन इहिं विध अरि संतर्पियैं॥१३
रावन उवाच॥ ये अंते मम बाहु शाक दोर्दंड कंडु हर॥ सोहं स्त
कानाथ सकल संसार विजयकर॥ बाध्यौ वानर सेतु हम हु
श्रवनन सुनि लीनौं॥ देखत हो निज नयन लंक गढ आवृत
कीनौं॥ जो जन जीवत है जगत मधि कहा न देखत सुनत है॥
ध्रुव धैर्य वीर्य जुत होय सो तिन चित अवि चल चुनत है॥१४॥

विरूपाक्ष पुनि पठत शाक्र शिर पर प्रभु आयस ॥ सकल ।
सत्व धर मत्य रहत रावरी रजायस ॥ भक्ति भूतपति शंभु र
हन लंकापुर आस्पद ॥ द्रुहिणान्वय संभूति अेक तैं अधि
क अेक हद ॥ दुर्लभ हरेक इन गुनन मैं सब जन कौं सर्वत्र है
॥ विलसत असेष हु आयकैं आप वीच अेकत्र है ॥ १५ ॥
इति श्री पिपलौद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंहजी
विज्ञापित कवि टीकारामांगज गोविंद राम विरचिते श्री व
र विलासे रावन विरूपाक्ष संवादो नाम कौन त्रिंशोल्लासः
॥ २६ ॥ रावन उवाच ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ पंडित मंत्री शुद्ध बु
द्धि विलसंत है ॥ विलासीन कौं रती सचिव सुलसंत है ॥ मा
नौं मनुज महान पराक्रम सार है ॥ परिहां तिन कौ मंत्री मह
द अेक असिधार है ॥ १ ॥ कविरुवाच ॥ मंत्रि महोदर अ
भिध उच्चरत यौं तबैं ॥ मुष सुष मधुरी वीच लगत प्यारी सबै
॥ व्यासनाधीन धरेश धीय उद्योत है ॥ परिहां तिन नियेध के
वचन सुदुष सह होत है ॥ २ ॥ प्रिया रूम धुरा वाच सदन मधि
स्वच्छ है ॥ कर्कश सुनय समेत वचन श्री रच्छ है ॥ प्रिय बा
दी थिति विभव सुभोजन दान मैं ॥ परिहां साधु वादि नर रहे
विपति के थान मैं ॥ ३ ॥ जिहिं निय राया निधन मूकता गुन
महा ॥ तदपि भक्त प्रभु मुषर होय के हम कहा ॥ व्यसन पंक
मधि मग्न स्वामि कौं करन है ॥ परिहां व्है न फेर उद्धरन मूक
प्रन धरत है ॥ ४ ॥ नदी पूर षल प्रीति लच्छमी लेषियें ॥ विन

कारन द्वेषीन नियति पुनि पेषियें ॥ अरु वनिता सुकुमारउ
रसि आनैं अबैं ॥ परिहां अस्थिर जोवन जगति आप जानहु
सबैं ॥ ५ ॥ दत्तो च्छाह अकार्य मध्य हू जैं रहैं ॥ ठकुर सुहा
ती बात सकल संतत कहैं ॥ चित्त ग्रहन मधि चतुर विदग्ध ।
वषानियैं ॥ परिहां मधुकर इव करांति मही पति मानियैं ॥
॥ ६ ॥ दिन मधि पद्मिनि प्रभा कुमुद्वतिरैं न है ॥ संतत रहत
न चैंन तथैव अचैंन है ॥ क्रम करि संपद विपद सबहु कौं प्रा
प्त है ॥ परिहां यह उर अंदर अवस आनियैं आप है ॥ ७ ॥ नी
ति शास्त्र यह त्रिविध धीय ध्रुव धार्य है ॥ वर्णन किय गुर्वा
दि अषिल आचार्य है ॥ इहां सुषद है अेक द्वितिय परलो ।
क है ॥ परिहां उभय लोक मधि तृतिय घनानंद अोक है ॥
८ ॥ अति उत्तम उभयत्र सुषद उर आनियैं ॥ पुनि उत्तम पर
लोक मोद प्रद मानियैं ॥ अधमाधम आनंद प्रदायक अ ।
त्र है ॥ परिहां तिहिं तैं कारज सरत नाहि कछु तत्र है ॥ ९ ॥
स्वामि निधन करि सचिव शास्त्र विष आदि तैं ॥ अरु अप
नौं प्रिय परम करत राज्यादि तैं ॥ वह है अैहिक शास्त्र पा
पस व मूर है ॥ परिहां तिहिं सुरव पर बहु वार डारियैं धूर
है ॥ १० ॥ निगम मार्ग उच्छिन्न करत जो पाप है ॥ आग्याभं
ग महीप कियैं सो प्राप है ॥ ताके वध मधि लहत जु कलुष
अपार है ॥ परिहां द्विसह सरस नाशेष पावत न पार है ॥ ११ ॥
बिन अपराध प्रधान प्रभू पीडित करैं ॥ तनकन तिहिं वैरु

ष्यकदाधियमैंधरैं ॥ वह आमुष्मिक शास्त्र सुयद पर।
लोकहै ॥ परिहां उत्तम उहि उचरंत विदुष अवलोकहै ॥।
१२ ॥ राज्यं गृहन सामर्थ्य सचिव मधि व्है सही ॥ तदपिस्वा
मिवध कदा मन हु मानैं नही ॥ वह आमुष्मिक ऐहिक
वचन उच्चारियैं ॥ परिहां उत्तम उत्तम वहै ध्रुव धियधारियैं
॥१३॥ शुक सारण तव सचिव जुगल ऐहिक कहे ॥ ग
त वानर वपुधरि अजौं जित्त हीरहे ॥ आमुष्मिक विरू
पाक्षि महोदर दोयहैं ॥ परिहाँ सीय समर्पहु नत्तर संग च
र होयहैं ॥ १४ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावतजी
दूलह सिंहजी विज्ञापित्त कवि टीकाराम अंगज गोविंदरा
म विरचिते श्री वर विलासे महोदर मंत्री वाक्य वर्णनं ना
म त्रिंशोल्लासः ३०॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ रावनम
य शिर कंप सह करत स्वबुद्धि विचार ॥ नीति शास्त्र निज
श्रवन सुनि सोधत सारा सार ॥ १ ॥ रावणांतर्गत विचार
॥ कुंभकर्ण भ्राता बली राज लौंमन त्लाइ ॥ जो कदापि यह
मुहि हनैं पहिलैं पठवौं याइ ॥ २ ॥ कविरुवाच ॥ विरूपा
क्ष अरु महोदर विभु अंतरगत भाव ॥ जानि लियौ शिरकं
प करि पुनि पठ सचिव सुभाव ॥ ३ ॥ विरूपाक्ष महोदरावू
चतुः ॥ वदत धर्म नित नीति विद केवल नरपति अग्र ॥ यु
वराजादिक के निकट न कह कदापि समग्र ॥ ४ ॥ षटपद
वृत्तं ॥ हा लंकेश्वर नाथ शुद्ध अधिकारी हम हैं ॥ किय

शंका अंकुरित कहावे रूप्य विसमहै ॥ नाहिं सर्प मुयरत्त
लयत न हिं दुष्ट कलेवर ॥ तथा न धन नृपनि कट नपुनि वि
तरहत प्रजा कर ॥ बहु द्रव्य दुरधिकारी सदन तें निज पति।
प्रति द्वेष कृत ॥ हो स्वामि आप नहिं मूढ धी नाहि उभय हम
दुष्ट भ्रत ॥ ५ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ दुष्ट सचिव कर अर्पि राज
सब भार है ॥ महिपति रहत प्रमत्त सुस्वैर विहार है ॥ जिम
विडाल के अग्र राखि पय पात्र है ॥ परिहां सोवत तें नृपमू
ढ सु संशय नात्र है ॥ ६ ॥ षटपद वृत्तं ॥ किये अवनि उत
पानत्ति नैं रोपन औरैं थल ॥ कुसुमित तरु सुम चुनत क्षुद्र
लघु वर्धत नित भल ॥ वाहर कृत कंटकी सुतर संहत वि
श्लेसत ॥ नम्र करत अत्युच्च नीच द्रुम उच्च सतत कृत ॥।
जिम माली तिम महि पालहू करत रहत चित चिंतवन ॥
वह चतुरच्चक्र चूडामणी नृप पावत आनंदघन ॥ ७ ॥।
दोहा वृत्तं ॥ संग्रह करत अशुद्ध हू जद्यपि महिपति शुद्ध
॥ कछु कारज वस होय कैं मदत प्रदाइ विरुद्ध ॥ ८ ॥ क्ष।
चित प्रयोजन हीन हू देत प्रयोजन पूर ॥ इत प्रमान निज ह
ष्ट सुर शंकर जान जरूर ॥ ९ ॥ षटपद वृत्तं ॥ सकल सुश
क्ति समेत सदा शंकर समलं कृत ॥ जदपि जीर्ण किय जह
र तदपि मस्तक सुधांशु धृत ॥ किया भस्म कंदर्प तदपि
गिरि तनया धारत ॥ सुर शरिता शिर धारि भाल दृग अन
ल दवावत ॥ नित नृपति नीति मधि निपुण शिव संतत

तवरच्छा करौ ॥ जग बिदित्त बिरोधी वस्तु बहु काज॰
निरषिसंग्नह धरौ ॥ १० ॥ दिपत्तदिगंवर देवधनुयधारन
किहिं कारन ॥ धरौशस्त्र जोहस्त्त कयौंन कियभस्मनि॰
वारन ॥ धरीभसित्त तौ काहि अंगनारयत्तनिरंतर ॥ सषी
प्रियातो काहि कामतैं हैय करत्तहर ॥ अन्योंन्य विरोधी
कर्ममधि निरत्त निरषि निजनाथ कौं ॥ वपु अस्ति शेषमृ
गीभयौगावत्तस्वामीगाथ कौं ॥ ११ ॥ चंद्रायराग वृत्तं ॥॰
नृपदुर्योधन नाम भविष्यति अग्नहै ॥ ब्रास्मरामंत्रीवी
र द्रौंराासु उद्धग्नहै ॥ तिहिं के बचन उलंधिवहै भवित्ता
त्रथा ॥ परिहां नाहिं निशाचरनाथ हूजियौ तुमतया ॥
१२ ॥ काविरुवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ इम कहि कैं मंत्री निषि
ल निजनिज गयेनिवास ॥ रावन मंदोदरिसहित्तविनर
त बिपुल बिलास ॥ १३ ॥ कीनौंगवन अशोक वनवस
तजानकीयत्र ॥ रावनसौं मंदोदरी कहन लगी कछुत
त्र ॥ १४ ॥ मंदोदर्युवाच ॥ मम अरु मैथिलिवपुषविच॰
भासत कित्तनौं भेद ॥ सोनिज वुद्धि विचारि करिउ चरहु
आपअषेद ॥ १५ ॥ रावन उवाच ॥ वरवैवृत्तं ॥ तवत॰
नुगंधमनोरममीन समान ॥ परिमल सीय कलेवर क
मलप्रमान ॥ १६ ॥ बिलगन मानहु प्यारी मम सुनि वैं
न ॥ रूप अनूपम उभय न कछु भिदहैन ॥ १७ ॥ शब्दा॰
लंकारेयमकालंकारः ॥ सीताधर्मधुरीनारामनजो

ग ॥ सीताधरमधुरीनारामनजोग ॥ १८ ॥ कविरुवाच ॥
मंदोदरि सव सुनिकैं रावन बोल ॥ करन लगी निजजियम
धिलंका तोल ॥ १९ ॥ चंद्रायराग वृत्तं ॥ पापकथामधिम
गनविभीषन भ्रात्तहै ॥ कुंभकरन प्रस्वाप वीच दिनरात॰
है ॥ अभिमानी असुरेश निमग्न कलंक मैं ॥ परिहां लं॰
काडूवत्त हाय अपरिमित्त कंपमैं ॥ २० ॥ कविरुवाच ॥
दोहावृत्तं ॥ तदनंतर तिहिंठौरतैं भयेसकल निसक्रांत ॥॰
ठांह ठांह वरनन करत्त असंभवित्त वृत्तांत ॥ २१ ॥ इतिश्री
विपल्लोद पत्तनाधिपाल रावत्तजी श्रीदूलह सिंहजी विस्ता
पित्त कविटीका रामांगज गोविंद राम विरचित्ते श्रीवरवि
लासे मंत्रिवाक्यं नामैकत्रिंशोल्लासः ॥ ३१ ॥ अत्र हनुम
न्नाटके नवमोंकः ॥ ९ ॥ कविरुवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ तद
नंतर लंकेश सानुचर मंदिर सुंदर ॥ करि प्रवेश उच्चरत उई
इच्छा उर अंदर ॥ भौ अनुजी वीमोर अषिल सुनि लेउ वच
नमम ॥ मायारचन प्रपंच कियौ चाहत्त है चित्तहम ॥ मनरु
चै देव सो कीजियैं इम असुरन उत्तर दियैं ॥ सो सुनि सुरवसर
सावन लग्यौ रावन हरसावन हियौ ॥ १ ॥ तच्छिन रजनिचरे
श राम सौमित्री मथ्थ दुई ॥ माया विरच्चित्त कियेरूपल्लालि॰
त्ताइ परत्त चुई ॥ गलद विरलरत्त धार प्रेत्त परियस्त्त नयनव॰
र ॥ जनक नंदिनी निकट कटितिधर कटे अग्नधर ॥ शिर॰

जुगल जोय जुग भ्रात के सजल नयन हुव जानकी ॥ सुधिर
ई कछू न सयान की बिसरि गई गति प्रानकी ॥ २ ॥ अहह
निमीनरनाथ नंदनी गदगद बयनी ॥ चुवत चारु चयनीर
फुल्ल नव नीरज नयनी ॥ स्वामि मरन भय भीत उच्चरत आन
नसीता ॥ हृदय दहन नहिं दहत मृत्यु ना पिच नहिं नीता ॥
हाराम रमन संकट रामन हा लछमन यह का भई ॥ अतिः
शूर वीरता धीरता राघर सब कित कौं गई ॥ ३ ॥ कविरुवा
च ॥ दोहा वृत्तं ॥ रामचंद्र शिर कमल ढिग बहु बिध करत
बिलाप ॥ हाप्रभु पीत महारमन विश्ववीर वर आप ॥ ४
॥ सीतोवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ सुललित सरयू नीर तीर वा
नार कुंज मह ॥ काम केलि कमनीय मध्य वर वदत वचन
वह ॥ सुमधुर अधर मदीय पान पीयूष भनत तित ॥ भयो
शरीरा परि पूरगा गयो सब उहिं प्रभाव कित ॥ जिम अंबर
बिन सत अर्क तम तिम करियैं अरिगन हनन ॥ मम देवि
देषि अति दुर्दशा मन मधि कछु कीजैं मनन ५ कविरुवाच
॥ दोहा वृत्तं ॥ शिर बिलोकि सिय उर विरह शोक मोह
अरु कोह ॥ प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित दुसह दुख्य संदो
ह ॥ ६ ॥ गवन मधुरालाप करि देत विपुल विश्वास ॥ ति
नैं सीप्रतन कन सुनत रहीन जीवन आस ॥ ७ ॥ सीतोवा
च ॥ षटपद वृत्तं ॥ चहत प्रान परित्याग कहत करुणामय

वचना ॥ पीतम प्यारे प्राननाथ कैं सी यह रचना ॥ उत्तर क्यौं
नहिं देत वदन वारिज मधुवानी ॥ नयन निहारत नाहिं
कहा मोकौं न पिछानी ॥ वर वि बुधवधू वल्लभ भये वि
सरि गये सुधि मोर सब ॥ आलिंगि मत्थ हंसा उडहि इहिं
अवसर अविलंब अब ॥ ८ ॥ कविरुवाच ॥ इम कहि
मस्तक कमल जबैं आलिंगन लागी ॥ गगन गिरा गंभी
र भई करुणा रस पागी ॥ नयलु नयलु यह सीय राम भ
पाल मुकुटमनि ॥ समर शिर सिन हिं वध्य तोर प्रियकदा
काहु छिन ॥ मत पर समात इहिं माथ कौं धार हु धिय निर
धार है ॥ हा हर हर हर हर भक्त कौ यह माया अवतार है ॥
९ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ असत्र काशवारी सुन
त रावन जुत जुग मध्य ॥ करि अंबर उत्पत्त नद्भुत कियनिस
क्रमरा अकथ्य ॥ १० ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ संजुत लज्जा हर्ष
भई तब जानकी ॥ इक शर्मा राकसी पियारी प्रानकी ॥ ता
सौं बूझत सीय यहै अद्भुत कहा ॥ परिहां प्रत्युत्तर वह देत
होय सकरुणा महा ॥ ११ ॥ शरमोवाच ॥ दोहा वृत्तं ॥ तून
हिं जानत जानकी रावन माया ख्यात ॥ भयजिन आनहु भा
मिनी जीवत राम सभ्रात ॥ १२ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ काहल
मर्दल आदि कुलाहल होत हैं ॥ सज्ज तुरंग महेसन नाद
उदोत है ॥ आकर्णाय आकर्णा विलोचनि वार्त हैं ॥ परिहां

रामसमागम सोर निशाचर आर्तहैं॥१३॥षट्पद वृत्तं॥।
विरम विरम कोपतें कहा अपमान विचारत॥रावन सत
नयबंधु विमर्दन रघुवर धारत॥इंद्रनील मणि नील राम
कोमल इंदीवर॥करिहैं त्वद धरपान कोमलांगी जु नि
रंतर॥सुनि शरमा के वर वचन इम जिय जानी पिय जिय
त हैं॥तनु विरह ताप मेटें सोम वै लज्जित हिय छिन किय
त हैं॥१४॥कविरुवाच॥दोहा वृत्तं॥पहिलें लखित॥
स्यांतम च कठिन पापी प्रान॥अभिप्राय यह आनि उर मैं।
थिलि लज्जावान॥१५॥इति श्री पिपलीद पत्तनाधिपा
ल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञापित कवि टीकाराम
गज गोविंद राम विरचिते श्री वर विलासे माया मस्तक।
निर्माणो नाम द्वात्रिंशोल्लासः॥३२॥कविरुवाच॥चं
द्रायणा वृत्तं॥भिन्न मार नाराच भयौ अघु रेश है॥पुनि।
अशोक वाटिका कियौ परवेश है॥परिवृत्त सुर सुंदरी अ
मित संदोह है॥हरि हौं हिय विकार सिय करन महा मन
मोह है॥१॥रावन उवाच॥षट्पद वृत्तं॥अस्मत चंड च
पेट घात स्वर्दंति पतित हैं॥कुंभ थ्थल अति थूल रक्त मु
तियन तिनि तित हैं॥तिन करि अर्चित अंघ्रि उरथ्थल अवि
रत इन के॥तव पद पंकज निकट नमत अलिनी शिर जि
न के॥जानकी अद्य अव लौं कियैं भामिनि भाग्यावलि भ॰

ती॥इक संग अहौ इत आप की सती चरित बल्लीफली॥
२॥लख मैथिलि मम मध्य इनैं शंकर शिर धारे॥पद संश्रि
त तें भये अवैं इत आइ तिहारे॥कहा अवग्या करन रंत
करभोरु विनय सच॥सुनि सुनि सभय सकोप भई परति
य लंपट बच॥वैदेहि वद तरे मंद मति शिवोत्तांगो निर्मा।
ल्य सव॥धिक तो हि तोर आनन न धिक है अतिशय अ
स्पृश्य अव॥३॥कविरुवाच॥दोहा वृत्तं॥सिय माध्वी
सुंदर वचन अच्छर अलप अमोल॥रच्छा करि है रावरी।
टार हि विघन अतोल॥४॥रावणउवाच॥चंद्रायणा
वृत्तं॥हूहे भीरंभोरु त्रिदश मुख म्लान हैं॥स्थाता स्वामी
रामन संगर थान हैं॥सैंना शाया मृगी विपद पुनि आप हैं
॥परिहौं यथा च्छर पर लोपि अर्थ थिर थाप हैं॥५॥षट्
पद वृत्तं॥काहि अवग्या करत यहैं दशमुख तव पद नत
॥जवैं किये शिर छेद तवैं मो प्रति इम उच्चरत॥ऐसें लंके
श छेदि हम कौं शंकर तैं॥मत मागहु वरदान नकछु हैं म
गन नरतैं॥अरु हरहू तें ऐसी कही गुह सौं पन जिन देउ
वर॥जठत उस क्रुद्ध शिर धरें शिव ब्रू हि विधि रावन अ
सुरवर॥६॥राम अर्ध चित सीय अर्ध चित रावन अंद
र॥आधे मैं विरहागि अर्ध शोषानल मंदिर॥शीतिदा
ह है अैक अपर अति उष्णा दाह है॥दग्ध करें ज्ञा भयौ।

जानकी तोर नाह है ॥ अब तास आस उर छंडियैं मो मधिः
मानस मंडियैं ॥ जिन देह दुसह दुष दंडियैं हिय दृढ हट ष
लु षंडियैं ॥ ७ ॥ मुग्धे मैथिलि चंद्र बिंब सुंदर मुषि सीते ॥ ।
ओषधि प्रान प्रयान प्रानरष प्रान पिरीते ॥ मन्मथ नदी मृ
गाक्षि असुन इश्वरी स्वछ अव ॥ मुंच मुंच मुंचाशु उर थि
त यह आग्रह सव ॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर राम
चद्र है अेक मुष ॥ हौं असुर नाथ निज थान थित इत गहि
है दशवदन सुष ॥ ८ ॥ जानक्यु बाच ॥ चुप रहु चुप रहु ।
असुर मृधा जल्पित नहिं कीजैं ॥ मेरे निश्चय बचन वीः
स श्रवनन सुनि लीजैं ॥ उत्पल श्यामल कांति राम भुज
भिरहिं कंठ मम ॥ विंशति पाणि कृपाण करहि कंतन
निर्दय तम ॥ इन उभय वात तैं तीसरी तीन काल मधि हो ।
हि ना ॥ वड विंशति गल्ल बजाइ कैं वचन सुनावहु मोहि
ना ॥ ९ ॥ दोहा वृत्तं ॥ मोर निरंतर ध्यान धरि राम लियौ म
द्रूप ॥ तैसैं तव कुल कदन कौं मम निरषहि तद्रूप ॥ १० ॥
कविरुवाच ॥ रावन भौ निसकांत तव सुनि वैदेही बैंन ॥ नि
ज मंदिर अंदर गयौ चड तन कित चित चैंन ॥ ११ ॥ कछुक
समय तित थित रयौ पैंन चैंन मन रंच ॥ पुनि सिय ढिग ।
जावन निमित्त विरचत महा प्रपंच ॥ १२ ॥ षट्पद वृत्तं ॥
नाना वादित वजत तुरग स्यंदन गज गज्जत ॥ कपिभट

कटक सुभुजास्फाल कोलाहल छज्जत ॥ रघुवर विजय व ।
जाय कियौ पूरित लंकापुर ॥ राम रूप गहि वन अशोक ।
प्रति गयौ उमगि उर ॥ लिय पंच पंच शिर कर जुगल निशिच
र पति केप करि कच ॥ जानकी हेरि हरषित भई मानि मनः
सि निज स्वामि सच ॥ १३ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ लंका भट रघु
नाथ वेष वर धरि लियौ ॥ जनकात्मजा समीप गौंन तूरन
कियौं ॥ नाम लेत विभिचार हीय जिहिं हटत है ॥ परिहां
रूप धारि रघुवीर कि दुर्घट घटत है ॥ १४ ॥ निरषि निर ।
षि निमि नृपति नंदिनी नैंन है ॥ रघुनंदन वर वेष बिराज
त अैंन है ॥ भामिनि भय तजि भई सहर्षित हीय है ॥ प ।
रिहां रुचि करि तास समीप गई शुचि सीय है ॥ १५ ॥ षट्प
द वृत्तं ॥ निरषि राम साक्षात झटिति कुच तटी भारनत ॥ ।
तदपि तूर्ण उथ्थाय अग्र चलि गई सीय तित ॥ प्राणनाथ
हौं धन्य रजनिचर मस्तक तजियैं ॥ शांत होय विरहाग्नि ।
गाढ आलिंगन सजियैं ॥ इम मिलन मनोरथ मैथि लीक
रन चही किंचित जवैं ॥ वह राम वेष धारी असुर भयौ क्षी
व तच्छिन तबैं ॥ १६ ॥ चंद्रायणा वृत्तं ॥ सीता सती समी ।
प निशाचर षंड है ॥ सत्वर भयौ विशीर्ण जास मरिा दंड
है ॥ इच्छा मात्र करंत यहै फल प्राप है ॥ परिहां शिव शिव
अंतर्धान असुर पति आप है ॥ १७ ॥ कविरुवाच ॥ कह श

जानकी तोर नाह है॥ अब तास आस उर छंडियैं मो मधि-
मानस मंडियैं॥ जिन देइ दुसह दुख दंडियैं हिय दृढ हट य-
लु खंडियैं॥ ७॥ मुग्धे मैथिलि चंद्र बिंब सुंदर मुखि सीते॥
ओषधिप्रान प्रयान प्रान रख प्रान पिरीते॥ मन्मथ नदी मृ-
गाक्षि असुन ईश्वरी रच्छ अब॥ मुंच मुंच मुंचाशु उरथि-
त यह आग्न ह सब॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर राम
चद्र है ओक मुख॥ हौं असुर नाथ निज थान थित इत गहि
है दशवदन सुख॥ ८॥ जानक्युवाच॥ चुप रहु चुप रहु-
असुर मुधा जल्पित नहिं कीजैं॥ मेरे निश्चय वचन वी-
स श्रवनन सुनि लीजैं॥ उत्पल श्यामल कांति राम भुज
भिरहिं कंठ मम॥ विंशतिपाणि कृपाण करहि कृंतन
निर्दयतम॥ इन उभय वात तैं तीसरी तीन काल मधि हो-
हि ना॥ वड विंशति गल्ल बजाइ कैं वचन सुनाव हु मोहि
ना॥ ९॥ दोहा वृत्तं॥ मोर निरंतर ध्यान धरि राम लियौ म-
द्रूप॥ तैसैं तव कुल कदन कौं मम निरखहि तद्रूप॥ १०॥
कविरुवाच॥ रावन भौं निसक्रांत तव सुनि वैदेही बैंन॥ नि-
ज मंदिर अंदर गयौ चड तन कित चित चैंन॥ ११॥ कछुक
समय नित थित रयौ पैंन चैंन मन रंच॥ पुनि सिय ढिग-
जावन निमित्त विरचत महाप्रपंच॥ १२॥ षट्पद वृत्तं॥
नाना वादित्त वजत तुरग स्यंदन गज गज्जत॥ कपि भट

कटक सुभुजास्फाल कोलाहल छज्जत॥ रघुवर विजय व-
जाय कियौ पूरित लंकापुर॥ राम रूप गहि वन अशोक-
अति गयौ उमगि उर॥ लिय पंच पंच शिर कर जुगल निशिच-
रपति के पकरि कच॥ जानकी हेरि हरषित भई मानि मन-
सि निज स्वामि सच॥ १३॥ चंद्रायणा वृत्तं॥ लंका भट रघु
नाथ वेष वर धरि लियौ॥ जनकात्मजा समीप गौंन तूरन
कियौ॥ नाम लेत विभिचार होय जिहिं हटत हैं॥ परिहां
रूप धारि रघुवीर कि दुर्घट घटत है॥ १४॥ निरखि निर-
खि निमि नृपति नंदिनी नैंन हैं॥ रघुनंदन वरवेष बिराज
त ऐंन हैं॥ भामिनि भय तजि भई सहर्षित हीय है॥ अ-
रिहां रुचि करि तास समीप गई शुचि सीय है॥ १५॥ षट्प
द वृत्तं॥ निरखि राम साक्षात झटिति कुच तटी भार नत॥
तदपि त्वरा उथ्थाय अग्र चलि गई सीय तित॥ प्राणनाथ
हौं धन्य रजनिचर मस्तक तजियैं॥ शांत होय विरहाग्नि-
गाढ आलिंगन सजियैं॥ इम मिलन मनोरथ मैथिली क-
रन चही किंचित जवैं॥ वह राम वेष धारी असुर भयौ क्षी-
व तच्छिन तबैं॥ १६॥ चंद्रायणा वृत्तं॥ सीता सती समी-
प निशाचर खंड है॥ सत्वर भयौ त्रिशीर्षा जास मरी दंड
है॥ इच्छा मात्र करंत यहै फल पाप है॥ परिहां शिव शिव
अंतर्धान असुर पति आप है॥ १७॥ कविरुवाच॥ कह श

रमा जानकीयहै नहिं रामरी ॥ रावन असुराधीश सुमाया
ग्नामरी ॥ सीयभई सविषाद उचारत वैंन है ॥ परिहांपरिहै
किमपहिचान सु नीरजनैंनहै ॥ १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हाहा
हा आकाशधरनि हा वरुनहै ॥ हाहावायो अर्क करहु मम
करुणाहै ॥ रहिहै कौंनप्रकार आत्मगतधर्महै ॥ ॥ ० ॥
परिहांपरिहै किमपहिचानप्रान प्रियपर्महै ॥ १९ ॥ कविरु
वाच ॥ तबवानी आकाश अमल ऐसीभई ॥ चतुर शिरोम
णिसीय सिंदाणीयह सई ॥ रामशराहतराच्छसेंद्रस्नसो
यहै ॥ परिहांचुंबहि मंदोदरीताहि अतिरोयहै ॥ २० ॥ नव
परिहैं पहिचान सियैं तव पीयकी ॥ शमन होयगी दुसहदु
ख्वत तिहीयकी ॥ ऐसैं सिय समज्ञाय गगन गिरचुपरई ॥
परिहांमैथिलि मानसमध्य सकलदुविधागई ॥ २१ ॥ क
विरुवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ रावन निजकेली सदन थितहुइ कर
तबिचार ॥ मयाप्राप्तरामत्व पुनि कियतस चरितप्रचार ॥
२२ ॥ रावणउवाच ॥ पापमूलप्रवृत्ती विदित निपटनिरुं
धनकीन ॥ कौंनसमय मधि क्लीबपन दुस्ट दुसह दुषदीन ॥
॥ २३ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ जनस्थानमधिभ्रांत कनक मृगतृष्णा
हतधिय ॥ वचनसु वैदेही तिसाश्रुप्रतिपद प्रलपित किय ॥
॥ कीनौं लंकाभर्तृ वदन परिपादी घटना ॥ मयाप्राप्तरामत्व
कुशलवसुता सुनिकटना ॥ इहिं मध्यश्लेयत्रय चीनहैप्र

यमकीन रावन रचन ॥ पुनि द्विंतिय रामप्रवचन पठत ॥
तृतिय काहु भिच्छुक वचन ॥ २५ ॥ इतिश्री पिपलोदयत्त
नाधिपाल रावतजी श्री दूलहसिंहजी विज्ञापित कवि
टीकाराम अंगज गोविंदराम विरचिते श्रीं वरविलासे राव
णप्रपंचो नाम त्रयत्रिंशोल्लासः ॥ ३३ ॥ अथश्रीहनुमन्ना
टके दशमोंकः ॥ कविरुबाच ॥ षट्पदवृत्तं ॥ गिरिसुवेल
थितकटक बीच रघुराज बिराजत ॥ सहित भ्रात सुग्रीव
बिभीषन जुत छवि छाजत ॥ लंकाधिप प्रति जाय जबैं अं
गद उत आयौ ॥ विभुवल्लभ वैदेहि वाहि निज निकट वि
ठायौ ॥ युवराज दूत वर्णन करहु है संधी उपकारिणी ॥
दशग्रीव निकट तुमरी गिरा भई अथवा नुपकारिणी ॥ १
अंगदउबाच ॥ अंगद जुग कर जोरि अरज कीनी इहिं री
ती ॥ अनुपकारिणी भई पुलस्त पोते पर प्रीती ॥ उदाहरण
हरिणांक भाल तिहिं गुरु भवभासत ॥ उक्षारथ अरुअ
स्थिमाल भूषन परकासत ॥ अरु अंग राग भल भस्म जि
हि लसत वस्त्र गजचर्म है ॥ ऐकालयस्थ धनपति सषाज
सगुरु तस शिष्यधर्म है ॥ २ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि विहसे रघुनं
द हुकम पुनि ताहि सुनायौ ॥ भो अंगद जुवराज समर वर
अवसर आयौ ॥ सबसैनिक सुग्रीव दीजियैं आयस ऐ
सैं ॥ रहैं शार्वरी बीच सकल सावध हुइ जैसैं ॥ पुनिप्रातप्रभा

करकेउदयसंगरउत्सवहैमहा ।। तबकहितथासुताराततन
यकपिनकपिनकपिबरकहा ।। ३ ।। सरसशर्वरीसमबरा
मलछमनदेहुभ्राता ।। कियौकटकमधिशायनतहांत्रिभु
वनजनत्राता ।। रावनपठइप्रबलप्रभंजनिनामरगकसी ।।
छाईछलबलसकलछकीमदअछकछाकसी ।। निर्भर
शयानलषिरामकौंतिछ्छनछुरिकाकरलई ।। गुरुभ्रम
रासुदर्शनचक्रलषिचकितवराकीतकिरई ।। ४ ।। कवि
रुवाच ।। चंद्रायणावृत्तं ।। तिहिंअवसरप्रतिबुद्धसुअंग
दवीरहै ।। प्रभंजनीअधिगम्यसुअधिकअधीरहै ।। पुन
र्गत्तुमुद्धत्तागर्वगतिगोपहै ।। परिहांतबअंगदउच्चरतबच
नसाटोपहै ।। ५ ।। अंगदउवाच ।। षट्पदवृत्तं ।। तिष्ठतिष्ठ
निशिचरीछिनकरहिजाउअत्रहै ।। फिरजावहुनिजस्वा
मिअसुरअधिपालयत्रहै ।। आईअंगदबाहुपाशमधि
आक्रंदतअब ।। हरिरागीसिंहाधीनतासकोहैत्राततब
।। इमकहिउहिंअभिमर्दनकियौभैरवरवचिक्कारकि
य ।। सोसुनतसकलकपिकटककेजागिउठेअकुला
यहिय ।। ६ ।। कविरुवाच ।। चंद्रायणावृत्तं ।। अकूपार
इवपारयामिनीपायकैं ।। प्रातहोतकपिव्रातचलेसबधा
यकैं ।। दोरर्दंडआस्फालकेलिअभिनीयहै ।। अरिहांउ
तपाटितसाटोपशैलकमनीयहै ।। ७ ।। दोहावृत्तं ।। गिरि

वरतरुवराधारिकरकरिकोलाहलचंड ।। लंकाकीनीआ
कुलितवानरओघउदंड ।। ८ ।। चंद्रायणावृत्तं ।। लंकाम
धिलंकेशउदयरविहोतही ।। सुनिवानरवाहिनीकुलाह
लश्रोतही ।। अमरषमुर्छितहोयसुभटबुलवायहै ।। परि
हांदीनौंउत्तकटकटकझटितिपठवायहै ।। ९ ।। लंकाच
लशुभशिषरमंचथितआपहै ।। मंत्रिमहोदरपुरोभागमहि
थापहै ।। रघुवरषरवाहिनीविलोकतमानहै ।। परिहांम
हिमामहदमहानकरतअनुमानहै ।। १० ।। जलनिधिथेल
तहुतेइतैंवानरसवैं ।। जातुधानकीफौजउतैंआईजवैं ।।
लीनैंझटितिउपारिवृच्छबहुवृंदहै ।। परिहांछिनमधिकि
यौनिकंदनिशाचरकंदहै ।। ११ ।। सचिवविभीषनदुरनल
गेकपित्रासतैं ।। त्राहित्राहिरघुवीरउचारतआसतैं ।। तव
तूरनहनुमानजितैंजावतभये ।। परिहांसकलदियेसमजा
यभेदगावतभये ।। १२ ।। लंकामधिलंकेशमहोदरतैंकहैं
कवआयेइतरामसमैंसुनिवोचहैं ।। अविदितआगमदि
वसमोहिरघुराजकौ ।। परिहांबैंदीवस्तनहिंकियौसमरके
काजकौ ।। १३ ।। सीयसमर्पहिरामयहीउरआनिकैं ।। मंत्रि
महोदरनामसुकहतवषानिकैं ।। वानरवरवाहिनीनयन
लषिलीजियैं ।। परिहांरामागमदिनकहतश्रवनगतकी
जियैं ।। १४ ।। महोदरउवाच ।। षट्पदवृत्तं ।। धरहिगईनम्र

धराधर धूजन लागे ।। क्षुभित अखिल अंभोधि करण ।। गि
र कूजन लागे ।। वर्ष आगम सम वैरि वधू वरषंत नयन पथ ।।
वाहिनि पद अच्छेय धूलि अछादित रवि रथ ।। लंकेश ।
आप जान्यौं न किम राम जैत्र यात्रा दिवस ।। ध्रुव धौल धा
म धूजन लगे शेष कमठ संकुचित अवस ।। १५ ।। सम
स्या ।। सूर्योदय के समय रुदन चकई कियौ ।। चंद्रायण
वृत्तं ।। जय प्रयान रघुनंद भयौ हौ जास मैं ।। अतिशय धू
लि कदंब उड़े है तास मैं ।। शापी प्रभ छत्र निहार रिनैन फासौ हि
यौ ।। परिहाँ सूर्योदय के समय रुदन चकई कियौ ।। १६
।। दोहा वृत्तं ।। सहायार्थ सुरपति दिये छत्र तुरग गज आ
दि ।। तिनकरि शुभ शोभित भये रघुवर राम अनादि ।। १७
।। कविरुवाच ।। पुनि रावन बूजन लग्यो कहहु महोदर कु
त्र ।। किहिं किहिं ढिग का का करत रघुवर दशरथ पुत्र ।। १८
।। महोदर उवाच ।। षट्पद वृत्तं ।। कहत महोदर ग्रीव लसत
सुग्रीव गोद मैं ।। अच्छ निहंता अंक अघ्रि विलसत वि
नोद मैं ।। चारु कनक मृग चर्म उपरि अखिलांग विराजत
अनुजार्पित धनु सज्ज सशर कर धर छवि छाजत ।। अति
तिच्छन अच्छी कौंण करि वीच्छमान तव लंकपुर ।। संद
त करण त्वदनुज वचन राम धीर रण वीर उर ।। १९ ।। बद्ध
सेतु भ्रूभंग वंदि आवेदित रघुपति ।। तव मातुल त्वचि वि

वृ अनुज मंत्र न दत्त श्रुति गति ।। वाण दत्त दृक्सर्त्थ लषन ल ।
षि कृत सस्मित मुष ।। ग्रीव बाहु सुग्रीव गोद समर्पित समस्त सु
ष ।। अरु अंगद के हनुमान के अंकन मैं अंघ्री उभय ।। लंकेश
निहारहु नयन तैं लसत राम निज जन अभय ।। २० ।। दोहा वृत्तं
।। गगन गिलित भूमी गिलित गिलित दशहु दिशा देष ।। स्व
वंग पुंज पीता सरित सीतापति भट पेष ।। २१ ।। समस्या ।। व्या
ध सदन सम लसत नभो मंडल इतैं ।। चंद्रायण वृत्तं ।। देव महा
उत्पात मध्यादिन पेषियैं ।। क्वचित मीन कहुं मेय वृश्चि दे देषियैं
।। कित लंवित कृत्तिका आर्द्र मृगशिर कितैं ।। परिहाँ व्याध स
दन सम लसत नभो मंडल इतैं ।। २२ ।। कविरुवाच ।। दोहा वृ
त्तं ।। साभ्यसूय रावन वदत अहो महोदर पश्य ।। नहि प्रताप
तप सहि सकत आफताब हू यस्य ।। २३ ।। रावन उवाच ।। ष
ट्पद वृत्तं ।। मम प्रताप तति तीव्र ताप संतप्त प्रभाकर ।। पूरब प
श्चिम जलधि वीच डूवत निसवासर ।। प्रविशति वारिधि म
ध्य नाथ वैकुंठ निरंतर ।। निवसत नित हिमगिरी शांति हित
सतत त्रिपुरहर ।। छिन मात्र कमल छोरत नहीं कमलासन ।
आसन कियौ ।। शिर छौंनि छत्र लिय शेष अहि कमठ तास आ
श्रय लियौ ।। २४ ।। इति श्री मत्सियलोद पत्तनाधिपाल रावत जी ।
श्री दूले सिंह जी विज्ञापित कवि टीकाराम अंगज गोबिंदराम वि
रचिते श्री वर विलासे रावण महोदर संवादो नाम चतुस्त्रिंशोल्ला

स:॥३४॥कविरुवाच॥चंद्रायणावृत्तं॥इतनैंअंतरमध्यसु
विपिनअशोकतैं॥शरमाचतुरलुकाइलंकपतिलोकतैं॥सि
यतत्रस्थविमानवीचबैठायहै॥परिहौंपीतमप्यारेरामदियेंद
रसायहै॥३॥निमिनृपनंदिनिनैंनकलितकमनीयहै॥रामरू
पअभिरामपरमरमनीयहै॥उभयनभयौमिलापसरसशोभा
भई॥परिहौंतरुतमालपरजायजथामधुकरिइ॥२॥दोहा
वृत्तं॥इमपियदरसकरायकैंशरमाचतुरसुजान॥पुनिअवि
लंबितजानकीपहुचाईनिजथान॥कविरुबाच॥वरवैवृत्तं॥
रामकटकवानरभटलंकनिहार॥करिउतप्रेक्षअलंकृतिब
चनउचार॥४॥वानरभटाऊचु:॥जघनकनकप्राकारारत
नदुकूल॥त्रिकुटाचलवनितजनुलंकातूल॥५॥कविरु
वाच॥रावनलंकामधिइमबचनउचार॥अहोमहोदरमंत्री॥
सुनियेंसार॥६॥रावनउवाच॥कुंभकरनसोवतहैजाहिजगाउ
॥निद्रारसिकनिरंतरउाहिंइतल्याउ॥७॥कविरुवाच॥कहित
यास्तुतिगवनेउसचिवसमस्त॥कुंभकरनसोवतजितनिद्रा
ग्रस्त॥८॥करि२अतिउच्चस्वरक्रूरपुकार॥करणरंध्रमुखधरि२
कियचिक्कार॥९॥तनकनसुनतनिशाचरहारेहीय॥तवतिन
प्रतिउचरतहैंताकीतीय॥१०॥समस्याँजिहिंगलकरंध्रमधिम
शकइववानरजूथप्रवेशकिय॥कुंभकर्णागनोवाच॥षट्पद
वृत्तं॥कहाकरतउपचारजगावनकुंभकर्णाहिं॥कियेसुवारंवार

शब्दकरिपूरणकरणहै॥कछुलीजैंविश्रामयाहिनिद्रानातजतहै॥
यहहूआठौंजामनिरंतरनाहिभजतहै॥अवअवरैंकवनउपायव
दसुनिकरिलेउविवेकहिय॥जिहिगलकरंध्रमधिमशकइववानर
जूथप्रवेशकिय॥११॥गजाक्रमणअरुघोरसचिवचिक्कारशब्द।
करि॥जवनजगयोवहकुंभकर्णतवशंकसकलधरि॥अवकिहि
विधजागिहैअमितउरकरतअंदेशा॥विनाजगायेंक्रूरकोपक
रिहैंलंकेश॥गंधर्वयक्षसुरसिद्धवरकिन्नरकामिनिकलित।
कृत॥वरगायनगीतामृतसुनतभौविनिद्रचैतन्यधृत॥१२॥क
विरुवाच॥सोरठावृत्तं॥उथ्थापनअवलोककुंभकरनवडवि।
कटवपु॥सभयभयेकपिलोकलखिमारुतिआशिषवदत॥
१३॥हनूमानुवाच॥षट्पदवृत्तं॥जिहिजृंभासंभारभीमभृकु
टीतटभासत॥कुंभकर्णअट्टाट्टहासव्यकोशविकासत॥अ
द्भुतवदनविलोकिचकितचितशारिपुन्यपद॥मृदुलमृणा।
लीमिथिलसुतासँगराजहंसहद॥सिदूरपूर्वगिरिशिखरशिरशे
खरश्रीरघुवरविमल॥भयविकटजुक्तकपिकटककेवरविभू
तिप्रदहोहुभल॥१४॥कविरुवाच॥लंकामधिजवकुंभकर्ण
सूश्रोथ्थितदरस्यौ॥कवलितकृतपलशैलजालतीव्रासवप
रस्यौ॥तृप्तनभयौनतथापिवचनमुखउचरतऐसैं॥गंगाजमु।
नासिंधुसुरापूरितहुवजैसै॥तवतृप्तिहोयमेरीकछुकइतनैंतैंका
होतहै॥जिमतप्तायसजलविंदुइवअधिकउद्योतहै॥१५॥कवि

रुवाच॥निजकटकछिथतरामनिरषिवपुअद्भुतऐसो॥लंकाशिर
जिहिंजानुअंगअंबरलौंतैसो॥वातात्मजनैंवदतमारुतेयहैक।
हाहै॥अयधातुसंघटितकिधौंयहयंत्रमहाहि॥नवजुगलहस्त
पुटजोरिकैंपवनपुत्रउच्चरनलग्यौ॥यहयंत्रनाहिमहराजकुं।
भकरनसोवतजग्यो॥१६॥चंद्रायरणावृत्तं॥कुंभकरनलंकेशनि
कटजवआपहै॥सियअर्पहुयहअभिप्रायउरआपहै॥जउआ
यसछितिपालप्रचरसर्वज्ञहै॥परिहांशास्त्रदीपसंचारकरननृप
सर्वहै॥१७॥भ्रातृवचनसुनिकहजथार्थलंकेशहै॥निस्संशय
वचशास्त्रसुदृष्टअशेसहै॥तदपिनतजिहौंसियायहेअभिप्रायहै॥प।
रिहांवदतबचनसावग्यसुनावतनायहै॥१८॥रावणउवाच॥षट्पद
वृत्तं॥फटिकाचलउच्छिमशिखरश्रेणीधरंगद॥प्राप्तप्रतिष्टापरमपी
नतरभुजबिलसतहद॥समरसुरासुरभयदकिनहुपावतनपराजय॥न
रबानरहैकहाछिनकमधिहोयमोरजय॥अनितोरभुजाडंबरवृथाभ
ईतदाशशिथिलसब॥अतिनिद्राबाधतहैबुमैंजावहुनिद्रानिलयअब॥
१९॥कविरुवाच॥कुंभकरनहुइभीमभनतभारतीभयंकर॥वलवदि
छियशोकशल्यसंपूरणपरिहर॥पावहुनाहिंबियादरहहुकल्यानस
माश्रित॥अहमहमिकयाअहंननकनहिंतुहितजिहौंइत॥कल्हकालवि
धाताहैकहाकाअरिकुलभयकहायम॥यमदूतकहाकोरामहैकेकपींद्र
रणाकुपितमम॥२०॥चंद्रायरणावृत्तं॥सुनिरावनसानंदवचनउच्चरतभ
यौ॥सुभटसंगवललेउपराक्रमप्रबलयौ॥रणांगणअवतरनुवच्छउ[illegible]

च्छाहतैं॥परिहांअनिलकीरयेंहीयरिपुनकेदाहतैं॥२१॥कवि
रुवाच॥षट्पदवृत्तं॥कुंभकरनसाक्षेपजथारथतिंहिविधकी
नौं॥उरअलिखअमितउच्छाहसमरवरमारगलीनौं॥जिनभात
हुकपिमल्लममयहुइकैंसंगरतैं॥कुंभकरननहिंभिरतकदा
चितहूबानरतैं॥जउलघुजलधरकोपाततउस्वल्पमरितन
हिंसंचरत॥पुनिमशककुडुंचनकेशरीकबहुनिकंदननहिं।
करत॥२२॥ ॥इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री
दूलहसिंहजीबिज्ञापितकविटीकारामांगजगोविंदरामविर
चितेश्रीवरविलासेकुंभकर्णरणांगणावतरणोनामपंचत्रिं
शोल्लासः॥३५॥कुंभकर्णउवाच॥षटपदवृत्तं॥नहिंवाली
सुबाहुनखरत्रिशिराअरुदूषन॥नहिंताटकअभिधानतथा।
तालांकरूषन॥नाकछुसेतुसमुद्ररुद्रधनुनामुहिमानौं॥कुं
भकर्णममनामकालमूरतिपहिचानौं॥रेरामप्रतापानलकव।
लवीरमौलिनरशल्ससम॥संग्रामभूमिविचरतफिरतकोपि।
तुलतनहितुल्यमम॥१॥कविरुवाच॥तदनंतरउत्यत्यगग
नमधिअविलंबितअति॥वाहुमूलगहिलियोलपकिसुग्रीव
प्लवगपति॥पुनिभुजकरिरविकंठदेशदृढपीडितकीनौं॥कुंभ
कररणासानंदलंकपुरमारगलीनौं॥कपिराजतूर्णभच्छनकि।
येकर्णभ्राणरुअनिहरषिहिय॥कूर्परप्रहारकरिउदरमधिपुन
रागमनिजशिबिरकिय॥२॥दोहावृत्तं॥रचतनिरंतरशूरपन
शूर्पनखाभलभ्रान॥भगिनीसमअबइतउतैंआवतजातलज्ज।

त॥३॥आननकहावतायहौंकपिलैंनाककटाय॥जगमधि
जीवननैंजवहिलीनौंहियौहटाय॥४॥कुंभकर्णविनकर्ण
कौंवहुरिभयौबिननाक॥अवजीवननहिंउचितहैउचरतगदग
दवाक॥५॥घटपदछंद॥लंबनिसासेडारिबिलोचनवारिवहत
हैं॥स्वात्मजलांजलिदेयचपलचितमरणचहतहैं॥छेलोकि
यौमिलापहोयसकरुणलंकातें॥गहित्रिशूलकरचल्यौस
मरविराहतशंकातें॥क्रोधांधकालमूर्तीनयनप्रलयानलअंग
रगरण॥संछिन्नघ्राणअरुकर्णजुगकुंभकर्णअवतीर्णरण
॥६॥तिहिंविलोकिसंत्रस्तचित्तकपिभूरिभयेंहैं॥जीवितआश
धियधारिकितकगिरिकुहरगयेंहैं॥केतेप्रचलितचरणवात
आकाशउडेंहैं॥भूमरणचंडदोर्दंडपरसपुनिपुहविपडेंहैं॥मु
खघ्राणरुधिरचयवमततितप्रानधरतसंकष्टहैं॥फूत्कारक
रतअतिवारबहुमनौंमहाअहिदष्टहैं॥७॥कविरुवाच॥त्रिन
यनदत्तत्रिशूलतड़ितकोटीप्रभपूरन॥मनौंकेतुसंहारकियेंउ
च्छेपनतूरन॥घोरप्रज्वलितमहातार्किनितउरतारापति॥च
पलचलायौचंडप्रानहारकअद्भुतगति॥जानकीकंतजानत
सबैंप्रारकरिछेद्यौवीचतें॥सुग्रीवसखानिजप्रानसमवचोनि
शाचरनीचतें॥८॥गहिमुदगरकपिकटकवीचघटकरनम
हातुर॥क्रोधानलअरुजाठरागिकरिभयौक्षुधातुर॥अेककव
लमधिलियेकोटिवानरअतिउत्कट॥बदनमध्यराखिसद्य
सदनकृतभटअतिउद्भट॥कपिचरनपीसिडारेअमितकर

नरध्रकेतेकढे॥पुनिपकरिपकरिचर्वितकरतदाविदाविदशन
नवढे॥९॥सव्यस्वकरकरिसांद्रशिविरकपिकटकविदारन॥
विद्यमानवरविपुलवीरवानरवनवारन॥ध्रानकरनकौंहरन
हारसुग्रीवविलोक्यौ॥कुंभकर्णअतितूर्णताहिउत्तरकरतो
क्यौ॥ममवपुविरूपकरतायहेमहावैरमनलायकें॥लेच
ल्यौचपललखिगगनमगमहाधूर्तधुवधायकें॥१०॥अंगद
लखिनिजतातदुष्टलेजातलेपटिकैं॥कुंभकरनप्रतिगयौवीरउ
झटितिझपटिकैं॥गरुड़पाशकरिमुविनिपातकियअरि
अतितूरन॥कछुसचेतसुग्रीवहोतउतनैंउहिपूरन॥पापिष्ठ
तनकबिसरतनहीखलुषिसानपनषीजकौं॥नरसिंहपा
शबांधेजुगलकाकाअवरभतीजकौं॥११॥दुहुनवद्धलखि
नीलप्लवंगनिजअनलरूपकरि॥कुंभकरनमुखकंधमौ
लिश्रुतिघ्रानउदरभरि॥तिम्रज्वालकियदाहकुपितव्हैस
कलअंगजिहिं॥बिकलभयौक्रव्यादकुटिलखलकुंभकर
नतिहिं॥सुग्रीवअवरअंगदउभयवानरेंद्रशोध्यिततदा॥
कपिकटकवीचआनंदअतिजुगलजोयछायोजदा॥१२॥
कविरुवाच॥लंकावरशिखरस्थनिहारतरावनरनकौं॥भ्रा
तजरतलखिसुधावारिवरसायेघनकौं॥शीतलभयौशरीर
सचेतनकुंभकरनहै॥भच्छनचहनलनीलजथाअहिजुग
सुपरनहै॥गहिलियेलपकिदुडुकपिनकौंसबवानरदेषत
रये॥जवजांबुवानजर्जरजरठउग्रवेगआवनभये॥१३॥जां

तुवानअतिउग्रवेषविपदाविदरनहै॥निजभुजगुरुमदजुक्तनि
रंतरकुंभकरनहै॥जानुवंधाकियकंठगाढरचिअसुरगिरायो
जिमिगिरींद्रदंभोलिनीलनलजुगलकुटायौ॥नवरिच्छराज
शिरउपरैंसुमनवृष्टिकियमरुतगन॥करिक्रोधनिशाचर।
नूरगातिहिंकियौगुल्फआघाततन॥१४॥आलच्छितरघु
वीरसलछमनचलेमरुतसुत॥कालांतकसमशत्रुविशंकि
तउरजाउतउत॥समरथानअवतीर्यवार्यवहुधैर्यधुरंधर।
रम्यरुद्रअवतारउग्रकपिकटकपुरंदर॥अतिअरुणाअच्छ
नरसिंहसमनिजकरपरगिरिवरलियैं॥किलकलशकररा
विकररानिकटविकटसुभटहरषतहियैं॥१५॥पवनपुत्र
यदुपारिगपक्षपर्वतछबिकैसैं॥मेरुशिखरपरसरसशोभ।
मैनाकजुजैसैं॥कुंभकरनकेकरनमंजुमुदगरसोहनहै॥
मनुमंदिरगिरिअग्रअजननजनमनमोहतहै॥कलपांतस
मरमधिमरुतसुतगिरिगिरायशिरऊपरैं॥मुदगरप्रहारक्र
व्यादकरिभूधरपटक्यौभूपरैं॥१६॥दोहावृत॥आंजनेय
करिकोपउतअद्भुतदइचपेट॥द्रुतमुदगरक्रव्यादकौलिय
लांगूललपेट॥१७॥कविरुवाच॥षट्पदवृतं॥इहिंअंतर
मधिरामविशिखसंधानकियेहैं॥इंद्रदत्तशरजुगलतिछ
नतिहिंसमयलियेहैं॥कुंभकरनकेनिधनकाजरनवीच।
चलाये॥एकहृदयअरुद्वितियविशिखशिरछिंनकराये
नभनमोनमोजयजयधुनीसबसज्जनजनशरनभौ॥लं

केशबाहुबलहरनभौ॥कुंभकरनकौमरनभौ॥१८॥मरु।
तिचंडचपेटगिरयौमस्तकतुहिनाचल॥जिहिंकपालज
लमध्यडूबिहैभीममहावल॥पुनिक्रव्यादकबंधपुच्छ
गहिगगनउडायो॥चल्यौगयौआकाशपेथपारनको
उपायौ॥आनंदभयौकपिकटकमधिदुसहदुरितदुखद
रनभौ॥लंकेशबाहुबलहरनभौकुंभकरनकौमरनभौ॥
१९॥दोहा॥रामविर्यअबिलंविउरबरनतलछमनभ्रात॥
उच्चस्वरगंभीरगिरकहकबंधवलुख्यात॥२०॥लक्ष्मण
उवाच॥षट्पदवृतं॥वाजूबिबुधविमानदूरलीजैंरविस्यंद
न॥असुराधमअधरांमउच्चारयौअंजनिनंदन॥रेरेवान
रवीरअसुरवयसुनहुबचनमम॥रणांगणपरिहरहुर
हहुएकांतचहतहम॥जनुअंजनाद्रिप्रतिनिधिअवधि
विस्मापकजुअबंधहै॥आतंकहेतुलंकागिरतकौंमक
रनकुकबंधहै॥२१॥कविरुवाच॥ननुतैंभोउत्क्रांतप्रवर।
सुरवधुलियभुजमरि॥अवारदादिसंगीतमधुरमृदुसुरजनरव
करि॥नहिंविमानआरोहकरतजउकृष्णमारगहै॥अभिला
षाउररहीभर्तृपरित्राणप्रारणहै॥जिहिंपुनरपिसमरअकाल
सतधुवसंगरमधिधीरहै॥किमशिवशिवबरणिनकौंकुंभक
र्णवड्वीरहै॥२२॥लखिलंकाशिखरस्थबदनरावनविसमय
सह॥मरुतचंद्रआदित्यइंद्रमुखक्रतुभुजजेंहरह॥उपसर्पत।
अनुदिवसभयसंततजिहिंमोपुर॥सकलसुरासुरकरिअजेय

अविरतलंकापुर॥कियकोपविकंपितअधरनटपुटवानरभ
टविकटकरि।अतिसमाक्रांतत्रासितभईशिवशिवशिव।
दशमुखनगरि॥२३॥इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालराव
तजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामांगजगोविं
दरामविरचितेश्रीवरविलासेकुंभकर्णवधोनामषड्त्रिंशो
ल्लासः॥३६॥अथहनुमन्नाटकअंकादशेंकः॥कविरुवा
च॥षटपदवृत्तं॥रावनभयौसकोपतूर्णसपूर्णसैंनसह॥
समरजग्यअधवर्युइंद्रजीतअंगजकियवह॥कुंभकर्णव।
धअकनिभयोआमर्षविमूर्छित॥सीतापतिबंधबद्धलच्छ
अवतीर्णसमरजित॥इतलच्छमनधनुगुनसज्जकरिटंग।
त्कारधरनीगगन॥आपूरितकोपानलप्रबलज्वालाबलि।
मालामगन॥१॥सुनासीरजितनितैंलषननासीरअग्नइत
॥लंकालंकापालसहितकियकरनकवलचित॥ ॥मेघ।
नादलखिलच्छवचनमुखउचरतअैसैं॥अल्पहुकारन
नाहिंकोपकरियतइतकैसैं॥थिरशुद्धबुद्धिबिनहेतुनहिं
कृपाक्रोधकिलकरतकव॥कृतसंचितचंचलचितनरनेह
कोहविनकाजसव॥२॥हरिविजहतसंत्रासभिन्नश्रकेभकुं
भथल॥लज्जापावतविशिषनिहारेवपुषछुद्रबल॥तिष्ठ।
तिष्ठमोमित्रित्वमपिनहिंक्रोधपात्रहै॥मेघनादममनामवज्रम
मअखिलगात्रहै॥भ्रूभंगमात्रनियमितजलधिरामचंद्ररघुबीर
है॥अतितूर्णताहिढूंढतफिरतवहममसंगरधीरहै॥३॥अंजः

निसुतसुग्रीवनलांगदनीलप्रमुषकपि॥घनघमंडथितमेघनाद
नहिंलषतकिंचिदपि॥दियोवरफबर्षायबिपुलकियअंधकारहै
करतघोरशरघातनिरंतरवारवारहै॥अधिरूह्यमहदमायासुरथ।
नभथलथितगंभीरगति॥करिकालजलधिधुनिगर्जनारावनवा।
लकरालअति॥४॥दोहावृत्तं॥जथामेरुमंदरगिरीवासववज्रनि
पात॥नागपासमरबद्धतिमरामलखनजुगभ्रात॥५॥समस्या॥
चंद्रउदितचितचकितमुदितमननिर्ततचकई॥रोलावृत्तं॥इहिंअं
तरसधिपूर्ववैरसुमरनकियकोकी॥सरवरथितवहदशाभ्रातजु।
गनयनविलोकी॥शापतहैंमोममदयितरामरावनिहततनकई॥चं।
द्रउदितचितचकितमुदितमननिर्ततचकई॥६॥षट्पदवृत्तं॥
वंधनदशरथनंदअकनिरावनआयसदिय॥सुमनविमानवि
ठायवत्ताबहुपियदेवरसिय॥कहितथास्तुलेगईनिशाचरिशार।
मातितकौं॥रामलखनजुगवंधुवधथितरगमाधिजितकौं॥द्रुत
दंषिदुर्दशादुहुनकीजानकिजियसोचनलगी॥वरवारिजसेजुग
नयनतैंनीरनिचयमोचनलगी॥७॥भार्गवगौतमचवनशिष्ठक
श्यपवशिष्टमुनि॥लोमशकौशिकप्रमुषगिरामुषजौंतिषमतः
चुनि॥सुनिसमीपआपकेमगनचूचुकजिहिंतियतन॥संततसध
वारहैगहैकबहुनविधवापन॥तेत्रिकालग्यसर्वग्यरिषिसत्यव।
चनवक्तासवैं॥तिनआशिषकिममिथ्याभयेउरअचरजआवत
अबैं॥८॥चंद्रायणावृत्तं॥हाप्राणेश्वररामफुरतसबअंगहै॥वा
हुनयननहिंअनृतअशोकअभंगहै॥ननकनाहिंसुखदेतमा

धुरीहस्तिमैं॥परिहैंभुजविलासलुकिरह्यौकहोकिहिंसृष्टिमैं॥
॥९॥मातताःतअनुजातरुअग्रजमानिला॥मनसितनकमुदले
नसकलसन्मानिता॥पावतपरमप्रमोदकिचिंदाश्वासिता॥प
रिहौंत्रिमिरमणीरमणीयरमणविश्वासिता॥१०॥षट्पदवृ
त्तं॥प्रत्युत्तरनहिंपठलप्राणपतिपीनमप्यारो॥हाहालच्छ
नवच्छमोरअपनयननिहारो॥रुष्टभयेहोकहाकछुकउत्तर
चाहतहम॥भूरिभूभ्रमणकीनकज्जममभयोभूरिश्रम॥अ
बस्वर्गसकलअवलोकिवेसिद्धकरतकिमभ्रातजुग॥दुर्द
शादेखिदुहिवीरकीउरअंदरअतिशायितरुग॥११॥लखि
हेनहिंदिविलोकमोहिविधिलोकसिधैहे॥बिनाकियेमम
सोधउभयकितहुनथितिपैहे॥कीजैंप्रानप्रयानस्वर्गमधिसं॥
गमदीजैं॥कहानिहारतराहप्रानपतिमारगलीजे॥लखिइम
अचेतअतिजानकीशरमासमजावततबै॥वैदेहिवदतकहवाव
रीजुगमूर्छितजागहिंअबै॥१२॥दोहावृत्तं॥सुनिसरमाशुचिव
चनसियपुनिनिजनाहनिहार॥शोचविमोचनकीनकछुलंब
निसासडार॥१३॥रावनकेभयभीतव्हैशरमापरंसुजान॥वः
नअशोकमधिलेगईसियसहसुमनविमान॥१४॥ ॥इति
श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञा
पितकविटीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासे॥
जानकयशोकवनपुनरागमनोनामसप्तत्रिंशी ल्लासः॥३७॥
कविरुवाच॥मनोहरवृत्तं॥हाहाकारहोयरह्योत्रिभुवनम॥

ध्यमहाकीनौकर्मघोरघननादछितिछायोहै॥सुपयोहैसुप
र्णशोरजाकोविभुभौनवीचक्रोधानलअंगअंगभूरिभभका॥
योहै॥पच्छनपवनव्रच्छलच्छनअंगदउडेनमीचरतोमजुक्तरा
वनित्रसायोहै॥स्वामीहिजिवायोसुधावारिवरसायोसद्यवि
नताकोजायोवेगधायधायआयोहै॥१॥दोहावृत्तं॥रामकृ
पाअवलोकतैंभयेसचेतसमस्त॥मेघनादसंकटसहिततीनता
पतनुत्रस्त॥२॥षट्पदवृत्तं॥विरच्योपरमप्रपंचरचीमायावैदेही
विलपतमुखहारमणप्राणप्रियपरमसनेही॥भोप्रवीरपर्यंतु
पठतप्रवचनमुखपापी॥कीनौंखडगप्रहारमायमैथिलिसंतापी
करिद्विधाताहिपुनिगृहरणकरिगगनमार्गरथमाधिगयो॥त्र॥
स्नोपदेशगिरिनिकुंभिलवटमूलावटथितभयो॥३॥संगरच
त्वरबीचनिधननिरख्योमायासिय॥उरवीतल्लगिरिरामपरम
गुरवीमूर्छालिय॥रघुवरनिरखिसशोकमरणदुहिताजान्यौं
जब॥महिहियभयोविदीर्णगोदलीनेराघवतब॥प्राणप्रवनपुर
णअजनित्यतुमस्मरणरूपनिजकीजियैं॥इमअवनिउचा
रतरुदनकरिसोश्रवणनधरिलीजियैं॥४॥विकचनलिनि॥
निर्मुक्तमंजुमलयजरसजलकरि॥सिंचतधाराधारिशांतिहि
तशुचिरामोपरि॥सौमित्रीपुनिपठतकछूनिश्चयननिहार्यौ
जामदग्निमुनिशापमुग्धपनप्रगटप्रचार्यौ॥लखिचषचकई
सानंदहुवशापसकलसप्रमाणहै॥गुरुआज्ञापालनधर्मवि
धमेससमस्तअप्रमाणहै॥५॥दोहावृत्तं॥मिल्योकछूनाधर्म॥

फलप्रगटप्रापफलपेष॥इमकरिकैंआलापकछुबिलपत
लषनविशेषई॥चंद्रायरगाहत्तं॥कोपनयनइकलषत्तके
मलिनीकांतहै॥अपरअच्छिप्रच्छेपविरहपतिस्वांतहै॥
अस्तसमयरविपेषिचकईगतिअसभई॥परिहांरुद्रक
रुरारसजुगलरूपचयछबिछई॥७॥षटपदवृत्तं॥तत्र
निकुंभिलअद्रिमूलनिग्रोधअवटमैं॥अतिसत्वरघन
नादविभीतकसमिधसुथटमैं॥अर्धचंद्रआकारकुंडनि
जपलआहुतिदिय॥पांसुजपरयअर्द्धकढ्योलषिमोहर
षितहिय॥हनुमंततूरणितित्तजायकैअसुरजग्यभंजन
कियौ॥भौमुधामनोरथदुष्टकौसिद्धकाजकछुनालि
यौ॥८॥ररणांगणमधिअच्छलगायौलच्छस्वच्छम
न॥प्रानितैंलियदशरत्थनृपतितैंलियौलच्छमन॥स्मरन
कियौसंहारअस्त्रसानंदबचनकह॥रेरेमायारथारूढसु
नमेघनादयह॥करिछिन्नभिन्नमायाविपुलतोहिपठैहौं
प्रामनपुर॥व्हैसावधानसंगरसजउअसुरहूजियेंगाढउर॥
॥९॥दोस्तंभनआस्फालैंकोलिफुटविकटध्वानकरि॥ध्व
स्तमहातमघोरप्रबलसंहारअस्त्रकरि॥धनुसंयोजनके
लिपानिआहतपुहुवीतल॥धीरबीरक्रोधांधउदगिरत
अनलहृगंचल॥सौमित्रिछेदिघननादशिरहीरकमं
डितमुकुटजुत॥लंकेशपायारिगपुटजुगलमधिअर्पणा
कीनौंआयउत्त॥ ॥इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावत

जीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामांगजगो
बिंदरामविरचितेश्रीवरविलासेइंद्रजीतवधोनामाष्ट
त्रिंशत्तमोल्लासः॥३८॥अत्रश्रीहनुमल्लादकद्वादशोंकः॥
॥षटपदवृत्तं॥सुतनिजनिधननिहारनिशाचरनाथकुपि
तअति॥अरुणावरणदशवदनवदनदशनयनविशततति
अेकवीरघातिनीशक्तिप्रच्छेपकियोहै॥ललितलच्छम
नवच्छस्वच्छलषिलच्छलियोहै॥हनुमंतगहिलईबीच
मैंजलनिधिमधिछेपनकरी॥रावनसकोहव्हैसद्यतबवध
विरंचिइच्छाधरी॥१॥शक्तिग्रहनबिलोकिमहामनकोपछ
योहै॥चतुराननवधकरनदशाननउदितभयोहै॥सभयभ
यौपरमेष्टिसुवननारदसुमरयौतब॥सुररिषिहाजरहोयह
स्थदोनौंजोरेजब॥विधिवदनवच्छयहमरुतसुतअबलौंसं
गरहैथित्त॥इकवीरघातिनीशक्तिकीशक्तिकछूनाहिंचल
ततित्त॥२॥शक्तीभयैंअशक्तयहैरावनमुहिमारत॥इहिं
दुषकरिभोवच्छहेरयौअतिशयआरत॥स्थानांतरलेजाउ
मरुतसुतकौंसुनसत्वर॥करिलैहैंनिजकाजइतैंरावनरन
चत्वर॥निजजनकमरनभयमानिमनमुनिनारदरनथलग
ये॥पटुपवनपुत्रतिहिंथानतैंतूरनलेजावतभये॥३॥करि
कृतांतसमक्रोधज्वलितहृदयानलरावन॥राच्छसेंद्रअति
उग्रवेषवैरीविद्रावन॥शक्तिग्रहनकरिपादअधिकउरभ
यौअमर्षित॥उग्रमंत्रअभिमंत्रिनिधनसौमित्रिचहतचित

गहिचपलबलाईमाँगमोलच्छवच्छवेधतगई ॥ पुनिभेदिभू
मिमंडलसकलकूर्मराजभेदतभई ॥ ५ ॥ औढउगनगतेजशल
यसमुदितअतिकोपित ॥ रावनभुजतेंचली चपल गर्जत तर्जत
तित ॥ दीपित कियदशदिश लच्छवरवच्छ विदारत ॥ हाहा
कारप्रलापसकलजन बदनउचारत ॥ कृतकम्पदेवदैत्येंद्रस
बभूयमानब्रह्मादिसुर ॥ इकबीरघातिनीशक्तिवहप्रविशत
पतीभुजंगपुर ॥ ५ ॥ दोहावृत्तं ॥ इहिअंतरआयेउतैंस्यामनांतर
तैंतूरर्ग ॥ हनूमानहेरतभयेकरुनमगनसंपूरर्ग ॥ ६ ॥ षटपद
वृत्तं ॥ पूरर्णपश्चात्ताप विभीषनबलकृतपेषत ॥ छीननेजसुग्री
व रिच्छपतिमूढविसेषत ॥ भयेअगोचरसहश्रसकलमाया
मृगभामत ॥ शक्तीप्रौढप्रहारलषनमूरच्छाविकासत ॥ रघु
राजरामदिलपतविविधअगिछायोकरुणाकटक ॥ थिर
होयसबैंथितरीजियेइमउचरतहनुमतहटक ॥ ७ ॥ भयेसबै
रीसमय विभीषनचलेसमरमाहि ॥ कोसजीव निर्जीवनिहा
रतज्वलदुल्मुकगाहि ॥ शक्तिज्वालप्रज्वलितमूरछितलषे
सकलकपि ॥ जांबुवान उपविष्टएक अवलोक्यो जद्दपि ॥
असुरेशनिहारतरिच्छपतिधरिधीरजबूजतभयो ॥ हनुमंत
विपुलवानरप्रवरकहहुकुशलजीवतरयो ॥ ८ ॥ दोहावृत्तं
सुप्रजप्रभंजनअंजनीजिहिंजायेंजगजोय ॥ कुशलसुनतक
पिप्रवरकोंममहियहर्षितहोय ॥ ९ ॥ विभीषण उवाच ॥ नसु
ग्रीवमैंरामभैंनहिंअंगदमैंनेह ॥ हनुमतमधिदर्शितकियो ।

हियथितसरससनेह ॥ १० ॥ जांबुवानुवाच ॥ जोजीवतदुर्धरद
वहहतबलअहतप्रमान ॥ अरुनहोयहनुमानतोजीवतमृत
कसमान ॥ ११ ॥ जांबुवानसुतविभीषनतूरनपहुंचेतत्र ॥ अग्र
भागथितमरुतसुतबिलपतरघुपतियत्र ॥ १२ ॥ ॥ इतिश्री ।
पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित ।
रत्नपुरस्थकविटीकारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरवि
लासेविभीषणजांबुवानसंवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः
॥ ३९ ॥ कविरुवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ रामनिरखिलंकेशचयप्रती
तीषनकुवपीर ॥ षिन षिन षिनविलषतअधिकधरततन किहुं
विधिधीर ॥ १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ चंद्रायणावृत्तं ॥ भ्रातदिवंगत
तोरसंगममप्रानहैं ॥ सोसुनिकरिहैंसीयसुविदिवप्रयानहैं ॥ ग
हिहैंगिरिकपिकटकषटकहियहायहैं ॥ परिहौंअहेविभीष
नवीरकहोकितजायहैं ॥ २ ॥ भोजनमोहिकरायफलादिकपे
लहैं ॥ तदनंतरतुमगहेअनुजकीगैलहैं ॥ पुनिपिवायपानीय
तदनुपीवतरहे ॥ अरिहोंकिमकीनोंक्रमभंगक्योंनजीवतरहे
॥ ३ ॥ मोकौंप्रथमसुवायफेरसोवतरहे ॥ क्रमनतज्योकिहि
ठौरसुभगजोवतरहे ॥ अवैंस्वर्गसुखकाजअनुजआगेगये ॥
अरिहौंहमइतअगल्लीराह चित्त चितवत रये ॥ ४ ॥ गहौंस्व
र्गसुखसकलत्रिविष्टपजायहैं ॥ इतैंतेंविनसिहैंरामभयोअस
हायहैं ॥ तुमरीगतिविपरीतपेषिसंतापहै ॥ परिहौंप्रगटकि ।
योंसापलभावकिमआपहे ॥ ५ ॥ तारसुरनकरिसबैंतबैंरोवन

लगे॥रामचंद्रमुखचंद्रसकलजोवनलगे॥भयेविपुलवेहा
लकछूनहिंअटकैहै॥परिहांछायरह्योकपिकटककरुरा।
रसकटकहै॥६॥षटपदवृत्तं॥पुनिपुनिरोवतरामकहतहा।
वच्छलच्छमन॥सेवनकियौमैंदेवअहनिशमेरस्वच्छमन
पवनपुत्रधिक्कारतोहितजिभयोपराङ्मुख॥तिंहितैंसंगरम
ध्यशापभौअतिदारुरादुख॥ममअनुजभ्रातउद्धतधनुख।।
इहिंररा होतौजोभरत॥तोशक्तिपातघनघाततैंसौमित्रीकव
हुनमरत॥७॥दोहावृत्त॥मुधाजुधारनशस्त्रभरजोवनवृथा
हमारा॥तजनचहतसविशिखधनुख॥हियनिर्वेदनिहार॥८
कविरुवाच॥चंद्रायरगावृत्तं॥निजअपराधनिहारित्रपास
करुराछये॥साम्यसूयभुजभरतसवलसुनिकेमये॥किंधौ
गारुढस्थानहुमसिहनुमंतहै॥परिहांपुरीभागथितहोयव।
चनउचरंतहै॥९॥षटपदवृत्तं॥श्रीहनुमानुवाच॥सातअंबु
निधिदिशादशेंगिरिगोत्रसप्तमित॥भुवनचतुर्दशप्रथिवि
आदिनभमंडलइकइत॥अेतावतपरिमारामात्रब्रह्मांड
कटकहै॥इनमैंतौंकितजायनिशाचरनीचअदकहै॥वि।
भुविनयकरतकरजोरिजुगअधिकवदतअनुचरलजत
॥जितजायतितैंतकिमारिहै॥आपकहाकार्मुकतजत।
॥१०॥कविरुवाच॥चंद्रायरगावृत्तं॥वचनप्रभंजनसुनसु
नतरघुवीरहै॥गदतगिरागंभीरिमहाररधीरहै॥श्रीराम
उवाच॥मारुतिकथनयथार्थजदपिसवतथ्यहै॥परिहां

जातुधानजागर्तिमोहिउन्मथ्यहै॥११॥कविरुवाच॥मा
रुतिकहयहवातमदास्मररगीयहै॥नाहिंनीचनरनेहक
दाकररागीहै॥दुष्टकारतदुरवृतसाधुव्हैनष्ठहै॥परिहांहरी
दशाननसीयवारिनिधिवद्धहै॥१२॥ ॥इतिश्रीपिपलो
दपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितक
विटाकारामंगराजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीराम
समीरसुनुसंवादोनामचत्वारिंशोल्लासः॥४०॥श्रीहनु।
मानुवाच॥षटपदवृत्तं॥पायककछूप्रारब्धजोगजगमधि।
दुर्जनइत॥हरतमहज्जनमानकथंचितकचितकदाचित
॥पैउनकेअनुजनिततगुरागनधावतपामरनहि॥पावहि
किमअधिकत्वविलोकहुविपुलसकलमहि॥स्वर्भानु
रश्मिशशिभानुकीसमयपायजद्यपिग्रहत॥ब्रह्मांडखंड
मंडलविषैंनाहिगनहेशकोऊकहत॥१॥चंद्रायरगावृत्तं॥
रावनकियउन्मथितरावरैमानहै॥दैबजोगजउतऊहोयकि
समानहै॥विनैकरतकरतकरजोरिसुवारंवारहै॥परिहांथी
रजधरिवोसारसकलसंसारहै॥२॥कविरुवाच॥रामकह
तपुनिवचनसमीरनसुतरह्यो॥कालांतरगतखियाकहाका
रजकहा॥वंधुकरतउपभोगनाहिंसुखलेतहै॥परिहांअरुअ
रिगनआतंकदुसहनहिंदेतहै॥३॥वच्छललच्छनवच्छव।
च्छथलभिन्नहै॥कृतप्रतिग्यहनुमंतसविस्मयखिन्नहै॥सु
नहुनाथमरामोरसुरीतिसंदेवहै॥हरिहांअयमहोयथमरा।

जरु देव अदेव है ॥ ४ ॥ षटपद वृत्तं ॥ करि प्रवेश पाताल सुधारस
सत्वर लाऊं ॥ अथवा चंद्र निचोय प्रचुर पियूष पिवाऊं ॥ चंड कि
रण उद्दंड अखिल ब्रह्मांड निवारौ ॥ करि चूरन की नाश पाशशा।
सन जमटारो ॥ जो होय हुकम सोही करौं कीजैं नाहि विलंब अव
रघुराज रावरी महर तैं मो कौं है आसान सब ॥ ५ ॥ कविरुवाच ॥
सुनि समीर सुत बचन राम सोचन लागे उर ॥ बदत बदन मह वीर
तथा तेसैं करि है तुर ॥ महाप्रलय ह्वै जाय अन वसर इम करिवे।
नैं ॥ इम उर अंदर सोधि वचन उचतरहर वैतै ॥ ल्याव बहु सुषेन अ
भिधा भिषक असुर ईश अनुचर जदपि ॥ करिहै न कपट है वैद्य
वह लखिहि चिकित्सा वरनदपि ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ कहित था।
सु हनुमान लंक पुर जाय त्वरित है ॥ पहु परियंक समेत भिषक
भल ल्याय अतित हैं ॥ सुसोत्थित लखि भिषक राम सकरुन वच
बोले ॥ कहहु तरुरण उपचार वैद्य सुनि हिय निज लोले ॥ जीवि है
भ्रात रघुराज तव यह उपाय करियैं अचिर ॥ वल्ली विशल्पि वर
द्रोंण गिरि चंद्र रश्मि रजनी रुचिर ॥ ७ ॥ चंद्रायण वृत्तं ॥ कवि
रुवाच ॥ राम बुलाये दूत वेग कौ आय है ॥ अपनौं अपनौं वेग व
दहु मन लाय है ॥ सुनि रघुवर वर हुकम हुमसि बोले तवैं ॥ हरि हैं
निज निज षल अनुरूप अवधि उचरत सवैं ॥ ८ ॥ जावत आवत
नल कह लगत विराव है ॥ तथा मैंद अरु द्विविद कपिंद्र द्विराव
है ॥ अंक राव सुग्रीव नील किय काल है ॥ परिहैं जाम चार जुव
राज बदत करि तोल है ॥ ९ ॥ कविरुवाच ॥ सम्मय भ्रात स्यौं राम।

सुनत कपि बैंन है ॥ संकोचित मुख जलज सजल जुग नैंन है ॥ सं
गर संकट विकट बीच आशंक है ॥ हरि हौं लयत रुद्र अवतार सु
वदन मयंक है ॥ १० ॥ मत्सर सकरुण गद्यौ गारुड स्थान है ॥ जुग
अंजलि पुट जोरि वदत हनुमान है ॥ छिन क धारियैं धीर सकल
भल हौंन है ॥ अरि हौं आवत हौं पहुचाय भिषक दरमौंन है ॥ ११ ॥
इम कहि निहिं पहुंचाय तितैं इत आप है ॥ आजनेय उच्चरत विम
लव वआप है ॥ प्रभु हित कारक प्रचुर प्लवंगम पूर है ॥ हरि हौं दी
जै न्याय मअघ अद्रि मग दूर है ॥ १२ ॥ इति श्री पिपलोद पत्तनाधि
पाल रावत जी श्री दूलह सिंहजी विज्ञापित कवि टीका राम गज
गोविंद राम विरंचिते श्री वर विलासे वानर छंद वेग वर्णनो नामे
कचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४१ ॥ श्री हनुमानुवाच ॥ मनोहर वृत्तं ॥
साठ लाख जोजन तौ जावन जहाँ पैं वेग साठ लाख जोजन कौ आ
वन जरूर है ॥ मारुति बदत नाथ रावर प्रताप पुंज उच्चरत ऐसैं।
नाहिं मन मगरूर है ॥ अगिन तप्त तैल थित सर सौं अवाज वीच ॥
आवौ उत जाय ले विशल्य वल्लि मूर है ॥ कौंन मग दूर द्रौंन गौंन
मग दूर नहीं पौंन मग दूर पौंन पुच मग दूर है ॥ १ ॥ सोरठा वृत्तं कवि
रुवाच ॥ सुनत मरुत सुत वैंन हिय हरषित रघुवर भये ॥ अवध
कुशल पन लैंन अपर अमल आयस दई ॥ २ ॥ करि बंदन रघुनं
द कियौ चंड उड्डीत कपि ॥ द्रुहिण अद्रिसानंद अंजनि नंदन गव
नकृत ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ अब सुनियै वृत्तांत अव
ध पुर वरन्यौं तिनकौ ॥ भयौ सुमित्रा स्वप्न वाम भुज भुजग ग्र।

सितकों ।। कौसल्याप्रति कह्यौ तुरत उठि उहिं वशिष्ठमुनि ।। शां
ति करावत भरत सुपनभयप्रद श्रवणनि सुनि ।। सब सामग्री
मंगवाय शुचिथल इकंत कीनौं गमन ।। ढिग सशर शरासन धा
रि धुव आज्य आहुति क्रत हवन ।। ४ ।। कविरुवाच ।। जबैं द्रौरा
गिरि गये मरुत सुत तित अतिशय द्रुत ।। प्रभा सुधाकर सदृश व
ल्लिमणि सब निहार उत ।। निश्चय नहिं व्है सकत भ्रमण चहुंधा
वहु लीनौं ।। तब गिरि वर ले जान मनोरथ मनमैं कीनौं ।। जब उ ।
त्थान अद्री आपतें तबै तात सुमरंत यौं ।। पडु पिता पुत्र जुग जो
र करि धराधरन धारत भयौ ।। ५ ।। कविरुवाच ।। इतैं अवधपुर
वीच भरत अरु मुनि वशिष्ठ हैं ।। शांती मंडप कुंड निकट विलस
त बसिष्ठ हैं ।। हवन करत श्रीखंड कांड सतगर कुसुमादिक ।। जल
जनाल कर्पूर उशीराज्य प्रचुरादिक ।। कृतनारि केल पुरराग कुती
श्रेतें पैं अवलोकिनभ ।। द्रुत आंजनेय आवत उतैं कर गिरि वर ।
ज्वलदनल प्रभ ।। ६ ।। करन लगे सब तर्क कहा यह इत मैं आव
त ।। गृसित सुमित्रा मात वाम भुज वही लखावत ।। अथवा मख ।
संहार कार घंटासुर आयौ ।। इम भ्रम करिकैं भरत तुरत शर तिंनैं
चलायौ ।। भौवाण भिन्न हनुमान जब महावीर धीरन धरत ।। हारा
म लयन मुख उच्चरत प्रबल बली पुहुवी परत ।। ४३ ।। चंद्रायणा ।
वृत्तं ।। चिरंजीवी यह वीर रहैं छिति स्वच्छ हैं ।। विधि लिखिताच्छर
पंक्ति लोप परत च्छहे ।। चंड भरत दोर्दंड कांड नीर्मुक्त हैं ।। परिहां भ
ये मारुती महा मूरछा जुक्त हैं ।। ८ ।। लाग्यो पट्ट ललाट भरत भट ।

वानहै ।। गिरि लियलांगुलाग्र वीर हनुमान है ।। संमूर्छित महि
परैं वदन अभिराम है ।। परिहां हा रघुवर हा लखन गिरा गुरा ग्रा
म है ।। ९ ।। राम लखन वर नाम अमल आंनन कह्यो ।। तित वशिष्ठ
भरतादि भयौ विस्मय महा ।। अति आतुर हुइ अखिल तुरत ग
त तत्र हैं ।। हरिहां महद मूरछा सहित मारुती यत्र हैं ।। १० ।। गिर
त भये तिहिं चरन शल्य किय दूर हैं ।। गिरि औषधि करि मुनि वशि
ष्ठ छत पूर है ।। गइ मूर्छा सावधान हनुमंत हैं ।। अरिहां वित कौ वर ।
वृत्तांत स्वल्प वर्णत है ।। ११ ।। कविरुवाच ।। शक्ति भेद उर लच्छ भ
यो हौ जासमैं ।। राम वडाई भरत करी हीतासमैं ।।।। वह करिकैं इत
याद हीय हनुमंत है ।। अरिहां साम्य सूय करि रचन वचन उच्चरंत
है ।। १२ ।। इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावतजी श्री दूलहसिं
हजी विज्ञापित कवि टीकारामांगज गोबिंदराम विरचिते श्री
वरविलासे हनुमद्भरत समागमो नाम द्वि चत्वारिंशो ल्लासः ।।
४२ ।। श्री हनुमानुवाच ।। चंद्रायणा वृत्तं ।। चंद्र चंद्रिका चारु रहे र
जनीय है ।। गिरि औषधि गहि तुरत तत्र गमनीय है ।। हौं थकि ग
यौ इहै व आप पहुंचाइयैं ।। परिहां ललित लच्छमन भ्रात जहां द्रुत
जाइयैं ।। १ ।। कविरुवाच ।। सुनत समर संकष्ट राम अरु लच्छहौं ।
स्वच्छ वच्छ भल भरत प्रवल परतच्छ है ।। भुजा ठोकि टंकार श
रासन सोर है ।। परिहां लंका ओर निहार सुमुच्छ मरोर हैं ।। २ ।।
षटपद वृत्तं ।। तितैं समर मधि राम विविध विलपत उचरत हैं ।।
वच्छ लच्छ उत्तिष्ठ गहहु धनु रिपु प्रचरत हैं ।। सैन्य हनत तव ।

असुरताहितनकनतुमजोवत ॥ आप्तसीयरिपुजीतितथा।
निर्भयकिमसोवत ॥ प्रतिवचनदेतनहिभ्रातकसप्रीतिछि
न्ननहिकीजियैं ॥ कैकईमातपियसाहसेहोयकृतारथरी
जियैं ॥ ३ ॥ कविरुवाच चंद्रायणावृत्तं ॥ इतैंसुनतकपिवच।
नभरतसाटोपहे ॥ अद्रिसहितसुतमरुतविशिखआरोप।
हे ॥ कृतकुंडलिकोदंडप्लवगविस्मितभयो ॥ परिहांलगेक
रनवरतवनगरवमनकोगयो ॥ ४ ॥ उतरिविशिखतैंभरत।
भुजनपूजनकियौ ॥ कुशललेयतनकाललंकमारगलि
यौ ॥ जिमदरिद्रमनगमनहसंतदिगंतहै ॥ परिहांपहुँचआति
अविलंबवीरहनुमंतहै ॥ ५ ॥ षटपदवृत्तं ॥ अद्रिरुद्रअवता
रप्रलयरबिद्वादशसमुदित ॥ सहशद्रोणगदोर्दंडधारिअध
निशिआगततित ॥ दक्षहस्तिदिगभागपूर्वसूर्योदयभ्रमव
श ॥ तीरतरलतरसिंधुनारसुरकियरोदनतस ॥ पर्वतउदो
तरबिउदयभ्रमसरवरथितविकसितकमल ॥ कपिलख।
तअमितलज्जितश्रवतअच्छिनमगआँसूअमल ॥ ६ ॥ क
विरुवाच ॥ तदनुनिरखिदिगभागप्रभाकरउदयनपेख्यौ ॥
गिरिप्रकाशकरिजलजमुख्यविकसंतविसेख्यौ ॥ भोरहैंन
भ्रमभग्यौभूरिहियभयोसहर्षित ॥ गयेवाहिनीवीचराम
सुग्रीवहुतेजित ॥ पटुपुत्रप्रभंजनअंजनीरम्यरुद्रअवतार
है ॥ गहिद्रोणअद्रिअविलंबउतआवतकरीनवारहै ॥ ७
कविरुवाच ॥ मास्योमायमहर्षिकालनेमीरजनीचर ॥ ग्र

हीरूपउदग्रकंदकालीमारीत्वर ॥ राक्षसबलसंमर्दिसर्वरा
वनप्रेरितहरि ॥ इंद्रपठायेप्रबलकोटिगंधर्वविजयकरि ॥ म
णिज्वालजटितआदायगिरिझटितिउतैंआवतभये ॥
श्रीहनुमानकपिकटक मधिहियसबहसवितभये ॥ ८ ॥
मैंदद्विविदकपिप्रमुखचमूचयरच्छाकारक ॥ सीतातंकम
हांधकारहारकपरभाकर ॥ पवनपुत्रसंप्राप्तहरीहरउच्छ
वआकर ॥ कपिकटकसुभटसंघटनमैंयहैगल्लगोपालहै
द्रुतद्रिशतुविशदवरलच्छमीलच्छवच्छथलहालहै ॥ ९ ॥
श्रीरामउवाच ॥ दोहावृत्तं ॥ अेकहिइहिंउपकारपरप्राण।
समर्पततोहि ॥ अवरअखिलउपकृतिनकोमानहुरनिय
मोहि ॥ १० ॥ तुमउपकृतआपत्तिवहजीरनममतनुहोय ॥
पुनिप्रत्युपकारार्थहितव्हैनआपदातोहि ॥ ११ ॥ षटपदवृ
त्तं ॥ हनुमतकृतआलेपअद्रिओषधिकरिचूरन ॥ धरनिध
रनआतमाभूरछात्यजसंपूरन ॥ तरनिरामअरविंदलंकप
तिकुपितकालसम ॥ आददानधनुसशरक्रोधकरिभयेअ
रुनतम ॥ प्रोत्फुल्लखदिरअंगारचयटरगत्कारकोदंडकिय।
मुखमारमारउचरंतउतलच्छउठेप्रोच्छाहहिय ॥ १२ ॥ चंद्रा
यणावृत्तं ॥ सहरखसपुलकसाश्रुभयेश्रीरामहैं ॥ लच्छन
हृदयलगायगहेगुणग्रामहैं ॥ हावच्छलहावच्छवच्छथल
अंकहै ॥ परिहांनबपरिश्रमपरिहारहेतुपर्यंकहै ॥ १३ ॥ प्रति
भेदखलुखेदभयोतव रहै ॥ शायनथानममहृदयमहामुद।

मूरहै॥ मेघनाद कुल कमल वर्ष प्रालेयहै॥ परिहाँ प्रवल भई॥
वेदनान आनन गेयहै॥१४॥ कविरुवाच॥ कहलछमन करजो
रि कछुक मम खेदहै॥ संपूरन श्रीराम वेदनाभेद है॥ प्रभु उर पी
डा परम प्रतच्छ प्रचार है॥ परिहाँ किंकर केवल कथन मात्र छ
तधार है॥१५॥ इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्री
दूलह सिंहजी विज्ञापित्त कविटीकारामांगज गोविंद रामवि
रचिते श्रीवरविलासे श्रीलक्ष्मणोत्साह वर्णनोनाम त्रिच
त्वारिंशोल्लासः॥४३॥ अथ श्रीहनुमन्नाटक लक्ष्मणाश॥
क्ति भेदोनाम त्रयोदशोंकः॥१३॥ कविरुवाच॥ षटपद वृ
त्तं॥ प्रातभये लंकेश वुलायो लोहित लोचन॥ कहहु राम॥
प्रति जाय करत तव मैथिलिमोचन॥ जाम दग्नि निर्जित्य
परशु प्रमथाधिप लीनौं॥ वह है तुमरे निकट चहै रावन कौं दी
नौं॥ कहि तथास्तु लोहित नयन तूरन नभ मारग लियौ॥ दूत
शिविर वीच किय आगमन रघुनंदन बंदन कियौ॥१॥ क
विरुवाच॥ सोरठा वृत्तं॥ रावन दूत निहार रघुवर वत रावन
लगे॥ तित अधिराज तिहार कहा करत लोहित नयन॥२
॥ लोहिताक्ष उवाच॥ चंद्रायणा वृत्तं॥ लंकनिशंक जराय
गयौ अविलंव है॥ लंघन कीन समुद्र प्रतच्छ प्रलंव है॥ औ
षधि आन विशिल्य जिवायौ लच्छ है॥ हरिहाँ मारुति ऊपर
पीसत दंत त तच्छ है॥३॥ कविरुवाच॥ बरवै वृत्तं॥ सुनि वि
हसत श्रीरघुपति वोलत वैंन॥ किहिं कारन आगत इत लो

हित नैन॥ कर जुग जोरि कहत तव लोहित अच्छ॥ देस देस
लकापति पठव प्रतच्छ॥५॥ हर प्रसाद परसा तुम भृगुपति
जीत॥ वह रावन कूँ दीजैं राखि सुरीत॥६॥ करहिं समर्पण॥
रावण रावर सीय॥ सव विरोध मिट जैहैं निरय हु हीय॥७॥
षट्पद वृत्तं॥ विहसि वचन कह राम दूत दैंखहु रत लोचन॥ पे
खि प्रणाय पौलस्त्य मुमरि तव मति मोदत मन॥ हर प्रसाद य
ह परशु तदपि नाहिं दैंन जोग है॥ दिये गलानी गहहिं लंकप
ति लखहिं लोग है॥ सव दई वसुंधर द्विजन कौं असुर रसात
ल रीझियैं॥ निर्जित्य निशाचर लेय छिति किम बल भिद कौं
दीजियैं॥८॥ दोहा वृत्तं॥ दूत दशानन असुरपति मम वचन
न इम वाच्य॥ हर प्रसाद वर परशु यह लंकाधीश अयाच्य॥
९॥ कविरुवाच॥ षट्पद वृत्तं॥ ऐते अंतर बीच पुरंदर पठुप
ठवायौ॥ शत्रुंजय रथ प्रवर मातली सारथि लायौ॥ रघुव
र हू हनुमंत ध्वजाग्रा रोपन दीनौं॥ अति उच्छाह समेत आप
आरोहण कीनौं॥ तव लोहिताच्छ निस क्रांत तिन लंकाधिप
सन्निधि गयौ॥ निज शिरन माय कर जोरि जुग सव वृत्तांत वर
णत भयौ॥१०॥ इतिश्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी॥
श्रीदूलह सिंहजी विज्ञापित्त कविटाकारामांगज गोविंदरामवि
रचिते श्रीबर विलासे श्रीरामचंद्र लोहिताक्ष रावण दूत संवादो
नाम चतुश्चत्वारिंशोल्लासः॥४४॥ कविरुवाच॥ चंद्रायणा
वृत्तं॥ कह लंकाधिप रत्य लंक पुर कंत है॥ धुज पर सुत दशरत्थ

कौनविलसंतहैं।।यह सुनिलोहित स्वच्छ बचन उचरंतहै।। परि
हौंश्रवल पराक्रमपुंज वीरहनुमंतहै।।१।।षटपदवृत्तं।।लोहि
ताक्ष उवाच।।हेलोल्लंघित सिंधुग्रस्त अघुनमंडलधर।।सिय
वियोगसहरामदैन्य उदघाटनपटुतर।।निशिचरनायकनग
रनिखिल निरदग्ध अचलचित।।संजीवितसौमित्रिऔषधी
अद्रिआनिहत।।उपमाअनंतहनुमंतयहजिहिंमगअवरन।
अनुसरत।।अतिप्रबलप्रभंजपुत्रवर रघुबर धुज गज्जनकरत
।।२।।कविरुवाच।।मंदिरमंदोदरीगयौरावनअतिनूरन।।वूज
नलग्यौविचारचारुमतिनयसंपूरन।।विनिहतराघवविशि
खविबुधपुरकरौंमैं।।अथवासीयसमर्पिरामसंकष्टहरौंमैं।।
ममभ्रातरह्यौअवशिष्टबलकौंनपक्षहैतोराश्रय।।सोसपदिसु
नाबहुस्वामिनीधारनकरिहौंहर्षितहिय।।३।।दोहावृत्तं।।वि
हसिबदतमंदोदरीपहलेसु नीमअनेक।।प्राणनाथलंकापती
अबकिमभयौबिबेक।।४।।मंदोदरीउवाच।।षटपदवृत्तं।।
दैन्यभागिनिकौदेखिखरादिकनिधनश्रवनसुनि।।मातुलल
ख्यौविनासतालभेदनश्रुतिगतपुनि।।कपिवरवालीदहन।
कहुसुग्रीवसख्यश्रुत।।जलधितरनउद्यानभंगबधविदित।
अक्षसुत।।पटुपुत्रपौत्रपरिवारजननष्टभयेकुलकेसबैं।।कृ
तसेतुविनिर्गतनीरसमउरविवेकआयौअबैं।।५।।रावण
उवाच।।मनोहरवृत्तं।।धिकधिकइंद्रजीतजाग्योकुंभक
रण।।वृथास्वर्गग्रामलुंठनविचच्छभुजवीसहै।।लावनधि

धिकारमोहिमेरेमुनिशत्रुहोयतामैंतुच्छतापससहायसंग।
कीसहै।।सोहूअस्त्रआयकैप्रहारैंकुलराक्षसकोजीवतहैरा
वननिहारेनैनवीसहै।।अेकअेकसीसवारपीसडारेजातुधा
नवीसौविसाअधिकधिकारदससहै।।६।।कविरुवाच।।चां
द्रायणवृत्तं।।सकरुणामंदोदरीकहतलंकेशहै।।नहिंपाव
हुकछुशोकस्वभानसलेसहै।।त्रियातदपिछत्रियाहुकम
हुतदीजियें।।परिहासमरमध्यममनाथहाथलयि।।लीजि
यैं।।७।।रावनवदतविदीर्यमाणिनिजहीयहै।।तरुणायक
रुणानाहिंकिंचिदपितीयहै।।प्राणारकंनहिंपीयतोरजिय
होतहै।।परिहांतजलंकानिश्शंकसमरउद्योतहै।।८।।षट्
पदवृत्तं।।कविरुवाच।।गहिआयसश्रीरामसकलकपिभ
टनिकसेहैं।।लंकाउत्तरमार्गरुंधिअतिउरविकसेहैं।।उत्कं
ठल्लुन्यकरतदृढगढआरोहन।।शैलशिखरकरधारिछ
टाछाहतछबिंहन।।दिगपालकुलाहलबहलमदउग्रनक्ष
बग्रहतारचय।।देदिप्यमानदिशिबिदिशदिशादशग्रीवउद
ग्रीवलय।।९।।कविरुवाच।।रावणरामनियुद्धनिहारतरुद्र
निरंतर।।संवेष्टितकपिकटकलंकअवलोकिदिगंतर।।उच
रतमरुदादित्यशम्भुशतमखमुखसुरबर।।अनुसर्पतअनुदि
वससमयजिहिंपुरदुवारपर।।वहसमाक्रांतवानरभटनिदश
ग्रीवनगरीरुचिर।।अनिलरवहुकालमहिमाप्रवलउरआव
तअचरजअचिर।।१०।। इतिश्रीपिपल्लोदपतनाधिपालरा

वतजी श्रीदूलहसिंहजी दिस्तापित कविरीका रामांगज गोविं
दराम विरचिते ॥ श्रीवर विलासे श्रीरामचंद्र वानर कटक लं।
का संरोधो नाम पंच चत्वारिंशो ल्लासः ॥ ४५ ॥ चंद्रायण
वृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ प्लवगाधिप सुग्रीव मुक्त बहु वृच्छ हैं ॥ स
पदिपाय संघट्ट लंक पति वच्छ हैं ॥ प्रगदत पावक पुंज भूमिरु
ह दहत हैं ॥ परिहां दिपत दवानल सदृश समर मधि महत हैं ॥ १ ॥
रावन निज गिरिशिखर उखारि प्रचार हैं ॥ पिष्ट पानि चय पर
स कुंड जलधार हैं ॥ निर्झर पय जनु होत पिंड जैवाल हैं ॥ परि
हौं लगत हृदय सुग्रीव सुमन मनु माल हैं ॥ २ ॥ उत्तपाटित
कैलाश भये भव तुष्ट हैं ॥ इहिं उतपाटन कियैं तथा संतुष्ट हैं
॥ रण माधि रच्छा करहिं देव करि कैं दया ॥ परिहां इहिं कार
ण लंकेश शिखर गिरि कर लिया ॥ ३ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ रावन
होयस क्रोध रथारोहन किल कीनौं ॥ भेरी मर्दल शंख ताल
निकर स्वन मीनौं ॥ काहल रव निस्सान स्वान परिपूरण करी
किय ॥ दशकंधर युद्धार्थ नगर निकसत्त विकसत्त हिय ॥ मा
णिक्य मौलि मंजुल महा यशो दीपदीपित हसत ॥ विधकर्म
वप्रय जु क्षवप्रय उत लंक पाल क्षति उल्लसत ॥ ४ ॥ चंद्रायण
वृत्तं ॥ परिक्षित पवन प्रचार मंद रवि ताप हैं ॥ निकस्यौ जब मग
गगन निशाचर आप हैं ॥ खग मत सब सुर संघ नम्र हुई संग हैं
॥ परिहां थगित सरित गति भंग उतंग तरंग हैं ॥ ५ ॥ षटपद
वृत्तं ॥ जब लंका भट सुभट शराशान शिखर नील थित ॥ क्रो।

धाशु गिरि प्रस्रव सहित पर्वत कर विलसित ॥ मृगतृष्णाज।
लजु गत्त क्षचल अविलोकि चकित चित ॥ दिग मंडल जुथ देव सु
मति उत्तप्रेच्छ करत तित ॥ बहु वृंद वृंद वृंदारका वानी विपुल व
दंत हैं ॥ धनुशृंग भृंग तदुपरि गिरि तित्र जलाधि विलसंत हैं ॥ ६ ॥
राम मध्य साश्चर्य सपटु भट मुख अवलोकत ॥ व्यथा सहित सु
र तौर्य शांत रस तत्र विलोकत ॥ रघुवर युधि साशंक कपिन मधि।
स विनय सरसत ॥ साश्रुपूर सौमित्रि सभय अनिलज मधि दरस
त ॥ लखि भ्रात कृत्य सासूयहुव आत्म कृत्य सत्रपलयत ॥ दश
वक्त्र बक्त्र चय चक्र सब भिन्न भिन्न भाव नरयत्त ॥ ७ ॥ दृढ बा
धे दश तूरग शक्र हय सटा केश करि ॥ धुनत वाम दोर्दंड धनु
ष दश विपुल बेग धरि ॥ दच्छिन भुज दश बिशिख सु तिच्छन।
आद दान हैं ॥ क्ष्वेडन क्रीड़ा करत प्रकुप्यत जातुधान हैं ॥ अ।
भिभवत भूरि प्रसरत अमित गर्जत तर्जत ओघ अति ॥ विद्यंत
निरंतर बदन श्रीरण आंगण माधि अवतरति ॥ ८ ॥ चंद्रायण
वृत्तं ॥ समरांगण आराम निशाचर कंत हैं ॥ तरुण कुंडली भि
ल्लवपुय अगिनंत हैं ॥ करी कुंभ संलग्न ललित विलसंत हैं ॥ प
वैहे कामिनि कुचजुग परस जथा सोवंत हैं ॥ ९ ॥ कविरुवाच ॥।
सोरठा वृत्तं ॥ गगन गगन पर मारग सागर सम सागर लसत ॥ रा
वन राम समान संगर रावन राम कौ १ ॥ षटवृत्तं ॥ सार नाम क्रव्या
द वीर हय चढि उत आवत्त ॥ खम्ब मध्य हुव षंड चढो पूर्वार्ध।
॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥ : ॥

सिधावत ॥ पश्चिमार्धयुवगज तुरंगम गह्यौ क्रोधकर ॥ कीनौं
प्रवल प्रहार असुर शिर ऊपर सत्वर ॥ निज सिविर वीच पहुच्चयौं
नवह अंगद ताडित महिप सौं ॥ शिव शिव शिव अति संकट
विकट चमू निशाचर उच्चस्यौ ११ ॥ इतिश्री पिपलोद्पत्तनाधि
पालरावतजी श्रीदूलहसिंहजी विज्ञापित कविटीका रामांगजगो
विंदरामविरचितेश्रीवरविलासे ताराह्नतमि चरवधोनाम षट्
चत्वारिंशोल्लासः ॥ ४६ ॥ कविरुवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ निशिच
र महद शरीर अल्प वपु वानर विलसत ॥ किहिं प्रकार ह्वै वि
जय राम संसय हियहु लसत ॥ कह अंगद कर जोरि कलश शिशु
पियो अंबु निधि ॥ अद्रीपरम उतंग पुरंदर पव छिद जिहिं विधि
॥ अतिप्रथुल वपुष किहिं काज के कोश पकुल असमर्थ उत ॥
निज नामधेय धुव राम इति लसत सकल सामर्थ्य जुत ॥ १ ॥ क
विरुवाच ॥ रावन रघुवर निरखि बचन उचरत हैं ऐसैं ॥ ताटक ननु
तिय मात्र राम शुचि द्विज हौं तैसैं ॥ भीति भवन मारीच हिरन ला
ली ह्वै वानर ॥ वृथा विकथ्यन करत काहि काकुत्स्थ अधिकतर
कहु कौंन वीर बर बिजय किय रखत गर्ब दोर्दंड कर ॥ कोदंड
सबैं आरो पियें तोर मोर ह्वै है समर ॥ २ ॥ कबिरुवाच ॥ अंगद
उत्तर देत अरे सुन निशिचर नायक ॥ बंधमहज्जन चरित क
छू नहिं संशय लायक ॥ सुंदतिया किय दमन तौंन दरसत
कुंठित यश ॥ अरु जिहिं विधि हो वालि ताहि तुम जानत जिय
जस ॥ पुनि सुनि बौ चाहत औरहू बिदित बीर जय विमल गि

र ॥ यरखंऊन दूषन दलन किय त्रिशिर कियौ रश भिन्न शि
र ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि अंगद के बैन वचन रावन पुनि उच्च
रत ॥ रेरे मानव राम समर लंका पति प्रचरत ॥ शंकर गिरि कै
लाश किया कंदुक क्रीडाइव ॥ मानव निशिदिन दर्प जासमदे
वेश्वरहू दिव ॥ असुरांततमुंदसुंदरि कदन शाखामृगपति अंतक्र
तआघोस करहु धिय धीर धरि दोर्दंड कोदंड धृत ॥ ३ ॥ चं
द्रायणा वृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ तदपि न रावन हनत सपदि श्री
रामहै ॥ आनन अंबुज नम्र कियौ अभिरामहै ॥ जव किंचि
त थित लज्ज सहित सिय कंत है ॥ परिहां बिहसित वैं लंकेश
वचन उचरंत है ॥ ४ ॥ रावन उवाच ॥ तव पूर्बज अनरण्य हुतो
बरजोर है ॥ कीनौं मम कर कंदन जंग मधि घोर है ॥ तिहिं सु
मरन करि व्यथित परम संताप है ॥ परिहां जिहिं तैं लज्जावंत
होत अति आप है ॥ ५ ॥ श्रीराम उवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ कह
त राम निश्शंक निशाचर नीच निहारहु ॥ कहा लज्ज अनर
ण्य भूप निज जिय निरधारहु ॥ जय अथवा ह्वै मरन सूर वीर
न कौ रन मैं ॥ तिहि कौ हरख रु शोक तनक लावत नहिं मन
मैं ॥ बंधनागार अर्जुन नृपति बहु बासर रावन रये ॥ वटव्य
था हौंत इहिं हेत तित मुनि पुलस्त्य भिक्षुक भये ॥ ६ ॥ चंद्रा
यणा वृत्तं ॥ मम भुज भृगुपति विजित जास बध कीन है ॥ ति
हि हैहय के हात बंधत तुम लीन है ॥ संकट कारागार सहे अ
गिनंत है ॥ परिहां तब सन्मुख धरि शास्त्र सुलज्जावंत है ॥ अ

कविरुवाच॥ रावनहियाँ वसंत सुसंततसीयहै॥ मोरनिरं
तरध्यान जानकीजीयहै॥ ममउरनिवसत सकलसृष्टिसं
घातहै॥ परिहाँ हनततनअरहिय असुरडरतजगघातहै॥
८॥ षट्पदवृत्तं॥ रावनरोषनिहारि बिहित अहंकार आप
उर॥ हुतदृढ संगरबद्ध दिच्छ बिभुसज्जभयेतुर॥ शरणाग
तभयहरन बिरदवर बिलसत अविरत॥ छायो बिपुलउछाह
शरण तृण तुलित विशेषत॥ रघुबंशराजमहाराज सुरअव
धनगर अधिराजहै॥ बधकरन काज असुरेश कौ रनमधिवि
धिविराजहै॥ ९॥ दोहावृत्तं॥ कविरुवाच॥ प्रियाबिरह अ
र्दितअभूलहत नाहिंरतितत्र॥ सत्यरम्यरमनीयता थिरमन
बिलसतयत्र॥१०॥ कविरुवाच॥ मनोहरवृत्तं॥ बाणाइहिंता
टकाकेशोणितसनान कियो भगिनीकेकानन शाणशारणा
यामकीनौंहै॥ दूषन त्रिशिरखर आहुति अयेशादई हिरन
मारीचवलिदानवेगदीनौंहै॥ आचमन आन्यौंहै अनंतअ
बुअंबुनिधिभोजनाबकाश अबैं चारुचितचीनौंहै॥ मार्गणा
छुधितमोर मार्गन करत तोर आमिष असुर लंकनाथचहैली
नौंहै॥११॥ दोहावृत्तं॥ चितचाहत जो संधितौ सीयसमर्पहु
सद्य॥ नातरममनाराचतव आमिषभषिहैं अद्य॥१२॥ इ
तिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीवि
ज्ञापितकविटीकारामांगजगोबिंदरामबिरचितेश्रीवरविला
सेश्रीरामचंद्ररावणसंबादोनामसप्तचत्वारिंशोल्लासः॥४७

कविरुवाच॥ चंद्रायणवृत्तं॥ तउरावनसावज्ञबचनउचरं
तहै॥ प्रगटशरणपरित्राणहेतुबरणंतहै॥ मूर्खनकौंमूकत्व
सभामधिहैजथा॥ परिहाँ क्लीबनकौंरनवीचसंधिवचहैतथा
१॥ षटपदवृत्तं॥ इमकहिगगनबिलोकिदशाननबदतव
चनहै॥ रेरेकालअकाललब्धतवविभवरचनहै॥ हूजैंस्वैर
सकामशंभुभूषयतूतनतव॥ शिरोमाल्यनिजअंगभूरिभू
षितभ्राजहुभव॥ रचियैंविरंचिस्वष्टिअपरलंकेश्वरकटिब
द्धहै॥ करवालगहीभीषनभुजनजुद्धकाजसन्नद्धहै॥२॥
कविरुवाच॥ चंद्रायणवृत्तं॥ पुनिकरिरामाक्षेपसुनावत
बोलहै॥ मंदिरमधिमैथिलीअलापअमोलहै॥ रणदारुण
मधिहोयपलायनप्रानहैं॥ परिहाँ मधुरअधरममगिद्धकरै
गेपानहैं॥३॥ कविरुवाच॥ त्रिजटाशरमा दोयबिमान
बिठायकैं॥ बैदेहीलेगईचतुरचित्तचायकैं॥ रघुवररावनजु
द्धबतावतसीयकौं॥ हरिहाँ निमिनृपनंदिनिनीकनिहारत
पीयकौं॥४॥ चढिलंकाचलशिखरउच्चमंदोदरी॥ निरख
तसंगरशोभनिशाचरसुंदरी॥ अेकचरनथितभयेअगाधस
मुद्रहै॥ परिहाँ शोभासमितिसमग्ननिहारतरुद्रहै॥५॥ वर
विमानआरूढविबुधवहुवृंदहै॥ अवलोकतसंग्रामसक
लसअनंदहै॥ कालरुद्रसमरामकियौअतिकोपहै॥ परिहाँ
जनुभैरवसंहारसुअद्भुतओपहै॥५॥ श्रीरामउवाच॥ षट्प
दवृत्तं॥ रेनिशिचरपतितीचकरतअवतेरोचूरन॥ बाणास

नशेर त्रिदश दर्पहरग गहियैं तूरन ॥ वेग बुझावत मीर श्रियादि
रहगि बिलोकत ॥ मंदोदरी जुग नयन नीर करि तब अवलो
त ॥ जो करन होय करि लेहु सो मन की मन रह जायगी ॥ लंके
शरिंदगी जिंदगी एक हि संग नसायगी ६ ॥ कविरुवाच ॥ चं
द्रायरण वृत्तं ॥ इम कहि कैं श्रीराम लिये कर बाण हैं ॥ सो लखि
मंदोदरी लगी घबरान है ॥ मंदोदरी उवाच ॥ इते बाल तररू
प तवै ताटक हती ॥ परिहां अवैं तरुण तम लषत कित क मेरो
पति ॥ ७ ॥ कविरुवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ आकर्षन किय धनुव
जबैं रण माधि श्रीरघुवर ॥ तबै वाम भुज बदत अहो सुनियैं दं
छन कर ॥ दान देन अरु लेन मिलै मन भावन भोजन ॥ अग
होत उहिं ठोर अवैं कृत पृष्ट नियोजन ॥ तब दाहन कह मो कोन
भय वूजत निज स्वामी श्रवन ॥ दश बदन वदन सब सहक दन
किम इक इक करुण भवन ॥ ८ ॥ कविरुवाच ॥ दृष्ट मंत्र दि
व्यास्त्र कुशिक सुत शुचि सेवन कर ॥ योद्धा भृगुपति वीर भुज
गपति भोग द्विभुजवर ॥ बिभु दिनकर कुल केतु कुतक उत्त
न हृगंचल ॥ बहुमत रिपु हत कर्म कौतुकी राम अचंचल ॥
जो कर्म बसि कर करि करत रावन रन माधि अचल चित ॥ सो
कर्म देय दोर्दंड द्रुत दाशरथी दरसात तित ॥ ९ ॥ राघव करी
प्रतिग्य समर मुर्द्धनि ऐसी उत ॥ रे रावन तब सहित होयगो
अर्क अस्त द्रुत ॥ अस्त अचल अ बलाबि भयौ आदित्य स
मैं जिहिं ॥ मंदोदरी चकोर वधू सम इइ ओसर तिहिं ॥ ज्ञान

की चित्त चकई सदृश समय भंग भय जानि जिय ॥ अरु निशा
वीच निशिचरन कौं प्रबल होत बल हेरि हिय ॥ १० ॥ इति
श्रीपिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी बि
ज्ञापित कवि टीका रामांगज गोबिंदराम बिरचिते श्रीवरवि
लासे सीता मंदोदरी बचन बर्णनं नामाष्ट चत्वारिंशो ल्ला
सः ॥ कविरुवाच ॥ षट्पद वृत्तं ॥ कहत राम लंकेश तोर शि
र बहुल बिलोकत ॥ मिलत महा मुद मोय एक बध इक अव
लोकत ॥ विनिपातित इक माथ कोप उपशांति कहो किम ॥
निरषत नहि निज निधन भिन्न उच्छिन होत जिम ॥ निज
छिन्न छिन्न मस्तक निरखि बिलषत दुर्नय निखिल फल ॥
जग एक मत्थ के शत्रु तैं दश मत्थन कौ शत्रु भल ॥ १ ॥ चंद्रा
यण वृत्तं ॥ इक शिर लखि उच्छिन्न अपर इम बदत हैं ॥ मा
छिंधी मा छिंधि गिरा मुख वगदत है ॥ एक मत्थ अरि हनै यहै
नहिं लेय है ॥ परिहां दुर्नय फल दश मत्थ परत सब पेय है ॥
॥ २ ॥ षट्पद वृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ अति द्रुततर श्रीराम बाण
संघात घात इव ॥ रावन ताडन व्यग्र गनीव नहि गिरन देत भुव
छिन्न धनुष निस्त्रिंश आदि प्रहरण करि कोपित ॥ निज मूर
ध दशबदन राम शर व्रात दलित तित ॥ कर इक इक शिर ग
हि गगन माधि उछरत इसट भुज वीस भट ॥ जनु अतिशय नर
संघटन मैं बटा उछारत सुघर नट ॥ ३ ॥ बाण शाण उत्तीर्ण
समर प्रांगण माधि रघुवर ॥ सम कल पात कृतांत लियेन व

अेक संग कर॥ नव मूरध उच्छिन्न किये पुनरपि नवीन लखि॥
व्है मुहूर्त्त चित्त चकित बिपुल बिस्मय निज हियरखि॥ बिधि
दियौ वाहि बरदान यह जब लौं छिन्न न मध्यशिर॥ उच्छिन्न
कियेहू अन्य मथ पुनि पुनि प्रगटहिंगे अचिर॥ ४॥ कुंभज-
मुनि संदत्त विदित ब्रह्मास्त्र प्रबलतर॥ अभिमंत्रित करि बा-
ण प्रहास्यो हृदि दशकंधर॥ शोणित शोण शरीर विशि-
ख वर पंच बाण गहि॥ अतिशय सत्वर तिच्छन धार शर भीष-
विश्व महि॥ रण रावण बिद्रावण विबुध सकल लोक राव
ण रह्यो॥ भौ पतन तास पुहवी प्रबल भयौ मोद मंगल महा
॥ ५॥ सब सुंदर सुंदरी सहित मंदोदरी परिच्छन्न॥ गलद विल
जलधार नयन नीरज पुर निस्सृत॥ सिय पति निज पति बिर
ह प्रतापानलहि बुझावत॥ त्रिकुटाचल तैं चपल समरभू
मी मधि आवत॥ अति करत घोर फुत्कार जुत हाहाकार
पुकार मुख॥ संप्राप्त महा निद्रा पत्ती गिरि चरण चित्त अमि-
त दुख॥ ६॥ मंदोदरी उवाच॥ सुर सिंधुर वर वधु कुंभ प्रसू फो
टन निस्स्रवत॥ विलियन बिजय प्रशस्ति विश्व मंजुल मौक्तिक
द्रुत॥ वर्णावली विचित्र ललित लेखक लंकापति॥ नाकां
तन्पुर सरस सुंदरी कल कपोल तति॥ वर विरचित तिलका
श्मीरिका पत्रांकुर शोभा अमित॥ तिहि नासक भुज भीषन
प्रबल भौ किहिं बिधि संगर शमित॥ ७॥ हा लंकेश्वर प्राण
नाथ जिय जीवन मेरे॥ मंदोदरि पति वृत्ता बदन बहु चुंबत तेरे

आलिंगन भुज भूरि करत अेकांत कांत जब॥ कहत हुते क-
रि कौल वहे सब बिसरि गये अब॥ वर लंबोदर कल कुंभथ
ल मौक्तिक मणि अेकावली॥ करि देहुं तोहि आवत अबैं
करज दार निद्रा भली॥ ८॥ इक कर करि कैलाश धर्यो दू-
सर त्रिभुवन जित्त॥ अष्टादश अवशिष्ट नाहिं आयो अव-
सर कित॥ भूरि भव्य क्रव्याद वीर रण धीर महा बल॥ रिपु
यह द्विभुज मनुष्य तिया बिरहित वानर दल॥ अति प्रबल
देखियैं दैव गति वह विनिहत निज नगर रन॥ बहु वृथा हो
त मास त्रिसव उलदि ज्ञात जव नियति जन॥ ९॥ ॥ इति श्री
पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री दूलह सिंह जी विज्ञा-
पित्त कवि टीका रामांगज गोविंद राम विरचितें श्री वर विला-
से मंदोदरी विलापो नामैकोनपंचाशत्तमोल्लासः॥ ४९॥
कविरुवाच॥ मनोहरवृत्तं॥ ब्रह्म कुल जाति जास अग्र
ज कुबेर कैसो कुंभकर्ण भ्रात पुत्र इंद्रजीत पायो है॥ आप
दश मत्थ समरत्थ हत्थ विंशति है काम चार दैत्य रथ बि-
जयी बतायो है॥ लंक जैसो गढ दृढ परिखा पयोधि पूर गोविं-
द जं दैव दैव दुर्बल दिखायो है॥ थौंसि थौंसि थायो थूवथी
ज थीज सारो जग कोसल किसोर ताहि छिन में खपायो है
॥ १॥ अेक काल बीच जानैं विश्व कौं विजय कियो जाही भुज बीस ई-
शा अद्रि कौं उठायो है॥ ताकौ अग्निदाह संसकार समै आयो अब रा-
म बिन आयस सोक पिन रुकायो है॥ गावत गोविंद पति आचरज॥

आवत हैं अद्भुत अवश्य काल महिमा बतायो है ॥ योंसि योंसि याये
पूवपीजवीज सारोजग कोमल किशोर ताहि षिनमैं यपायो है ॥ २ ॥
दुरगत्रिकूटत्रासपरिखा पयोधिपूर जोधजातुधानधन धनदधरायो है ॥ यौँ है
संजीवनी विद्या हृद्य जाके हि मुवाग्रगत कालबशताकौ हू विनाश दरसा
जंतुनको पूर्वकृतकर्म विपाक महा विवम विबेश विश्व बीच बिलसायो है
॥ जोई शिव सीमदशसीस सीस संघडुतो शिव शिवसोई गिद्धपायन लु
ठायो है ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ लक्ष्मीधर वृत्तं ॥ लच्छ औ अच्छ हंता जहा
जायकै ॥ मानतें यानमैं जानकी लायकै ॥ स्वामी श्रीरामके सामने सोर
पी ॥ लज्जमैं मज्ज सीसीयशोभालवी ॥ ४ ॥ मनोहर वृत्तं ॥ लंकातैं कलं
कहीन मैथिली मंगायराम मारि दशमत्थ दशरत्थ सूनुसरसे ॥ विपुल
वियोग वह्नि ज्वाल जाल व्याकुल है विग्रह विशेष मैं न वारि बूंद बरसे ॥
नाहिं अध ऊरध औ तिरछे निहारत हैं मुकुलित दृगअम्भोज द्वंद्व दिव्य दर
से ॥ थिर है समाहित मे चित मैं चकित भये नाहि जित तित मे विलोकत स्व
परसे ॥ ५ ॥ बरवे वृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ निज कुल परिजन लज्जा मज्जित हो
य ॥ सजल जलज इव लोयन दरसत दोय ॥ ६ ॥ जकित थकित समस न
न गहत गलान ॥ उहिं अवसर मधि उचरत बच हनुमान ॥ ७ ॥ हनुमानुवा
च ॥ मात मैथिली करियैं ललित ललाम ॥ प्रभु पुनीत पद पंकज पद्धुल श
राम ॥ ८ ॥ मानोहर वृत्तं ॥ भंगुर भयो है अंग चापके अलिंगनतें उपमा
अनंगकी अभंग मरसत है ॥ न्यस्त एक हस्त अच्छ अंभजल लिलित मैं दू
जै करबीच शरपंच दरसत है ॥ वारा अरा अंकित विराजैं बीर राम बपुम
नौ विजैलच्छिके नवच्छत लसत है ॥ लंका भट अथिकैं भये हैं थित प्रारा

नायश्रेरीमात क्यौं न पदपद्म परसत है ॥ ९ ॥ कविरुबाच ॥ बरवै वृत्तं
वायुतनय सुंदर वच सुनि सुनि सीय ॥ चहचित ही मधि चुनि चुनि पु
निपुनि पीय ॥ १० ॥ अथ मैथिली मानस विचारः ॥ मनोहर वृत्तं ॥ त्र
नुभृत तीनि ताप छेदन छपाकर सो क्रोधानल अंभोधर उपमा अनूप है
मार अश्रोअशारके बिवेक कौ रु शोक हकौ भ्राजत भवन हर्ष बीजाश्र
य कूप है ॥ कालव्याल विषकौं गोबिंद है गरुड मरिा धैर्य वृच्छ वन
भूमि मो वप्रद रूप है ॥ सुकृत समूहतैं समागम घटत राम विना पून्य
मिलै नाहिं औध पुर भूप है ॥ ११ ॥ दोहा वृत्तं ॥ कविरुबाच ॥ इम उर
अंदर आनिकैं मैथिली मत्य मिलिंद ॥ रघुनंदन पद द्वंद को गहन चहत
मकरंद ॥ १२ ॥ इतिश्री पिपलोदयत नाधिपाल रावतजी श्री दूलह सिं
हजी विज्ञापित कविटीका रामांगज गोबिंदराम बिरचिते श्रीवर विला
से मैथिली मान विचार वर्णनो नाम पंचाशतमो ल्लासः ॥ ५० ॥ कविरु
वाच चंद्रायण वृत्तं ॥ अलग होय श्रीराम बचन उचरंत है ॥ सुनहु मह
ज्जन सकल सुसंत महंत है ॥ श्रीरामउवाच ॥ जदपि प्रिया पतिव्रता
विदित बिन दोष है ॥ परि हां दिव्य शपथ विन तदपि न मन संतोष है ॥
१ ॥ पर मंदिर मधि सियारही चिरकाल है ॥ दिव्य शपथ विन परम
करत किम हाल है ॥ यह निश्चय वच सुनत बिरंचादिक सबै ॥ अरि हां
अंबरतें अवतरत त्रिदशात नितिन तबै ॥ २ ॥ दोहा वृत्तं ॥ प्रिया बिरह अ
र्दित जदपि तउ न लहत रतिराम ॥ रम्यन की रमनीयता सत्य स्वच्छ धि
य धाम ॥ ३ ॥ कविरुवाच ॥ षटपद वृत्तं ॥ जलदि जाय जानकी ज्योति
न सति जातवेद जित ॥ पावक पावक परम बिनंती वर बितरत वित ॥

मनवचनतनुकरिमोरस्वपनजाग्रतमधिअविरत॥भयौहोयपतिभा
वरामबिन अन्यपुरुत्रत॥तोदहदहदहममदेहहुतदहनदुसह
द्युतिदापहै॥सबसुललितफलभागीनकेमैंसाबिइकआपहै॥४॥
दोहावृत्तं॥दुहितादिव्यबिदेहकी इमबदिबचन बिशेस॥कीनौ
पूरनप्रज्वलितपावकपुंजप्रवेश॥५॥मनोहरवृत्तं॥कालानल॥
जीहज्वालसहितहैलीलासर॥शोभितसरोजसीयबदनबिशुद्ध
है॥हर्षशोकअमर्षसनेवानरकेवृंदबहुफूफून्कारशब्दसर्वअंब॥
रनिरुद्धहै॥परमप्रबुद्धमहाराजराजरामचंद्रबुद्धिकेनिधानजि
यजानीअबिरुद्धहै॥चारहूबदनतैंउचारतहैचारमुरवपतिवृत॥
सीयशुद्धशुद्धशुद्धशुद्धहै॥६॥दोधकवृत्तं॥श्रीरामउवाच॥
शुद्धसियामनकायकवायक॥देवनतैंबरनैंरघुनायक॥आन
नकौउपमानअतुल्लित॥पंकजपावकपुंजप्रफुल्लित॥७॥कवि
रुवाच॥षट्पदवृत्तं॥दिव्यशपथकरिसियाप्रबलपावकतैंनिक
सी॥बहुलबराननविभाबिदितवारिजवतबिकसी॥बनिताबिपु
लविनोदप्रीतिप्रगटितप्रसेदकन॥आवृतास्यश्रीरामनिकटनि॥
वसीसमोदमन॥भलभक्तिभावभ्राजितहृदयकरतनपदपंकज॥
परस॥करकंकनमनिमुनिरमनिसममतप्रगटहुसुंदरिसरस॥
८॥मल्लिकावृत्तं॥गौतमांगनाप्रकार॥चारुचितमैंचिहार॥जा
नकीरहीनिहार॥वारवारवारदार॥९॥हीयहोतहैसहर्स॥पैंन
कीनपादपर्स॥भावभामहेरिराम॥चित्तभौअनंदधाम॥१०॥इ
तिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापि

तरत्नपुरस्थकविटीकारामांगजगोविंदरामबिरचितेश्रीवरबि
लासेमैथिलीदिव्यशपथवर्णनंनामैकपंचाशत्तमोल्लासः॥
५१॥कविरुवाच॥मल्लिकावृत्तं॥आइकैंइतेकबीच॥नाथरा
मकेनगीच॥हाथजोरिहोयदीन॥वीनतीसुकंठकीन॥१॥सु
ग्रीवउवाच॥ हरिगीतकवृत्तं॥लंकेशकामिनीनेकनामिनिदे
हदामिनिसीदिपैं॥जननीपुरंदरजीतकीनिधिनीतिकीछिति
नाछिपैं॥वृंदारकावलिबंदितामयनंदिनीबंदनकरैं॥सेवित
सुरासुरसुंदरीमंदोदरीबिनतीररैं॥२॥बरवैवृत्तं॥मंदोदरी॥
निहोरतजुगकरजोर॥ बिनयकरनगतकरियैंअबधकिशोर
॥३॥कविरुवाच॥सुनिसुग्रीवसखाकेबचनरसाल॥बोले॥
दिनकरकुलमरिणदीनदयाल॥४॥नम्राननहुइरघुबर॥
बचनबदंत॥ महभागिनीमंदोदरिकहा कहंत॥ ॥॥
॥ ५ ॥धन्यजनकरघुवरतवजननीधन्य॥धन्यवंशनहिं॥
निरयतनासिअन्य॥६॥साधुसाधुसीतावरबिनदततोय॥
अबआगैंविभुमेरीकसगतिहोय॥७॥देखिदशाअतिदुर्व
लभरिजलनैन॥कृपासिंधुकरुणाकरिबोलतबैंन॥८॥
श्रीरामउवाच॥पतिसंगसतीनहोनौंनिजकुलधर्म्य॥भव्यावि॥
भीषनभर्ताहरअसर्म्य॥९॥अचलराजलंकाचलकुरुचिरकाल॥
प्रबलबिभीषनभर्तातवप्रतिपाल॥१०॥पद्धरीवृत्तं॥कविरुवाच
॥तदनंतररघुवरचित्तचीन॥असुरेशबिभीषनभक्तिलीन॥किल॥
कृपासिंधुविभुबंधुदीन॥लंकाधिपत्यअभिशेककीन॥११॥तद

नंतरवरपुष्पकविमान॥जानकीजुक्तचढिकियपयान॥संग्राम।
भूमिलागेदिवान।पेषहुममप्यारीपंचप्रान॥१२॥इहिंठांहभयौंफ
णिपाशबंद्ध॥पुनिअवनचेकैय्यककबंद्ध॥बिद्धिशक्तिवच्छेल
च्छनविदार॥इतआयौहनुगिरिद्रौंनधार॥१३॥शरदिव्यलषम
डरकरिसभीत।प्रापतलोकांतरइंद्रजीत॥कीनौंइतकंठाटविनि
कृंत॥केनापिगत्रिचरपतिअसंत॥१४॥उपकृतिहनुमतबरनत
अपोष॥जिहिंकरिरावनभौभयविशेष॥प्रहरतयहसुनिप्रज्वल
तपाप॥कृशाकपिइतिलज्जितभयौआप॥१५॥लीलालंघित।
वहवाहिनीश॥यहसुनतघुनावनलग्यौसीस॥सुनिरामदूततनु
छयौताप॥कलुषितद्वीजुतभयौआप॥१६॥भौप्रियेतोरहित
हनूमंत॥प्रापतकियदशामुषदुषअनंत॥असुरेशअवस्थाकौंनभ
छिनछिनमाधिप्रापितजौंनतौंन॥१७॥कविरुवाच॥सहविस्मय
सियवृझतसुगाथ॥इतआयेकिमतुमप्राणनाथ॥तबरामसह
र्षितहीयहोय॥वृत्तांततसुनावनलगेसीय॥१८॥श्रीरामउवाच
उपकारसकलसुग्रीवकर॥हरषतहौंनिजहियहेरहेर॥कांतेमि
वासकांतारकूर॥प्रियजनवियोगउरआधिभूर॥१९॥धनुमाव
तारारिपुमनुजमच्छ॥तसवाससिंधुदाहिनैंकच्छ॥२०॥घन।
अघटितअघटितहुतीघात॥इतआरिप्रतिकृतिकीकहाबात॥
२०॥रावनहरिगोवनरामतिय॥इतनीरहिजातीकथासीय॥
सुग्रीवसषाभमनाहिंहोय॥मिलतौकिमवदलालैनमोय॥२१
॥ ॥इतिश्रीपिपलीदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजी।

विज्ञापितरत्नपुरस्थकविटीकारामांराजगोविंदरामविरचितेश्री
वरविलासेश्रीसीतारामचंद्रसंबादोनामद्विपंचाशत्तमोल्लासः॥
कविरुवाच॥षट्पदवृत्त॥इहिंअंतरमधिइंदुउदयलषिराम।
कहतबच॥देविदोषदिनमणिवियोगीमनुजयहैसच॥दीक्षा
मणिसिंगारमदनअहिमस्तकमणिवर॥चूड़ामणिचंडीश
काम्हतियकांचिमणीरर॥तिमनारीमौक्तिकहारमधिनायक।
मणिविलसंतहै॥तरुणीचकोरचिंतामणिउपमायाहिअनंत
है॥१॥कविरुवाच॥पद्धरीवृत्तं॥इकटकनिरषतनिशिनाथ
सीत॥प्राचीनविरहविभुविथाभीत॥करजुगमूँदेदुइदृगसली
ल॥कीनीलीलाकुतुकाच्छिमील॥२॥प्रश्न॥मैथिलीकेनैंन
श्रीरामचंद्रनेक्यौंमूंदे॥याकोउत्तर॥पहिलैंतितदंडकविपिनवी
च॥मांग्योहोमैथिलीमृगमरीच॥मांगहिमृगांकमृगलषिअ
यान॥ताकौकरिहौंकासमाधान॥३॥कविरुवाच॥इहिंअवस
रसबजननिशाजान॥सुषपूर्वकसोयेजथाथान॥परभातविभीष
नउत्तैआप॥अभिबंदनकीनौंसीसनाय॥४॥विभीषनउवाच॥
षट्पदवृत्तं॥उपकारकअंबुधीसदासेवितआगमगृह॥बरबिक
मरघुवंशकथातिहिंबीजथलीयह॥देवछिन्नदशमत्स्यमत्यद
शअवलीअत्रहै॥शतमषदशशतनयनमुदितअतिहोतजन
है॥इमइकइकशिरपातशत्तनयनप्रभुप्रमुदितकीनैपरम॥
लंकानिवासकिमसुषदहैजहांअमितआसुरधाम॥५॥कविरु
वाच॥पद्धरीवृत्तं॥तदनंतरबिभुततकालजोगय॥चामरछत्र।

दिक राजभोग्य ॥ संभाव्य विभीषन प्रेंम ठांन ॥ पुरश्च वधसिधा
वन कियपयान ६ ॥ सुग्रीव वदत भौ सुनहु देव ॥ रनभूमि दिपत
यह दारितेव ॥ वहु वाजिव्रात घर खुरप्रहार ॥ इत भये भूरि विभु
वारवार ॥ ७ ॥ जिहिं रज करि छायौ आसमान ॥ कलकंठक भूत
रजासमान ॥ करिकुंभनि कर भौ मद श्राव ॥ घन वृष्टि सदृश ऋ
ति दुसहद्राव ॥ ८ ॥ बहु ठौर ठौर महँ मची कीच ॥ संतत इहिं संगर
अवनि वीच ॥ मंदानिल परिमल मिलित जास ॥ अद्यापि सद्य
इव रण प्रकाश ॥ ९ ॥ इम सुनत विमल सुग्रीव वैंन ॥ चित मधि
रघुनंदन चढौ चैंन ॥ शुभ सेतु वंध किय कज्ज उत्त ॥ वैदेही वद
त भौ अज्ज उत्त ॥ १० ॥ प्रिय प्राण नाथ रघुबंश केतु ॥ तुं कित क
रवायो वहै सेतु ॥ चित चकित होय इत उत चिहार ॥ इत कियउन
किय इति कह निहार ॥ ११ ॥ कित किय कित किय कहि वार वा
र ॥ पूजत वैदही वहु प्रकार ॥ पट तानि लियौ मुसकाय मंद ॥
तब सेतु वतायो रामचंद ॥ १२ ॥ आंनन वैदेही पूर्ण चंद ॥ लखि
सिंधु भयौ आनंद वृंद ॥ शुभ सेतु दावि आयौ उफान ॥ इहिं हेतु
भई नहिं तास भाँन ॥ १३ ॥ घुंघट पट मुख शशि छिप्यो अत्र ॥ अं
वुधि आयौ निज थान यत्र ॥ इहिं हेतु सिंधु मधि वहै सेतु ॥ नहिं
लख्यौ लख्यौ रघुबंश केतु ॥ १४ ॥ ते दीसत हैं सिय सेतु शैल ॥ ओ
षधि प्रकाश जित नाहिं तैल ॥ बिन्यस्त प्रथम निशि निशि
समूह बानर नल गेहि कपि बिमल व्यूह ॥ १५ ॥ गिरि सिंधु स
लिल मधि किय सनान ॥ मुख दरी कियौ कीलाल पान ॥ झुत द्वि

गुणित निर्झर झरत जात ॥ पयकार पयोधि पूरत पिवात
॥ १६ ॥ मैनाक बंधु तें भौ मिलाप ॥ चुवऔढ प्रीति चय अश्रु
आप ॥ कपि शिविर नीर थित निर विमोय ॥ अगली सब
बातैं स्मरन होय ॥ १७ ॥ सिखरणी वृत्तं ॥ जबैं दूरा पाती बिवु
धजुवती नैंन सुगहा ॥ सरिद्भर्त्ताहारा वलि बलय शोभा कि
यमहा ॥ तबैं ये मारागा क्य स्फटिक कन्काश्म निसनौं ॥ अ
भून्याात्मा सेतू बिलसत महा नाटक मनौं ॥ १८ ॥ इति श्री
पिपलोद पत्तनाधिपाल रावतजी श्री दूलह सिंहजी विज्ञा
पित्त कविटीकाराम गजगोविंद राम बिरचिते श्रीवर विला
से निमिनंदनी रामचंद्र संबादो नाम त्रिपंचाशतमोल्लासः
॥ ५३ ॥ कविरुवाच ॥ पद्धरी वृत्तं ॥ इम बर्नत वरनत शोभः
सेतु ॥ पहुंचे निज पुर रबि वंश केतु ॥ सब मर्कट भट शुचि सि
यसमेत ॥ मग मग मधि अति आनंद देत ॥ १ ॥ सन्मुख
भरतादिक अखिल आय ॥ अभिबंदि अंघ्रि लीनै बंधाय
॥ मुनिराज पट्ट अभिशेख कीन ॥ सिय संजुत कपाल अव
ली अनेक ॥ उन उत्तमंगि बर अलंकार ॥ मनिगन बटोसिकां
चीप्रचार ॥ ३ ॥ धारी कटि तट सो सिय सयान ॥ सिंजित मं
जुल गिर करत गान ॥ विक्रम आडंबर हेर हेर ॥ लज्जत
नहिं गज्जत बेरबेर ॥ ४ ॥ जिंहिं तीन लोक छज्जत प्रताप
॥ अरु भुवन चतुरदश विदित आप ॥ जस जह जास जानत
जनेश ॥ अस राम अमल अभिधान बेश ॥ ५ ॥ कविरुबा

च।। तोमरछंदं।। करिकोप अंगद आय।। कपि ओघतैं अल
गाय।। उचस्यो बकारि बकारि।। निजबालधी फटकारि।।६।।
तिहुं लोक केतुम नाथ।। रघुनाथ तब बच माथ।। मुहि आप
नाम ठीन।। तस सब कारज कीन।।७।। नित हीय मैं लियहे
र।। नहिं छंडियें पित्त वेर।। सुनि लिहु श्रीरघुबीर।। अब हूं जियें
रनधीर।।८।। षट्पदछंदं।। सहसुकंठ सौमित्रि श्वसन सुत आ
दि सुभट जुत।। आवहु यह रस रंग रला दरसावत बल उत्त।। निर
पराध सम जनक हन्यौं तुम ता कौ फल अब।। आप हो हु गे आ
पय हौं अबिलंबस पदि सब।। करियाद बाप कौ बैर बड़ इकछि
न धिय धीर न धरौं।। दोर्दंड दूसरो लाउ ना इक कर करि मंथन
करौं।।९।। समर प्रतिज्ञा परम महत सुनि अंगद आनन।। छो
भित अति कपि चमू राम लछमन सहसांनन।। अनपराध व
ध सम जि अखिल अनुकंपा आई।। हैगइ गदगद गिरा प्रचुर
पुलकावलि छाई।। सौमित्रि तबैं कर जोरि जुग तारा सुत सन्मु
ख गये।। अपराध छमहु इम उचरि वच उर अनुकंपाकिन भये
।।१०।। भई गिरा आकाश दाश हू हे वाली वह।। राम होहिं म
धुरावतार निज सब परिकर सह।। सो हनिहैं उत इनैं आप
निज बदला लेहैं।। अनुचित कृत जो कर्म प्रभूता कौ फल पैहै
अप्रसबारागी सुनि अंबर उदित उर अंगद प्रमुदित भयो।। पुनि
सकरुणालय शिरामादि सब अविनय तजि सबिनय रयो।।
११।। पद्धरीछंदं।। होय गौपित्र बध प्रतीकार सानंद भयौ ता

राकुमार।। जुग हाथ जोरि तजि कोप तत्र।। आयौ इत मैं रघुराज
जत्र।।१२।। अति व्है सविनय नुति करत राम।। सुनि लेउ दया
निधि धर्म धाम।। जिन जिन के तव गुन परत कान।। तिन तिन
क मस्तक डुल्लागगान।।१३।। चतुरानन चित मधि यह बिचा
र।। इक शिर प्रति जुग श्रुति कियेसार।। अहिराज वरानन स
हस्र कीन।। चहिये द्विसहस तित इकन कीन।।१४।। गुन ग्रा
म राम सुनि है जु सिय।। डुलिहे तब उहि आनन अशेय।। मस्त
क जिहिं सब ब्रह्मांड भार।। थिर कंप भये व्है भंग सार।।१५।।
यह अभिप्राय बिधि उरसि अस्ति।। संसार रहौ सब सदा स्व
स्ति।। इहिं हेत बिधाता बुद्धिवान।। सहसांनन किय नहिं श्रे
क कान।। ।।इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी श्री
दूलेसिंहजी विज्ञापित रत्नपुरस्थ कवि टीकाराम आगजगो
बिंदराम बिरचिते श्रीवर विलासे तारा तनयस्तवन वर्णनो ना
म चतुःपंचाशतमो ल्लासः।।५४।। कविरुवाच।। पद्धरीछ
न्दं।। तदनंतर नुति किय हनूमान।। सुनि लेउ राम करुणा नि
धान।। वर बिनय बदत बिभु जुत्त बिनोद।। त्रय इक होत हैं पी
लसोद।।१।। आनहु उहिं कच्छप अधोपात्र।। अरु मध्य दंड
अहिराज गात्र।। ऊपर भाजन भल भूत धात्रि।। मच्छर मोहा
दिक महारात्रि।।२।। शुभ सिंधु सकल तित तैल पूर।। बर मे
रु वर्ति काहे जरूर।। चडांशु रोचि उहिं अर्चि आन।। कज्जल
अंबर स्याम तामान।।३।। अरि ओघ अमित उपमा पतंग।।

इत ऋायकरत निज ऋंगभंग ।। रावर प्रताप प्रभुपदु प्रदीप ।
।। बिख्यात निरंतर सकल द्वीप ।। ४ ।। ऋथ कीर्ती वर्णनं ।।
कैलाश निलय शिवमया स्वच्छ ।। उपबेशन थलहि मांगिरि
प्रतच्छ ।। स्वर्नदि जिहिं गृह वापिका रूप ।। चंद्रोपल दर्पण ।
ऋति ऋनूप ।। ५ ।। छीराब्धी नव पूर्तक निहार ।। शुचि शेष देह
दीपति चिहार ।। करि तिनदाक किल कोश लेश ।। बिस्तार ।
नाम बहु देश देश ।। ६ ।। दसवदन दमन सियरमन राम ।। कीर
तिहंसी तब धाम ।। भूमि भूमि सकल पाइन धाप ।। सब लोक
होयबिधि लोक प्राप ।। ७ ।। तित ब्रह्म हंस कौ भयौ संग ।। गर्भि
रिा हुई ऋाई व्योमगंग ।। बिश ऋंकुर वर कुंदा बदात ।। जा ।
यौ सुत हिम करन भदियात ।। ८ ।। श्रीराम राम ऋरगु महाबीर
।। हम किम गुन बर्नन करैं धीर ।। कल्ल किर्त्ति कामिनी भव्य भाग
र ।। कस्तूरि तिलकै समन भाविसार ।। ९ ।। निवसति नित प्रति
तव निलय लच्छ ।। पुनि बचन बींचि सर सुती स्वच्छ ।। किंहिं ।
कारन कीरति कुपित कंत ।। नित भ्रमत रहत दशहू दिगंत ।।
१० ।। दोर्दंड सुडिंडि मड मत कार ।। जिंहिं जुक्त प्रतापानिल ज्वा
र ।। ज र्जर कीरति पारद घटीजु ।। फुटि बुंद बृंद ऋवली ऋटीजु
।। ११ ।। भोगेंद्र कितक तारक कितेक ।। कति छीरसिंधु प्राले ।
यकेक ।। कति पांच जन्य कति करक कुंद ।। कर्पूर कितक श ।
शि कितेक बुंद ।। १२ ।। ऋन्यु क्तिपक निजिन कुपित होहु ।। म
समानहु मिथ्य । बचन सोहु ।। तब तरुरा प्रतापानल ज्वाल

।। शोषित सब सागर जल बिसाल ।। पुनि पूरित ऋरि तिय नय
न धार ।। ऋतिवार सलिल भौ इहिं प्रकार ।। कोसल किशोर
ऋोजस ऋपार बहु विबुध वृन्द पावेन पार ।। ।। १४ ।। ।। सवि
तावद्योत द्युति मात नोति ।। जीर्णोर्न नाभि गृह शशी ज्योति
।। मच्छर समता रागन ऋपार ।। इम बरनत नभत वयश बिहार
।। १५ ।। ऋंबर ऋनेक भूमरायमान ।। इहिं बिध ऋनंत जस जूह
जान ।। मुद्रित मुरव बारागी रही मोर ।। रघुवर बर महिमा मह
त तोर ।। १६ ।। सानंद होय दिगबधू बृंद ।। गिरिमेरु उलूखल
किय स्वच्छंद ।। सुरगंगा मंजुल मुसल लीन ।। तब कीरति शा
ली निचय चीन ।। १७ ।। कंडित कीनौं बहु वार बार ।। तिहि राशि
यह है गिरि तुषार ।। ताके गन तारागण ऋनंत ।। प्रोद्यत सुधांशु
पांशु भनंत ।। कविरुवाच ।। दोहा वृत्तं ।। इहिं प्रकार निज हियहु
लसि तवन कियौ हनुमंत ।। ऋंगद ऋमित ऋनंर जुत रघुब
र भुज ऋबरनंत ।। १८ ।। इति श्री पिपलोद पत्तनाधिपाल रावत जी
दूलह सिंह जी बिज्ञापित कबि टीकाराम ांगज गोबिदराम बिः
रचिते श्रीवर बिलासे श्रीमद्धनुमत कृत श्रीरामचंद्र स्तवन वर्णा
नो नाम पंचाशतमोल्लासः ।। ५५ ।। ऋंगद उबाच ।। षट्पद वृत्तं
।। रावन जस शशि रबि प्रताप धनु शिव मद ऋहिपति ।। चारहु ।
थित ऋेकत्र प्रलय कारक ऋरिष्ट ऋति ।। तास शांति शुचि हेतु ।
षडगत वतीरथ सुंदर ।। सकल भये तै नष्ट जबैं धास्यौ कर रघुबर
मद धनुष तृतिय परताप ये भंग भये ऋरि ऋंग मह ।। ऋवशिष्ट

सुजससोभ्रथमहीसीयहरतभौनरथवह ॥ १ ॥ किचिंतकोपकला
विलासबहु विभव बिभूषित ॥ मंजुलमूरतिरामभकद्दुज भ्राज
अदूषित ॥ रावनइंद्रजिदादि हनन करि कियौ असुरबल ॥ कं
दत्त फेरुं कफेरुं रटत्त बिघटंत विटपभल ॥ फुटप्रगट युग्गुलूधू
पधुवक्रीडतकपिकरिा निश्वसत्त ॥ आक्रोशत्त कोरगपकुलब।
धूभृमत द्वीपिररगभूहसत्त ॥ २ ॥ जामधिमिहिरमयूख शिशिर।
समसैंनरैंनुकरि ॥ छत्रवेरिवाहिनी बिलोकनकीनधीरधरि ॥ वा
मवजय जिन कियौ रावनादिकनभयेोरुज ॥ तेपिभयेभयभीत
रावरेनिरयत्त जुगभुज ॥ जिन आश्रयपायप्लवंगवरसरित्तनाथ
उत्तीर्रातित्त ॥ दोर्दंडचंडयंडनठयौ अरि उदंडपरचंड जित्त ॥ अ
कविरुवाच ॥ पद्धरिवृत्तं ॥ तदनंतर रघुवर मुदितहोय ॥ आभ
रनजथ्या चित्तजोयजोय ॥ सुग्रीव सुग्रीवाभरनदीन ॥ अंगद
भुजअंगद चारुचीन ॥ हनुमंतहीयदियहीरहार ॥ द्रुमजथा।
जुक्तजियधारधार ॥ सत्तकार कियौ सबकपिनकेर ॥ करियाद
मकल्लहियहेरिहेरि ॥ ५ ॥ वहु बिलसत बर बानर अनीक ॥ कि
स्किंधाजावनदईसीक ॥ सियलयनजुक्त बिभुजथाजोग ॥
उपभोगकरत साम्राजभोग ॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ मनोहरवृत्तं ॥
दाशरथीरामरविवंशमैंउदयभये वनिताबिदेहसुताजासजो
गजानीहै ॥ छद्मकरिबनतैंलेगयौ लंकलंकाधीश करिकैं कंपी
द्रमध्यपूर्णाशीतिठानीहै ॥ पर्वतकेपुंजकरिकीनौं सिंधुसेतुबंध
असुरसंघारि अोधपुरीबाहि आनीहै ॥ निजमहारानीनिकलं

कपहिचानीप्रभूतदपि कलंककीकहानीनासुहानीहै ॥
१ ॥ बरवेवृत्तं ॥ कविरुवाच ॥ वालमीक मुनि आश्रमलख
तनिहार ॥ सीयरखीश्रीरघुवर आयसधार ॥ ८ ॥ तजिसि।
यलछमन विलपत वारंवार ॥ नैंननिवहत निरंतर अंसुव
नधार ॥ ९ ॥ जोरनमधिनजिवावत मारुतिमोय ॥ लयतेनि
हिंदारुरा दुखलोयनदोय ॥ १० ॥ कियौंवैरबड हनुमतमे।
हिजिवाय ॥ हेरत हिय हहरत हे हरहर हाय ॥ ११ ॥ मृगप।
तिगज्ज चकित्तचित मृगपशुजाति ॥ प्रसव समयनिजप
मदाछिननजहाति ॥ १२ ॥ असनिर्दयहिय रघुकुलभ।
यौनहोय ॥ अरघुराम अस उरनिज आवत मोय ॥ १३ ॥ र
घुवरविरह भयेहू जीवतसीय ॥ नाहिं जनक जायेहू जान
तजीय ॥ १४ ॥ ॥ जोनजियत उत्त रघुवर सीय वियोग ॥ त।
वैंविधाता निर्दय निंदाजोग ॥ १५ ॥ इतिश्रीपिपल्लोदपत्त
नाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटी
कारामांगजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासेलक्ष्म।
णापरितापवर्णानोनामषट्पंचाशत्तमोल्लास: ॥ ५६ ॥ क
विरुवाच ॥ गेल्लावृत्तं ॥ भंगकियौभवधनुयसमरकियजा
मदग्निजय ॥ गुरुगिरतजि वसुमतीसेतु कीनौंपयोधिप
य ॥ दशकंधरछयकार रामकोकोकहियैंगुन ॥ वर्णानक
रियैदैंवकियौउहिंकथासेषचुन ॥ १ ॥ षट्पदवृत्तं ॥ श्रीरघु
वरभुजप्रवल वहत तांडवसुंदरवर ॥ कांडसौंडब्रहभांड।

भांडमंडितप्रचंडपर॥ ररगशिरनाटकमहापाटवां वुधिपा
वनऋति॥ आंजनेयप्रविरचित सुनतनरव्है निर्मलमति॥
वहसकलपापनिर्मुक्त हुइपदुलपुन्यपदप्रापहै॥प्राप्नो
ति अखिल अरिभट विजयश्रीरघुवर जिम आपहै॥२॥दो
हावृत्तं॥यहनाटकहनुमत्त रचित निर्मलब्रह्मनिहार॥
अंकचतुरदशकलितकरिभुवनचतुर्दशधार॥३॥यद्व
पदवृत्तं॥पवनपुत्रयहचरितनथरकरि लिथित शिलनप
र॥वालमीकलषिकथोरत्नसमरयहु सिंधुवर॥ आंजने
यतसकीनजथामुनिद्रुत आयसदिय॥तदवतारनृपभो
जकियो उध्धृतहर्षितहिय॥ अरुद्विजदामोदरमिश्रशुभ
ग्रथितकियोंक्रमकरिकलित॥श्रीहनूमाननाटकमहा
करहु विश्वरच्छालललित॥४॥अत्रश्रीहनुमन्नाटकेचतु
र्दशोकः॥१४॥श्रीराम॥अर्धपद्धरीवृत्तं॥सोहतसुहिंद
॥दूलहमहींद॥ राजपिपलोद॥मानसप्रमोद॥५॥धीव
रधरेश॥रावतनरेश॥ आयसउचार॥आशयनिहार॥
६॥जाहरजहान॥नाटकमहान॥हेरिहनुमान॥हीयक
रिमान॥७॥पंथचितचीन॥ग्रंथजुनवीन॥होयइकत्या
र॥सोशिरसिधार॥८॥टीकमकविंद॥अंगजगोविंद॥
नागरसुविप्र॥धीयधरिछिप्र॥६॥येरचितग्रंथ॥प्रेमिन
सुपंथ॥ हेहियहुल्लास॥श्रीवरविलास॥१०॥संप्रायवि
लोपि॥जोपढें कोपि॥चेतसिचहंत॥वांछितलहंत॥११॥

श्रीरमरारम॥धूलसतधाम॥पावतसुप्रेम॥ह्वैसकलछे
म॥१२॥श्रीवरविलास॥अभिधानजास॥कीनेंप्रकाश
॥सतपनउलास॥१३॥सतपनविशेय॥मेटतअशेय॥स
तपनरयंत॥सतपनपियंत॥१४॥सोरठावृत्तं॥अतिउदार
गंभीरललितलसतलयलूटमन॥धर्मधुरंधरधीरदिन
दूलहदूलहनृपति॥१५॥ दूलहनृपअभिरामप्रतिपल
पालकपुन्यपथ॥निसदिनरातारामगुनग्याता दातारत
॥१६॥मनोहरवृत्तं॥पुरपिपलोदप्रजापुंजप्रतिपालप्रभु
दूलहनरिंदपरतापहिंद छायोहै॥थोरेवयबीचजानेंजोर
हैंसुजसजूहसुगुनसमूहस्वच्छसुयसरसायोहै॥रावरे
दरसपाय अमित अनंदभयो वुद्धि अनुसारयोंगोविंद गु
नगायोहै॥ अैसो और तेरेजोड तोड कीमरोडवारो ठोरठो
रठाकरकरोडमेंनपायोहै॥१७॥छायो है प्रतापपरचंडय
डखंडनमें सुजससमूह + दूनास्वच्छछविछायोहै॥ अै
से.गुनग्यानधियध्यानदिलजानजैसे आरमानयानपान
सुखसरसायोहै॥०॥ गावतगोविंदसुनोंदूलहनरेंद आप
याहि हेत ओडियासुवंशमनभायोहै॥ अैसो और तेरीजो
डतोड कीमरोडवारी ठोरठोरठाकरकरोड़मेंनपायोहै॥१८
॥छंदमत्तगजेंद्र॥ तीरथतोमतमाम कियेजगदीशसुदर्श
नकाजसिधावत॥ठोरनठोरसनानकियेबहुदान दियेनि
गमागमगावत॥लाठमिलाएभयोभलठाठनिराटविनोद

विशीयवढावत॥रावतसाहवदूलहसिंहसमानजहान
नआनलयावत॥१८॥हाकमहक्कउठायदियौद्रुतका॰
जसमस्तस्वहस्तकरावत॥ लंदनलौंयलुष्यातविष्यात
रुसावधताअंगरेजसरावत॥गावतहैगुरागोविंदयौं
ततितस्करनाकितमैंसतरावत।रावतसाहवदूलहसिं
हसमानजहाननआंनलयावत॥आंमदकौंअवलोक
तनित्यनिहारिविलोचनषर्चकरावत॥नीतिविहायर
येनहिंपायसहायकसंकटमैंसरसावत॥जाचककौंल
षिकैंरषिकैंगुराहेरिहमेसहियैंहरसावत॥रावत॰
साहबदूलहसिंहसमानजहांननआंनलयावत॥२१॥
मंगनसंघउमंगभरेजिहिंअंगनअंगनमैंनितआवत॥
दानसुतोयतरंगनतैंनिसवासरओघअरिष्टवहावत
गावतहैगुरागोविंदयौंजितजाचकजेउरइच्छितपा
वत॥रावतसाहबदूलहसिंहसमानजहांननआनल
यावत॥२२॥गाहकहैगुराकेगराकौद्रुतदाहक॰
दारिददर्पदियावत॥वारिसोवरसावतबित्तकविन
नैंपैंचुनिचित्तलगावत॥गावतहैगुरागोबिंदत्यौंक
विपंडितपेषिमहामुदपावत॥रावतसाहबदूलहसिंह
समानजहाननआंनलयावत॥२३॥आवतहीअति॰
आदरअर्पिसुनावतमिष्टगिराबतरावत॥यानरुपान
सबैंसनमांनदरावतमोदमहामनपावत॥गावतहैगु

रागोविंदयौंजिहिंकेचितकौकितपारनपावत॥रावतसा
हवदूलहसिंहसमानजहांननआंनलयावत॥२४॥को॰
सकुवेरसुमेरुपरैंकरतच्छिनवेरकरैंनलुटावत॥उच्चनतैं
अतिउच्चउदारगँभीरनतैंगहरोदरसावत॥गावतहैगुरा
गोविंदयौंजिहिंकेचितकौकितपारनपावत॥रावतसाह
बदूलहसिंहसमानजहांननआंनलयावत॥२५॥मनो
हरवृत्तं॥मंजुलमंदीलमनोरंजनसमर्प्योसीसपुरठपठा॰
सोदिव्यदुपटादिवायौहै॥गावतगोविंदविप्रपावतम॰
हानमोदरावतधरेप्रधीयपारनाहिंपायोहै॥रोकरूपैचा
रसैंविचारसैंरषेहैंगोददूलहनरेंद्रवित्तवारिवरसायात
हीयहरसायौसर्वसुषसरसायोप्रैंमपुंजपरसायौउरअछ
कछकायौहै॥१ दिलदरियावदिव्यदूलदुलहसिंहराज
नीतिरीतिमध्यसुमतिसनीरहौ॥सामदानभेददंडचारहु
उपायनतैंरैय्यततमामहूगरीबरुगनीरहौ॥गावतगोविं
दगिराकीरतिसुधाकरसीदेशदेश दियतदिगंतलौंघ॰
नीरहौ॥वाहवाहवाहगिरनारबादशाहतेरीजौलौंशशि
सूरतोलौंसाहिबीबनारहौ॥२ सोरठावृत्तं॥पुरपिपलोद
अधीश॥पंदरवीघाप्रैमकरि॥छितिकीनीवकसीस॥
अतिमंजुलमालोतरू॥१॥श्रीवरश्रीहरिहेत॥पुन्यारथ
पुहवीप्रवर॥दुजगहिआशिषदेत॥मनबंछितव्हैसर्वदा
॥२॥शतगुनीसपैंतीससहआश्विनसितदलस्वच्छ॥शो

रिवारदसमीदिवसपूरनभयौप्रतच्छ: ३ ॥ ॥इतिग्रंथ
पारितोषकबर्णनं॥ ॥इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपा।
लशावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि
टीकारामांगजगोविंदरामविरचितश्रीवरविलासेग्रं।
थपरिपूर्तिवर्णनोनामसप्तपंचाशतमोल्लासः॥५७॥
श्लोकः ॥श्रीरस्तुमंगलंचास्तुप्रशस्तंशस्तमस्तुते॥म
नोभिलषितंचास्तुह्यविच्छिन्नास्तुसंततिः॥१॥दोहा॥
गोबिंदविरचितगाथजुतश्रीवरविमलविलास॥हनूमा
नकाध्यानधरलिखारामजीदास॥ ॥ शुभम् ॥सं॰१९४२

इतिश्रीहनुमान्नाटकअर्थात्श्रीवर
॥ विलाससम्पूर्णम् ॥ श्रीः

पौषकृष्ण १४ चंद्रवास
रेसम्वत् १९४
॥४२॥

इंद्रप्रस्थनिवासीपंडितनथ
मलगुसाईंशोधितः॥शुभं

अथसूचीपत्रलिख्यते

